Vol.20, Issue 1 | Annual Subscription ₹ 420

@NewsRotary /RotaryNewsIndia

November 2020

रोटरी समाचार

INDIA
www.rotarynewsonline.org

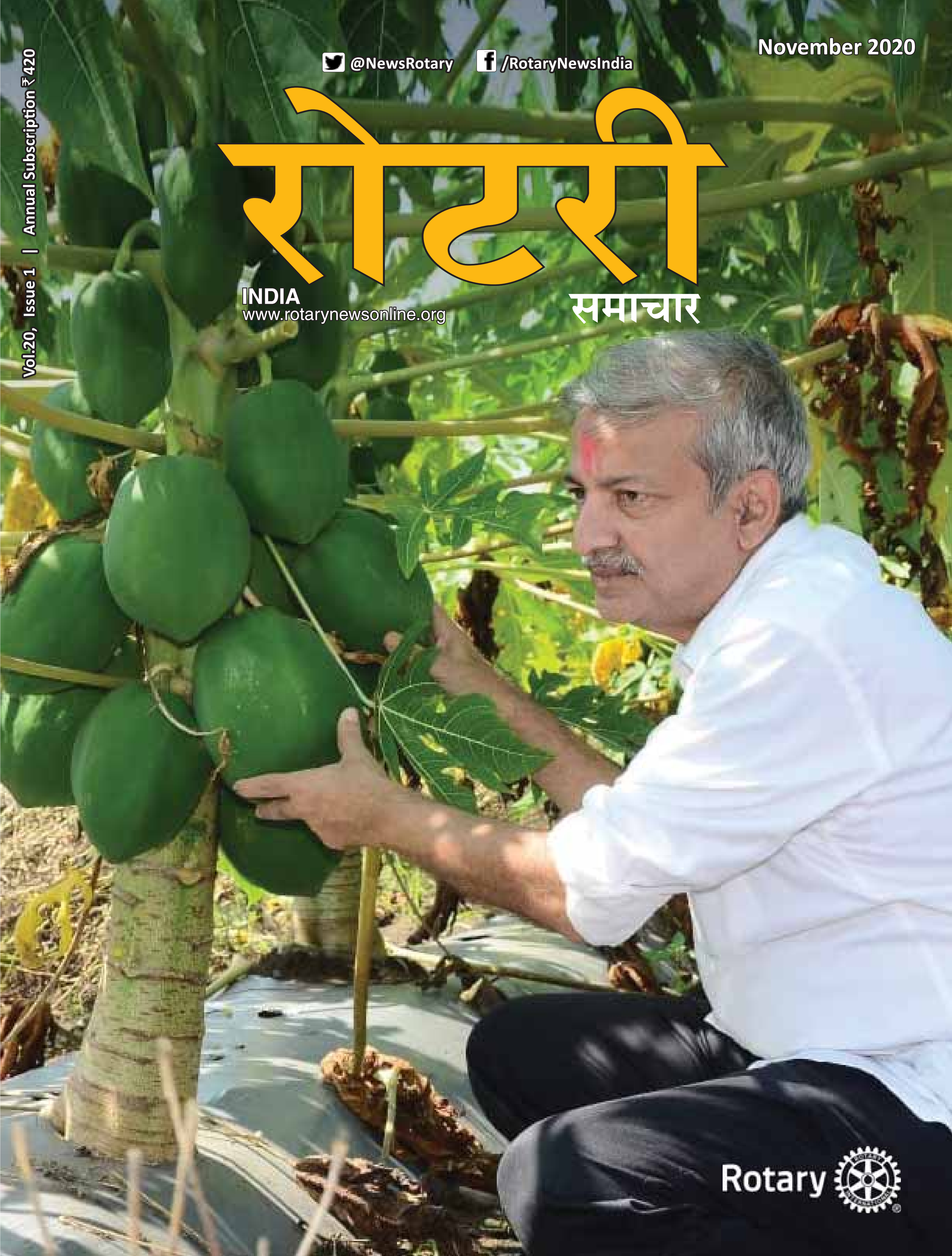

Rotary

ADVT.

KINETIC
UV-WARRIOR
NABL
KILLS 99.9%
VIRUS
For Donations and Enquiries:
+91 98260 20013
Simply switch on and
kill Corona Virus
in seconds!
UV-C LIGHT TECHNOLOGY
ONE YEAR WARRANTY
1 year
NO GAS EMISSION
HIGH WATT VIRUS KILL
11W
USED BY AIR FORCE
Special 15% discount
for Rotary members
MAKE IN INDIA
KINETIC
UV-WARRIOR
1000
www.kineticUVwarrior.com

विषयसूची

10 एक समृद्ध भारत के लिए सामुदायिक खेती
मयंक गांधी ने महाराष्ट्र के मराठवाड़ा क्षेत्र में एक कृषि क्रांति लाई हैं।

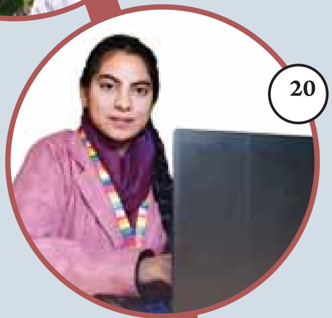

20 रो ई मंडल 3070 के रोटेरियन एक रोटरेक्टर को महंगा लैपटॉप दिलवाने में मदद करते हैं
यू के में क्वांटम भौतिकी में अनुसंधान करने के लिए रोटेरियन जया सागर को उपकरण दिया गया।

22 खसरा, रूबेला को 2023 तक मिटाया जा सकता है: जेकब जॉन
MR उन्मूलन के लिए 2023 की WHO समय सीमा प्राप्त करने योग्य है क्योंकि अधिकांश कार्य पहले ही पूर्ण कर लिया गया है।

26 कोविड हो या फिर मानसून की बाढ़, रोटरी क्लब बॉम्बे के रोटेरियनों ने दोनों चुनौतियों का डट कर किया सामना
परियोजना ढाल में 752 सरकारी स्कूलों में हाथों की धुलाई के 1,142 स्टेशन स्थापित करना शामिल है।

30 एक रोटेरियन डॉक्टर कोरोना वायरस के साथ अपने संघर्ष को याद करते है
प्लाज्मा थेरेपी ने कुछ अंतर दिखाया है क्योंकि उनकी स्वास्थ्य स्थिति में सुधार होने लगा।

36 रोटरी का वैश्विक परिचालन 'बढ़िया' और वित्त 'मजबूत' स्थिति में है: जॉन ह्युको
आशा की एक किरण दिखाई दी है क्योंकि रोटेरियनों ने इस कठिन समय में आभासी तकनीकों को अपनाया है।

48 ताइपे का उत्थान
गगनचुंबी इमारतों और पर्यटक शहर रो ई सम्मेलन 2021 की मेजबानी करेगा।

58 SPB, प्राकृतिक संगीत के जादूगर
सिंगिंग मून के 16 भाषाओं में 40,000 से अधिक गानों के रिकॉर्ड को भोलान बहुत मुश्किल है।

कवर पर : समाज सेवी मयंक गांधी महाराष्ट्र के परली गाँव के एक खेत में।

इस जीन्यस को मुहम्मद यूनुस कहते है

नोबेल पुरस्कार विजेता मुहम्मद यूनुस का समाज के प्रति दृष्टिकोण चकित करने वाला है। प्रवासी और अनियमित श्रमिकों के लिए नौकरी के अवसर, माइक्रोक्रिडिट और बहुत सारे लोगों की भलाई के लिए एक टीका, कुछ ऐसे दिलचस्प मुद्दे है जिनके बारे में उन्होंने बात की। RIPE शेखर मेहता ने उचित रूप से पूछा कि वंचितों के लिए रोटरी और क्या कर सकती है।

जी आर भास्करन

रोटरी क्लब विरुधुनगर ऐलीट - मंडल 3212

अक्टूबर की कवर स्टोरी, जिसमें नोबेल पुरस्कार विजेता मुहम्मद यूनुस ने ठीक ही कहा है कि ''महामारी से पूर्व की दुनिया में लौटने का अर्थ आत्महत्या करना होगा,'' पढ़ने लायक है। PRIP राजेन्द्र साबू ने दिवंगत PRID यशपाल दास को श्रद्धांजलि देते हुए उपयुक्त रूप से कहा कि ''प्रतिबद्धता ही उनका धर्म था।'' वह ईमानदारी और प्रतिभा से भरे हुए नेता थे। सम्पादन में आपके इस कथन ने मेरे दिल को छू लिया कि वह हमेशा मंडल बैठकों में आरएनटी कर्मचारियों का अभिवादन करते थे।

नन नारायणन

रोटरी क्लब मदुरई वेस्ट - मंडल 3000

मुहम्मद यूनुस ने बढ़िया विचार प्रस्तुत किए, जिसमें सार्वजनिक भलाई के लिए एक टीके की आवश्यकता, गरीबी उन्मूलन और कोविड के बाद की बेरोजगारी शामिल है। रो ई अध्यक्ष होल्गर नेक का संदेश सार्थक है। स्वर्गीय यशपाल दास के निधन पर उनके परिवार के प्रति संवेदना। बेरोजगारों के लिए कौशल निर्माण के उद्देश्य से शुरू की गई *सक्षम भारत* परियोजना सराहनीय

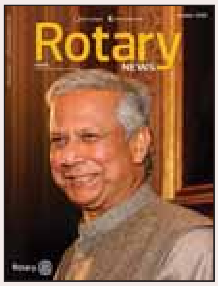

है। ओ पी खन्ना और उनकी सेवा पर लेख यह साबित करता है कि दुनिया में अभी भी अच्छे लोग है। किशोर कुमार पर लेख पढ़कर खुशी हुई।

वंचित बच्चों के लिए अपने अंडा बैंक के माध्यम से पांच लाख अंडे की आपूर्ति करने के लिए हरि किशन वाल्मीकि को सलाम। यह अफ़सोस की बात है कि ग्लोबल हंगर इंडेक्स 2019 में भारत 117 देशों में 102वें स्थान पर है। मुझे यह जानकर खुशी हुई कि अफ्रीका को पोलियो मुक्त घोषित किया गया और 2022-23 के लिए जेनिफर जोन्स रोई अध्यक्ष होंगी। लता मंगेशकर पर लिखा गया लेख और लेख रो ई मंडल 3211 ने वर्चुअल मीटिंग के माध्यम से किया 361 सदस्यों को शामिल उल्लेखनीय है।

फिलिप मुलप्पोने एम टी

रोटरी क्लब त्रिवेंद्रम सबअर्बन - मंडल 3211

मुहम्मद यूनुस ने हमें कोरोना के पूर्व की दुनिया में वापस न लौटने की सलाह दी है, और प्रवासियों के साथ लघु उद्यमियों की तरह व्यवहार करने का उनका सुझाव अद्भुत है। इतने करुणामय और समृद्ध अनुभव वाले यह अद्भुत प्रतिभाशाली व्यक्ति हमारी बधाई के पात्र है। *क्लब हॉप* और *न्यूज इन ब्रीफ,* और रो ई निदेशक संदेशों जैसी नई विशेषताओं के साथ अक्टूबर अंक दिलचस्प है।

एस मोहन

रोटरी क्लब मदुरई वेस्ट - रोई मंडल 3000

रो ई की पहली महिला अध्यक्ष

2022-23 के लिए पहली रो ई महिला अध्यक्ष के रूप में जेनिफर जोन्स के नामांकन के बारे में पढ़कर बहुत खुशी मिली। लेख *जब महिलाओं को रोटरी में जीत हासिल हुई,* प्रभावशाली था और करतारपुर साहिब गुरुद्वारे के लिए भारतीय रोटेरियनों की यात्रा दिल को छू लेने वाली थी। एस आर मधु द्वारा महान भारतीय गायकों की श्रृंखला संगीत प्रेमियों के लिए एक उपहार है।

संतोष तिवारी

रोटरी क्लब जालना

मंडल 3132

मैंने सितंबर अंक को एक बैठक में शुरू से अंत तक पढ़ा। मुझे दो लेख पसंद आए - RIPN (2022-2023) के रूप में पीडीजी जेनिफर जोन्स का चुनाव; बहुत बड़ी खबर है आखिरकार रोटरी को एक महिला अध्यक्ष मिलने वाली है। पीडीजी सिल्विया व्हिटलॉक की भूमिका अच्छी तरह से कवर की गई है।मेरे क्लब को भी 53 साल बाद पहली महिला अध्यक्ष मिलने जा रही है।

20 साल पहले स्थापित रोटरी हुगली आई हॉस्पिटल पर लिखा गया एक अन्य लेख बहुत ही बढ़िया था। RIPE शेखर मेहता द्वारा हाल ही में हुई ज़ूम बैठक के माध्यम से एक नई रेटिना स्पेशलिटी यूनिट का उद्घाटन किया गया।

आर के बुबना

रोटरी क्लब बेलूर - मंडल 3291

किशोर कुमार पर एक आनंदप्रद लेख

किशोर कुमार पर लिखा गया लेख सूचनाप्रद और दिलचस्प था। अन्य रोटरी लेखों के अलावा, ऐसे लेखों को पढ़ना खुशी प्रदान करता है। अच्छा काम करते रहें।

बृज खण्डेलवाल

रोटरी क्लब मद्रास सेंट्रल

मंडल 3232

किशोर कुमार जैसी एक महान हस्ती पर लिखे गए लेख को पढ़कर मुझे अत्यंत प्रसन्नता हुई। रोटरी में, हम विभिन्न क्षेत्रों जैसे संगीत की प्रतिभाओं का सम्मान और आदर करते है। कामुकता, अधूरी इच्छा, किशोर सूनामी जैसे शब्द, इस लेख को सुशोभित करते है। बिना किसी शास्त्रीय प्रशिक्षण के वह चरम पर पहुँच गए।

सुनील कायल
रोटरी क्लब राउरकेला - सेंट्रल - मंडल 3261

किशोर कुमार, एक दिलचस्प योडलर लेख रोचक है। हमें खुशी है कि वह खंडवा से थे और हर संगीत कार्यक्रम में अपने जन्म स्थान का उल्लेख करना नहीं भूलते थे। उनके सम्मान में यहाँ पर उनके नाम पर एक सभागार बनाया गया था।

अनिल बहेटी
रोटरी क्लब खंडवा - मंडल 3040

लेख *आदिवासी विद्यार्थियों को मिला शीर्ष तकनीकी पेशेवरों से बातचीत करने का मौका* के लिए धन्यवाद। सभी लेख प्रभावशाली ढंग से लिखे गए थे। यह हमें और अधिक काम करने के लिए प्रेरित करता है।

अनिल कुमार एस
रोटरी क्लब सिकंदराबाद वेस्ट - मंडल 3150

प्रशंसनीय अंडा बैंक परियोजना

रोटरी क्लब सिकंदराबाद के रोटेरियन हरि किशन ने अंडा बैंक बनाने का अद्भुत विचार पेश किया। रोटरी क्लब दुआर्ते की कानूनी लड़ाई और रोटरी में महिलाओं की प्रगति को अच्छी तरह से कवर किया गया है। अमेरिका, ब्रिटेन, कनाडा, ऑस्ट्रेलिया में सदस्यता की गिरावट पर रोई महासचिव जॉन हेवको द्वारा दी गई चेतावनी चिंता का विषय है।

जयश्री द्वारा लिखित लेख जब *एक नेत्र चिकित्सालय से हुआ रोटरी क्लब का कायाकल्प* प्रेरक है और अस्तित्व में बने रहने के लिए क्लब के दृढ़ संकल्प को दर्शाता है। *रोटरी न्यूज प्लस* वास्तव में एक महान अवधारणा है।

केप्टन वी जी देओधर
रोटरी क्लब नासिक - मंडल 3030

रशीदा भगत की कवर स्टोरी पोषण की कमी से जूझ रहे लोगों तक अंडे पहुंचाना प्रेरणादायक है। रोटेरियन किशन वाल्मीकि का काम सराहनीय है। एक महान नेत्र देखभाल परियोजना करने के लिए रोटरी क्लब हुगली को बधाई। किरण ज़ेहरा का लेख, *रोटरी ने भारत को हरा-भरा बनाया...* शानदार था। एस आर मधु द्वारा लिखित लेख *स्वर साम्राज्ञी* अद्भुत था। इस पत्रिका को वैश्विक मानक स्तर पर ले जाने हेतु किए गए अच्छे कार्य के लिए टीम रोटरी न्यूज़ का धन्यवाद।

डेनियल चित्तिलापीली
रोटरी क्लब कलूर - मंडल 3201

मैं यह देखकर अचंभित हूँ कि भारतीय रोटेरियन बहुत ही रुचिपूर्ण ढंग से करतारपुर, लाहौर की यात्रा कर रहे है, क्योंकि इसने दुश्मनी और नफरत को एक तरफ कर दिया है। सीमाओं की बाधाओं को पार करते हुए केवल रोटरी ही इस तरह की पहल कर सकती है; जय रोटरी!

टोमी इपन
रोटरी क्लब अलेप्पी - मंडल 3211

रोटरी न्यूज़ उत्कृष्टता से परे एक पत्रिका बन गई हैं। कोविड की चुनौती को सामने से स्वीकार करने के लिए रोटेरियनों को मेरी तरफ से बधाई; रोई मंडल कमल संघवी ने सही कहा है ''यदि आप समाज को सशक्त बनाना और गरीबी को कम करना चाहते है, तो लड़कियों को शिक्षित करें।''

अनपढ़ बच्चों पर वैश्विक आंकड़े चिंताजनक है और रोटेरियनों ने उन्हें शिक्षित करने के लिए अपनी कमर कस ली है। रोटरी क्लब नागपुर फोर्ट के *प्रोजेक्ट सक्षम* के माध्यम से सच्ची सेवा देखी जा सकती है, जिससे वंचित बच्चों को आशा मिलती है। यह पत्रिका सुंदर लेखों से सुशोभित है।

राज कुमार कपूर
रोटरी क्लब रूपनगर - मंडल 3080

कोविड योद्धा डॉ चंद्रशेखर कोलवेकर, रो ई मंडल 3142 के एक पीडीजी, जो मरीजों का इलाज करते है और पीपीई किट वितरित करके अग्रिम पंक्ति के श्रमिकों की मदद करते है, बधाई के पात्र है।

एन जगथीसन
रोटरी क्लब एलुरु - मंडल 3020

रो ई निदेशक कमल संघवी ने RILM के तहत बाल साक्षरता और वयस्क शिक्षा पर जोर दिया है। यह रोटरी का एक जबरदस्त प्रयास है क्योंकि शिक्षा मनुष्य के व्यक्तित्व के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। आशा किरण कार्यक्रम भारत को साक्षर बनाने में मदद करेगा।

नवीन आर गर्ग
रोटरी क्लब सुनाम - मंडल 3090

रो ई अध्यक्ष होल्गर नेक ने उचित रूप से अपना ध्यान रोटरेक्ट क्लबों पर केंद्रित किया है। रो ई मंडल 3000 में, 50 से अधिक रोटरेक्ट क्लब है और कॉलेजों एवं संस्थानों में और भी अधिक क्लब खोले जाएंगे। उन्होंने उचित रूप से महिलाओं की सदस्यता पर जोर दिया है और हम सभी अपने सामान्य लक्ष्यों को पूरा करने में उनका साथ देंगे।

एस मुनियांदी
रोटरी क्लब डिंडीगुल फोर्ट - मंडल 3000

संपादक और उनकी टीम को हर महीने उत्कृष्ट समाचार और तस्वीरें लाने के लिए सलाम। मैं संपादक के संदेश की प्रतीक्षा करता हूँ जो समय पर आता है और सूचनाप्रद होता है। भारतीय रोटेरियनों की पाकिस्तान यात्रा और 361 रोटेरियनों को शामिल किए जाने पर लिखे गए लेख पढ़ने में दिलचस्प थे। पोलियो मुक्त प्रमाणित होने के लिए अफ्रीका को बधाई।

भारत मर्चन्ट
रोटरी क्लब बॉम्बे सीफेस - मंडल 3141

अपने विचार संपादक को भेजें:
rotarynews@rosaonline.org; rushbhagat@gmail.com
पर ई-मेल करें। हमारी वेबसाइट
www.rotarynewsonline.org पर
क्लिक करें और Rotary News Plus पर और ज़्यादा परियोजनाएं पढ़ें।

क्लब की उन्नति के लिए विविधता, इक्विटी

प्रिय रोटेरियनों, रोटरेक्टरों और दोस्तों,

हम सभी अपने समुदायों और स्वयं को बदलने की रोटरी की जबरदस्त शक्ति को जानते है। हालांकि, प्रत्येक समुदाय में, कुछ लोग छूट जाते है, और हमने उन तक पहुंचने के लिए पर्याप्त प्रयास नहीं किए है।

रो ई निदेशक मंडल रोटरी को अधिक स्वागत योग्य और विविध बनाने का प्रयास कर रहा है। हमने लिंग, जाति, धर्म, उम्र या अन्य कारकों की परवाह किए बिना नए सदस्यों को आकर्षित करने में क्लबों की मदद करने के लिए विविधता, निष्पक्षता और समावेश को बढ़ावा देने के लिए एक टास्क फोर्स का गठन किया। 2022-23 के लिए रोटरी अध्यक्ष पद के लिए हमारे संगठन का नेतृत्व करने वाली पहली महिला के रूप में जेनिफर ई जोन्स का चयन इस दिशा में एक और कदम है।

जमीनी स्तर पर, क्लब समावेश और विविधता को बढ़ावा देते है। आलिया अली - जो बिग वेस्ट रोटरेक्ट मल्टीडिस्ट्रिक्ट इंफोर्मेशन ऑर्गनाइजेशन के निदेशक मंडल में कार्य करती है और एक रोटरी यूथ लीडरशिप अवार्ड्स की भूतपूर्व छात्रा है और रोट्रेक्ट क्लब सरे-न्यूटन, ब्रिटिश कोलंबिया की पूर्व अध्यक्ष है - ने अपना दृष्टिकोण पेश किया।

चार साल पहले एक RYLA प्रतिभागी के रूप मैंने जो राहत महसूस की थी वो मुझे आज भी याद है। आखिरकार मैंने अपने लोगों को पा लिया: जो उतनी ही परवाह करते थे जितनी मैं। पूरी दुनिया में, रोटरी का दिल एक ही है। उस भावना को जारी रखें, खासकर पर तब जब बातचीत करना मुश्किल हो। जातिवाद, पक्षपात और भेदभाव अलग-अलग रूप में हर देश, हर शहर और हर व्यक्ति में मौजूद होते है। हम इसे जड़ से कैसे खत्म कर सकते है?

एक विविधता, निष्पक्षता और समावेश सलाहकार के रूप में, मैं एक ऐसी संस्कृति का निर्माण करने में संगठनों की मदद करता हूँ जो सहानुभूति की शक्ति का उपयोग करके सभी को सशक्त बनाती है और उन्हें आकर्षित करती है। जब हम दूसरों के साथ ऐसा महसूस करते है कि वे हमारी ही तरह है तो हम अपने दिलों में पक्षपात नहीं रख सकते।

हम सहानुभूति के लेंस के माध्यम से चार मार्ग परीक्षण लागू कर सकते है। क्या हम अपने क्षेत्र में महिलाओं सहित सभी के साथ सद्भावना और मैत्री का व्यवहार कर रहे है? क्या सभी उम्र के लोगों के लिए चीजें उचित और फायदेमंद हैं? आपको जिन विकल्पों का चुनाव नहीं करना है उनका चुनाव कौन करेगा?

जब रमज़ान के दौरान एक रोटरी सम्मेलन आयोजित हुआ था, तो मैंने रोटरी और मेरे धर्म के बीच एक हृदयविदारक चुनाव किया था। मैंने सोचा: जब हम पूछते है कि क्या यह सभी संबंधित व्यक्तियों के लिए उचित और फायदेमंद है, तो क्या एक मुस्लिम होने के नाते मैं इसमें शामिल नहीं थी? क्या कभी ईस्टर पर सम्मेलन आयोजित होगा? केवल कठिन प्रश्न पूछकर ही हम अधिक समावेशी और विविध रोटरी के निर्माण का काम शुरू कर सकते है।

हम पहले से ही दुनिया भर के कई लोगों को जोड़ते है। उन संभावनाओं की कल्पना करें जब हम इस यात्रा में और भी लोगों को शामिल करते है। यह उस रोटरी का भविष्य है जिसे मैं देखना चाहती हूं: जहां हम अबाध रूप से अपनी सेवा देते है, अनवरत *रूप से उदार रहते है, और उस परिवर्तन को लाने का इरादा रखते है जो हम देखना चाहते है।*

आलिया अलि
बिग वेस्ट रोटरेक्ट मल्टि डिस्ट्रिक्ट इन्फर्मेशन ऑर्गनाईज़ैशन।

रोटरी के पास काफी बड़ा दिल है। हमारे पास पहले से ही विभिन्न शैलियों, संस्कृतियों और अवसरों की पेशकश करने वाले विभिन्न प्रकार के क्लब है - और जिन्हें ऐसा लगता है कि किसी विशेष क्लब में उनका स्वागत नहीं हो रहा है वे विभिन्न मॉडलों पर बनाए गए नए क्लबों के लिए बढ़िया उम्मीदवार हो सकते है। यह महत्वपूर्ण है कि हम सुनिश्चित करें कि प्रत्येक नया रोटरी सदस्य उनके क्लब के लिए उचित हो। रोटरी विविधता के माध्यम से अवसर खोलती है।

Holger Knaack

होल्गर नेक
अध्यक्ष, रोटरी इंटरनेशनल

संपादक
का संदेश

हमारे किसानों और महिलाओं को आपकी मदद की जरूरत है

सारे शोर शराबे, संदेह और प्रबल विरोध और भारत सरकार द्वारा लागू नए कृषि कानूनों के छोटे किसानों पर पड़ने वाले संभावित प्रतिकूल प्रभाव से उपजी चिंता के बीच कृषि पर आयोजित वेबिनार में भाग लेना ताज़ी हवा के झोंके के समान था, रो इ मंडल 3141 के पीडीजी राहुल टिम्बाडिया द्वारा आयोजित इस वेबिनार में दो दिलचस्प निष्कर्ष प्रस्तुत किये गए। पहला था सामाजिक कार्यकर्ता और आप पार्टी में राष्ट्रीय कार्यकारिणी के पूर्व सदस्य मयंक गांधी के अनुभवों का ब्योरा, जो महाराष्ट्र के सूखाग्रस्त मराठवाड़ा क्षेत्र में बीड जिले में परली ब्लॉक के कई गाँवों में कृषि-क्रांति का बिगुल बजा चुके हैं। उनका कहना है, परली को चुनने के पीछे इस संभाग में असाधारण कृषि संकट था जिसकी वजह से यहाँ सबसे ज़्यादा किसानों ने आत्महत्या की थी। विगत चार वर्षों में उनके अथक प्रयास, प्रबंधकीय कौशल और नियोजित उद्यमशीलता को धन्यवाद जिसके कारण जो भूजल 300-500 फीट की गहराई पर चला गया था आज 50-70 फीट पर आ गया है। भारत की प्रमुख नर्सरी से फलों की श्रेष्ठ नस्ल वाले बढ़िया पौधे ला कर किसानों को पपीता, केला, मौसम्बी इत्यादि फलों के पेड़ लगाने की सलाह दी और बीच बीच में अन्य फसलों को उगाने से, किसानों की आय में अप्रत्याशित रूप से वृद्धि हुई है ... पहले के लगभग ₹10,000-15,000 प्रति एकड़ से बढ़ कर ₹2 से 4 लाख प्रति एकड़ या इससे भी अधिक पहुँच गई। इसका परिणाम ये हुआ, इस अकालग्रस्त गाँव को छोड़, मुंबई और पुणे पलायन कर गए लोग वापस लौटने लगे।

दूसरा निष्कर्ष, रोटरी का सातवां फोकस क्षेत्र, हमारे पृथ्वी ग्रह की हरीतिमा और पर्यावरण संरक्षण, टिम्बाडिया का जुनून है जिसमें समान विचारधारा रखने वाले संपन्न शहरी लोग, जो खेती में तो रूचि रखते हैं पर उनके पास समय और कृषि तकनीक का अभाव है, उन को सामुदायिक खेती के लिए आपस में जोड़ना। इससे उनकी और स्थानीय लोगों, दोनों की आय बढ़ेगी और ये भारत के विकास के लिए लिए भी अच्छा रहेगा। इस महीने हमारी कवर स्टोरी में इस अद्भुत पहल का विस्तृत विवरण पढ़ें।

हालांकि यह खबर निश्चय ही खुश करने वाली है, लेकिन भारत में लड़कियों और महिलाओं के खिलाफ लगातार हो रही हिंसा और यौन दुराचार अत्यंत कष्टप्रद हैं। वीभत्स रूप लिए लगातार सामूहिक बलात्कार हो रहे हैं। पिछले महीने, जिस घटना ने सम्पूर्ण प्रकृति को हिला कर रख दिया, वह था दलित किशोरी के साथ किया गया नृशंस सामूहिक बलात्कार - वह केवल 19 वर्ष की थी - उत्तर प्रदेश के हाथरस गाँव से, निर्भया की तरह ही, निर्ममता से पिटाई की गई महिला कई दिनों तक हैवानियत का दंश सहती रही, पहले अलीगढ़ के अस्पताल में और फिर दिल्ली में, आखिरकार शरीर और मन पर हुए असंख्य घावों के साथ उसने दम तोड़ दिया।

परन्तु उसकी लाश को अभी और बर्बरता झेलनी थी। उसके माता-पिता व अन्य रिश्तेदारों की सहमति के बिना उनकी गैर मौजूदगी और रात के अँधेरे में उसके शव को जला दिया गया, इससे साबित हो गया की हम कमजोर और दलितों पर दमन और अन्याय की पराकाष्ठा में एक कदम और नीचे गिर गए हैं। अब, वह रोटरी, जो अंतरराष्ट्रीय स्तर पर और भारत में, अपनी महिला सदस्यता बढ़ाने का प्रयास दृढ़ता पूर्वक कर रही है, और इसी क्रम में जेनिफर जोन्स के पहली बार रो इ महिला अध्यक्ष के रूप में नामांकित होने के साथ ही, भारत और दुनिया भर में, लैंगिक समानता को, रोटेरियनों द्वारा किये जा रहे सामाजिक कार्यों में अधिक बढ़ावा मिलेगा। इसे रोटरी के सिद्धांत - लिंग, जाति, वर्ग, समुदाय या धर्म के आधार पर भेदभाव के लिए शून्य सहनशीलता, कोई समझौता नहीं की नीति में शामिल करें, आशा है भारत में रोटरी क्लब उन परियोजनाओं पर अधिक ध्यान देंगे जिनका उद्देश्य दलित लड़कियों और महिलाओं को शिक्षित, निपुण करने के साथ उन का सशक्तिकरण करना है।

ठीक हमारे किसानों की तरह ही, भारतीय महिलाओं को भी आपकी सहायता की आवश्यकता है... शिक्षित और सशक्त होने के लिए।

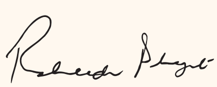

रशीदा भगत

Governors Council

RI Dist 2981	DG R Balaji Babu
RI Dist 2982	DG K S Venkatesan
RI Dist 3000	DG A L Chokkalingam
RI Dist 3011	DG Sanjiv Rai Mehra
RI Dist 3012	DG Alok Gupta
RI Dist 3020	DG Muttavarapu Satish Babu
RI Dist 3030	DG Shabbir Shakir
RI Dist 3040	DG Gajendra Singh Narang
RI Dist 3053	DG Harish Kumar Gaur
RI Dist 3054	DG Rajesh Agarwal
RI Dist 3060	DG Prashant Harivallabh Jani
RI Dist 3070	DG CA Davinder Singh
RI Dist 3080	DG Ramesh Bajaj
RI Dist 3090	DG Vijay Arora
RI Dist 3100	DG Manish Sharda
RI Dist 3110	DG Dinesh Chandra Shukla
RI Dist 3120	DG Karunesh Kumar Srivastava
RI Dist 3131	DG Rashmi Vinay Kulkarni
RI Dist 3132	DG Harish Motwani
RI Dist 3141	DG Sunnil Mehra
RI Dist 3142	DG Dr Sandeep Kadam
RI Dist 3150	DG Nalla Venkata Hanmanth Reddy
RI Dist 3160	DG B Chinnapa Reddy
RI Dist 3170	DG Sangram Vishnu Patil
RI Dist 3181	DG M Ranganath Bhat
RI Dist 3182	DG B Rajarama Bhat
RI Dist 3190	DG B L Nagendra Prasad
RI Dist 3201	DG Jose Chacko Madhavassery
RI Dist 3202	DG Dr Hari Krishnan Nambiar
RI Dist 3211	DG Dr Thomas Vavanikunnel
RI Dist 3212	DG P N B Murugadoss
RI Dist 3231	DG K Pandian
RI Dist 3232	DG S Muthupalaniappan
RI Dist 3240	DG Subhasish Chatterjee
RI Dist 3250	DG Rajan Gandotra
RI Dist 3261	DG Fakir Charan Mohanty
RI Dist 3262	DG Saumya Rajan Mishra
RI Dist 3291	DG Sudip Mukherjee

Printed by PT Prabhakar at Rasi Graphics Pvt Ltd, 40, Peters Road, Royapettah, Chennai - 600 014, India, and published by PT Prabhakar on behalf of Rotary News Trust from Dugar Towers, 3rd Flr, 34, Marshalls Road, Egmore, Chennai 600 008. Editor: Rasheeda Bhagat.

The views expressed by contributors are not necessarily those of the Editor or Trustees of Rotary News Trust (RNT) or Rotary International (RI). No liability can be accepted for any loss arising from editorial or advertisement content. Contributions – original content – is welcome but the Editor reserves the right to edit for clarity or length. Content can be reproduced with permission and attributed to RNT.

रो ई निदेशकों

आमने-सामने

कोविड महामारी ने सब कुछ बदल दिया है - हमारी रोटरी बैठकें, परियोजना कार्यान्वयन और फैलोशिप गतिविधियां करने का तरीका। यह रोटरी के लिए अद्वितीय चुनौतियां लेकर आया है। इन सभी बदलाव में एक चीज स्थिर रहती है - रोटरी का आधार, द रोटरी फाउंडेशन (टीआरएफ) के प्रति हमारी प्रतिबद्धता। रोटरी में बहुत से अच्छे कार्य टीआरएफ की वजह से संभव है। यह भविष्य के लिए हमारा निवेश है। टीआरएफ में दान करना वास्तव में प्रभावी होता है। रोटेरियन संस्थान को इसलिए देते है क्योंकि हम जानते है कि हमारे साथी रोटेरियनों के द्वारा हमारे पैसे का इस्तेमाल समझदारी के साथ अच्छी तरह से किया जाता है, और टीआरएफ के माध्यम से हम जितना अधिक कर सकते है उतना हम अकेले कभी नहीं कर पाते।

रोटरी के मुकुट में यह संस्थान एक चमकने वाला नगीना है। यह सद्भावना, समझ और शांति की दिशा में काम करने का एक साधन है। वैश्विक अनुदान हमें दुनिया भर में बड़े पैमाने पर, प्रभावी परियोजनाएं करने की अनुमति देता है। इस महामारी में टीआरएफ की अग्रसक्रिय और समयबद्ध प्रतिक्रिया ने विश्व कोष की मांग को और बढ़ा दिया है। और इसलिए वार्षिक कोष का समर्थन करना महत्वपूर्ण है और यह प्रत्येक रोटेरियन के हर साल के योगदान पर निर्भर करता है।

एक पोलियो मुक्त विश्व के हमारे वादे को पूरा करने के लिए पोलियो कोष का समर्थन करना महत्वपूर्ण है। एंड पोलियो नाउ अभियान केवल धन जुटाने के बारे में नहीं है; यह हमारे बच्चों को बचाने के बारे में है। मैं सभी रोटेरियनों से अनुरोध करता हूं कि वे बड़ा दिल रखते हुए वार्षिक और पोलियो कोष का समर्थन करें। याद रखें कि आप जो देते है भले ही वो सागर की एक बूंद के बराबर हो; लेकिन आपकी उस बूंद के बिना सागर अधूरा होगा। टीआरएफ को कल के लिए मजबूत बनाने हेतु आज आपका समर्थन महत्वपूर्ण है।

3 प्रकार के दानकर्ता होते है - एक, चकमक पत्थर की तरह सख्त जो केवल ज़ोर देने पर ही देते है और केवल एक छोटी सी चिंगारी पैदा करते है; एक उस स्पंज की तरह जो निचोड़े जाने पर देता है लेकिन जल्द ही सूख जाता है; और तीसरे, एक मधुकोष की तरह होते है जो स्वतंत्र रूप से देता है और देता ही रहता है। रोटेरियन मधुमक्खी के एक छत्ते की तरह होते है। वे बार-बार खुलकर देते है।

इमर्सन ने कहा है, ''जब एक भी व्यक्ति की ज़िंदगी आपकी वजह से बेहतर होती है, तो वही सफलता है।'' रोटरी संस्थान उसी एकता की ताकत है - एक रोटेरियन, एक क्लब और एक मंडल - जो कई गुना बढ़ जाती है।

हम रोटेरियन हमारे समुदायों के पुनर्निर्माण, पुनर्संगठन और उसकी पुनः बहाली करने में मदद कर सकते है। और ऐसा करने का एक अच्छा तरीका टीआरएफ है। जब हम एक दूसरे से जुड़ते है और जब हमारे सामने नए अवसर खुलते है, तो हम अपने संस्थान का समर्थन करते है। एक साथ मिलकर हम दुनिया बदल सकते है और हम बदलेंगे।

डॉ भरत पांड्या
रो ई निदेशक, 2019-21

का संदेश

रोटरी फाउंडेशन ने हमें गौरवान्वित किया हैं

दुनिया की आवश्यकताएं पहले से कहीं अधिक और विविध हैं। हमारे क्षेत्र के रोटेरियनों, और पूरे रोटरी वर्ल्ड को गर्व होना चाहिए कि आपके योगदान के माध्यम से बनाया गया रोटरी फाउंडेशन दुनिया भर में हजारों लोगों के जीवन को बेहतर बनाने में मदद कर रहा है। हमें गर्व होना चाहिए कि पिछले कुछ वर्षों में हमारा क्षेत्र, टीआरएफ को देने में नंबर 2 पर हैं। वर्षों से लेने के बाद, भारत अब एक देने वाला देश है; पिछले साल हमने जितना प्राप्त किया उससे अधिक दिया!

यह खुशी की बात है कि भारतीय रोटेरियन अब अन्य देशों में वैश्विक अनुदान करने के लिए विदेशी क्लबों के साथ मिलकर काम कर रहे हैं। रोटरी के फोकस क्षेत्र जैसे स्वास्थ्य और पोषण, पानी और स्वच्छता, आर्थिक गतिविधि में वृद्धि, शांति को बढ़ावा देना, और सबसे अच्छा, साक्षरता और शिक्षा के सभी क्षेत्रों में अभूतपूर्व कार्यों के बारे में जरा सोचें, जो काम रोटरी ने फाउंडेशन अनुदान के माध्यम से किए हैं। हमने अपने तत्काल और उदार योगदान के माध्यम से प्राकृतिक आपदाओं के पीड़ितों के लिए आपातकालीन सहायता पहुँचाई, कई कोविड परियोजनाएं की, अस्पतालों को उपकरण दिए, PM CARES फंड इत्यादि।

2019-20 में, टीआरएफ ने 29.71 डॉलर मिलियन मूल्य के 339 अनुदान स्वीकृत किए। जबकि ज़ोन 4 को 104 अनुदान 12.21 डॉलर मिलियन, ज़ोन 5 को 110 (8.17 डॉलर मिलियन), ज़ोन 6 को 45 अनुदान (2.76 डॉलर मिलियन) और ज़ोन 7 को 80 अनुदान (6.57 डॉलर मिलियन) मिले।

आपकी उदारता और आपके द्वारा इतने वर्षों में दिए गए हजारों स्वयंसेवी समय के कारण, रोटरी व्हील, हमारा लोगो, पूरे गुजरात, नेपाल, उत्तराखंड इत्यादि में निर्मित सभी कॉलोनियों में गर्व से खड़ा है। अपनी कई परियोजनाओं के माध्यम से हमने गरीबी और बीमारी को कम करने में, स्वच्छता में सुधार लाने की, संघर्ष को कम करने और स्थायी शांति सुनिश्चित करने में कुछ हद तक कामयाब रहे। और हमने भारत को पोलियो मुक्त बनाने में भी मदद की है!

उस प्रभाव पर विचार करें जो आप कर सकते हैं; 60 सेंट से छोटे बच्चे को पोलियो से बचाया जा सकता है; 50 डॉलर जलजनित बीमारी से लड़ने में मदद करने के लिए स्वच्छ पानी प्रदान कर सकता है; 500 डॉलर से एक एन्टी-बुल्लीइंग कैंपेन शुरू किया जा सकता है और बच्चों के लिए एक सुरक्षित वातावरण बनाया जा सकता है। एनुअल फ़ंड में योगदान देकर, आप इन जीवन-बदलने वाली परियोजनाओं को संभव बनाते हैं ताकि एक साथ, हम दुनिया में अच्छा कर सकें।

लगातार 11 वें वर्ष के लिए, टीआरएफ को सबसे अधिक रेटिंग मिली है - चार सितारे - चैरिटी नेविगेटर से, अमेरिका में दान के एक स्वतंत्र मूल्यांकनकर्ता, मजबूत वित्तीय स्वास्थ्य, जवाबदेही और पारदर्शिता के प्रदर्शन के लिए। धन्यवाद।

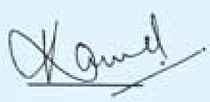

कमल संघवी

रो ई निदेशक, 2019-21

Board of Permanent Trustees & Executive Committee

PRIP Rajendra K Saboo	RI Dist 3080
PRIP Kalyan Banerjee	RI Dist 3060
RIPE Shekhar Mehta	RI Dist 3291
PRID Panduranga Setty	RI Dist 3190
PRID Sushil Gupta	RI Dist 3011
PRID Ashok Mahajan	RI Dist 3141
PRID P T Prabhakar	RI Dist 3232
PRID Dr Manoj D Desai	RI Dist 3060
PRID C Basker	RI Dist 3000
TRF Trustee Gulam A Vahanvaty	RI Dist 3141
RID Dr Bharat Pandya	RI Dist 3141
RID Kamal Sanghvi	RI Dist 3250
RIDE A S Venkatesh	RI Dist 3232
RIDE Dr Mahesh Kotbagi	RI Dist 3131

Executive Committee Members (2020–21)

DG Sanjiv Rai Mehra Chair – Governors Council	RI Dist 3011
DG Sudip Mukherjee Secretary – Governors Council	RI Dist 3291
DG Sangram Vishnu Patil Secretary – Executive Committee	RI Dist 3170
DG Prashant Harivallabh Jani Treasurer – Executive Committee	RI Dist 3060
DG S Muthupalaniappan Member – Advisory Committee	RI Dist 3232

ROTARY NEWS / ROTARY SAMACHAR

Editor
Rasheeda Bhagat

Senior Assistant Editor
Jaishree Padmanabhan

ROTARY NEWS / ROTARY SAMACHAR

ROTARY NEWS TRUST
3rd Floor, Dugar Towers,
34 Marshalls Road, Egmore
Chennai 600 008, India.
Phone : 044 42145666
e-mail: rotarynews@rosaonline.org
Website: www.rotarynewsonline.org

Now share articles from *rotarynewsonline.org* on WhatsApp.

Rotary PEOPLE OF ACTION

एक समृद्ध भारत के लिए सामुदायिक खेती

रशीदा भगत

भारत का कोई भी गाँव शरीर के अंगों की तरह एक साथ कार्य करते हुए ही रह सकता है। जिस प्रकार यदि आप यकृत की चिंता करते रहें तो हृदय की उपेक्षा होती है, अगर आप सिर्फ हृदय का ध्यान रखेंगे तो फेफड़ों की शक्ति मंद पड़ जाएगी । यानी शरीर तभी तक स्वस्थ है जब हम उसके सारे अंगों का ध्यान रखें। ऐसे गाँव में रहने वाले किसान का जीवन भी अप्रत्याशित होता है। अगर मैं किसान होता, तो मुझे अब तक 10 बार दिल के दौरे पड़ चुके होते।

इन शब्दों के साथ, मयंक गांधी, एक सामाजिक कार्यकर्ता, जो महाराष्ट्र के मराठवाड़ा में सूखे और किसानों की आत्महत्या के लिए

मयंक गांधी एक किसान के साथ।

बदनाम क्षेत्र परली में खुशहाली का इंक़िलाब लाये थे, उन्होंने एक वेबिनार 'शिफ्टिंग पैराडाइम': कृषि, एक महान अवसर में भाग ले रहे रोटरियनों के विशाल समूह और अन्य लोगों को मंत्रमुग्ध कर दिया, जिसका आयोजन रो इ मंडल 3140 के पीडीजी राहुल टिंबडिया के ला टीम समूह द्वारा किया गया था।

गांधी का कहना था कि किसानों को ऐसी-ऐसी समस्याओं और चुनौतियों का सामना करना पड़ता है "हम शहरी लोग, जिसकी कल्पना भी नहीं कर सकते।" ये चुनौतियां मौसम की वजह से उपजती हैं ... अत्यधिक बारिश या इसकी कमी, फसलों पर कीड़ों का हमला, मिट्टी सम्बंधित समस्याएं, ऐसी और भी कई समस्याएं।

आइए इस सामाजिक कार्यकर्ता द्वारा कृषि और कृषकों को इकठ्ठा करने के प्रारंभिक प्रयास पर एक नज़र डालें, जिसकी वजह से सिर्फ 1-3 एकड़ भूमि में, परली के कई किसानों की आय ₹10,000-15,000 प्रति माह से बढ़कर ₹2-4 लाख तक उछल गई, और कभी-कभी तो बंपर फसल होने पर ₹6 लाख तक पहुँच गई। गांधी, जो खुद का परिचय ऐसे देते हैं "एक पागल आदमी जो देश बदलना चाहता है," पहले अन्ना हजारे के साथ काम करते थे, और इंडिया अगेंस्ट करप्शन आंदोलन की मुख्य समिति के सदस्य रहे और आम आदमी पार्टी की राष्ट्रीय कार्यकारिणी के सदस्य थे।

प्रबंधन सलाहकार होना, आम तौर पर ये सोचता है कि वह सब कुछ जानता है और बस थोड़ा बहुत बदलाव करने की जरूरत है। लेकिन गांव पहुँच कर मुझे पता चला कि मुझे कुछ नहीं आता, मराठी भाषा भी नहीं।

मयंक गांधी

2015 में दिल्ली का चुनाव आप पार्टी ने प्रचंड बहुमत के साथ जीता था लेकिन धीरे-धीरे गांधी को अहसास हो गया कि वह समझौते और आंतरिक कलह के लिए नहीं बने थे, जो चुनावी राजनीति में अपरिहार्य थी और उन्होंने राजनीति छोड़ दी।

बात 2016 की गर्मियों की है, "देश को परिवर्तित करने का जुनून, मुझ पर अभी भी सवार था, लेकिन फिर जल्द ही मुझे एहसास हो गया कि मैं पूरे देश को नहीं बदल सकता क्योंकि ना तो मेरे पास इसकी कोई रूप रेखा थी, और ना ही राजनीतिक पार्टी।" गांधीजी के शब्दों को वह हमेशा अपने ज़ेहन में रखते थे कि भारत की आत्मा अपने गांवों में बसती है। "लेकिन गांवों में कष्ट और गरीबी इतनी ज़्यादा थी कि एक तरह से ग्रामीणों की कमर टूट चुकी थी। एक सवाल उन्हें हमेशा परेशान करता रहता था, वह यह कि अगर गांव और ग्रामीण सफल और मजबूत नहीं होंगे, तो देश सफल और मजबूत कैसे बनेगा।"

6.4 लाख गाँवों वाले देश को अकेले बदलने की सोचना, वह मानते हैं, "निरा पागलपन है, इसलिए मैंने निश्चय किया कि मैं उस क्षेत्र में काम करूंगा जहाँ से सबसे अधिक किसानों की आत्महत्या की खबर मिली है और वो था महाराष्ट्र का मराठवाड़ा, जिसका बीड जिला कृषि संकट की सबसे निकृष्ट अवस्था में है ... इसे महाराष्ट्र का बिहार भी कहते हैं।"

और बीड में, बुरी तरह प्रभावित क्षेत्र परली तालुक था जहां किसानों ने सबसे ज़्यादा

आत्महत्या की थी, जिसके अंतर्गत 106 गाँव आते हैं। ''मैंने यह भी विचार किया कि भारत के 40 प्रतिशत सिंचित क्षेत्र के मुकाबले, परली का सिंचित क्षेत्र केवल 1.72 प्रतिशत था।'' इसलिए उन्होंने कमान उठा ली। लेकिन पहली रुकावट थी उनका प्रबंधन सलाहकार होना, ''आम तौर पर ये सोचता है कि वह सब कुछ जानता है और बस थोड़ा बहुत बदलाव करने की जरूरत है। लेकिन गांव पहुँच कर मुझे पता चला कि मुझे कुछ नहीं आता, मराठी भाषा भी नहीं, और सबसे पहला काम जो मुझे करना होगा वो ये कि मुझे दिमाग से सब कुछ भुला देना होगा।''

गाँव और खेती की अर्थव्यवस्था किस तरह चलती है इसे समझने में उसे दो साल लग गए। ''किसी गाँव के बारे में मैं कुछ नहीं जानता था सिवाय उस गाँव के जो मैंने फिल्म *लगान* में देखा था!'' इस क्षेत्र में पानी टैंकरों के माध्यम से आता था और यहाँ उनकी मुलाक़ात ऐसे युवाओं से हुई जिन्होंने दूध का

स्वाद तक नहीं चखा था और अधिकांश ग्रामीणों की मासिक आय ₹3500 थी। ''मैंने पाया कि लोग सिर्फ इसलिए जी रहे थे क्योंकि उनकी मौत नहीं हुई थी। बस इतना ही।''

उन्होंने महसूस किया कि यदि आप किसी गाँव में बदलाव चाहते हैं, तो उसका आमूल परिवर्तन करना पड़ेगा, गांधी ने शुरुआत कर दी, सीधे स्थानीय समुदाय को साथ ले कर। ''लेकिन पहले गाँव वालों को आश्वस्त करना पड़ा था कि यह आदमी यहाँ से 530 किमी दूर से क्यों आया है। न तो वह नोट चाहता है और न ही वोट, तो फिर वह यहां क्यों है, यह संदेह था। इसलिए पहले तो उन्हें यह समझाना पड़ा कि मैं पागल आदमी हूं।''

परली तालुक के रूपांतरण के लिए, जिस तरह से यहां खेती की गई और किसानों की आय कई गुना बढ़ गई इस के लिए एक आंदोलन की आवश्यकता थी। लेकिन यह एक नकारात्मक, टकराव पैदा करने वाला या विनाशकारी आंदोलन नहीं हो सकता था ... और यह नए भवन की योजना बनाये बिना पुरानी इमारत को ध्वस्त करने जैसा भी नहीं हो सकता था।

इस प्रकार उनके संगठन ग्लोबल परली का सूत्रपात हुआ और उन्होंने 15 गांवों में काम करना शुरू कर दिया। गांधी ने बताया कि पिछले आठ सालों में परली पाँच अकाल देख चुका था। ''हमारी पहली चुनौती इन सूखाग्रस्त गाँवों में पानी पहुँचा कर वापस उन्हें अपने पैरों पर खड़ा करना था।''

40 वर्षों में जब मराठवाड़ा में सूखे की स्थिति का सबसे खराब दौर आया, जिसमें संचित पानी का प्रतिशत आठ से नीचे चला गया था और लोग लगातार चौथे सूखे का सामना कर रहे थे तो ''हमने बीड के प्यासे ग्रामीणों को 1 करोड़ लीटर पानी की आपूर्ति की।'' टैंकरों के माध्यम से पानी की आपूर्ति करने के बाद, हमारा ध्यान पानी के उपयोग

मयंक गांधी एक किसान के साथ बैलगाड़ी की सवारी करते हुए।

मयंक गांधी स्थानीय समुदाय को संबोधित करते हुए।

और संरक्षण की ओर मुड़ गया, जो प्राथमिक और मुख्य चुनौती थी।

पापनाशी नदी का विस्तृत सर्वेक्षण किया गया और निरंतर प्रयास, श्रम और धन के माध्यम से, ''हमने पापनाशी नदी का 70 किमी का निर्माण किया ... शायद इससे मेरे पाप धुल गए।'' गांधी ने कहा, इसके साथ ही, ''हमने 162 तालाब और पांच बड़े बांध बनाए और इन जल संरक्षण और संवर्द्धन के फलस्वरूप, बंजर भूमि हरी भरी होने लगी, पानी आया, पेड़ फले-फूले और आय का स्रोत बने और लोगों में आशा जगी।''

इससे पहले उन्हें कोई उम्मीद नहीं थी लेकिन पानी ने उम्मीद जगा दी और उन्हें लगा कि हम कुछ कर सकते हैं। देखते देखते शीघ्र ही लोगों की फौज खड़ी हो गई, ग्राम पंचायत स्तर पर भ्रष्ट नेतृत्व का स्थान युवाओं और महिला नेताओं ने ले लिया। पहले ग्रामीणों को पानी लाने के लिए 300-500 फुट नीचे जाना पड़ता था; लेकिन अब 50-70 फीट पर पानी मिलने लगा।

गांधी ने जल्दी से कहा कि इसके लिए न तो चन्दा और न ही दान लिया गया। ''हमें किसानों से पैसा मिला और ग्रामीणों ने ₹13.5 लाख दिए, शेष सरकार और दोस्तों से मिले। संदेश स्पष्ट था। हम दान नहीं दे रहे लेकिन सिर्फ साथ खड़े हैं।''

शीघ्र ही उनके समर्थन का आधार बढ़ते बढ़ते लोगों की एक सेना में बदल गया, इस मंत्र

इन जल संरक्षण और संवर्द्धन के फलस्वरूप, बंजर भूमि हरी भरी होने लगी, पानी आया, पेड़ फले-फूले और आय का स्रोत बने और लोगों में आशा जगी।

मयंक गांधी

के साथ, ''जीवन में परिवर्तन लाएं।'' ''मुंबई और पुणे पलायन कर गए लोग लौटने लगे जहां वे मजदूरी करते थे। उन्होंने कहा कि अगर हम अपने स्वच्छ और हरे-भरे गाँव में खूबसूरत ज़िंदगी गुजार सकते हैं तो मुंबई के स्लम्स में एक गटर जैसी ज़िंदगी क्यों जीयें।''

''फिर 2018 में एक बड़ा अकाल पड़ा और हम सभी निराश हो गए और लगा कि पीने के पानी के लिए फिर से टैंकर मंगवाने पड़ेंगे, जो कैंसर जैसी बीमारी में होने वाले लाल चकत्तों के ऊपर मरहम लगाने जैसा था।'' लेकिन पानी को संचित करने के लिए जो जबरदस्त काम किया गया था, वो उन्हें इस संकट से निकाल ले गया।

हालाँकि पानी जीवन देता है ''चुनौती इससे आगे जा कर और आय में वृद्धि करना है; आप सिर्फ पानी पी कर ज़िंदा नहीं रह सकते।'' इसके बाद, उन्होंने और उनके समूह ने कृषि उद्योग और कृषि विश्वविद्यालयों, KVK (किसान विकास केंद्र) के साथ साझेदारी कर कृषि अर्थव्यवस्था को बढ़ाने की योजना बनाई,

एमओयू पर हस्ताक्षर किए गए, और एक तकनीकी टीम का गठन किया गया।

भू-परीक्षण, मौसम की जानकारी, रुझान आदि का अध्ययन करने के बाद, लगाए जाने वाले फलों के पेड़ को चुना गया, समस्त पूंजीगत व्यय, प्रारंभिक निवेश योजना और अन्य विवरणों पर काम किया गया। उनकी टीम रात-रात भर गाँवों में जा कर प्रोजेक्टर के माध्यम से किसानों को लाभ-हानि के बारे में बताती और उन्हें जानकारी देती कि बढ़िया नस्ल के स्वस्थ पौधे दिए जाने से पहले, उन्हें कम से कम छह प्रशिक्षण सत्रों से गुजरना होगा, जो सभी लाभदायक खेती से संबंधित थे।

पहले साल में भूमि की स्थिति, मौसम के अनुसार और किसानों की पसंद के आधार पर 12 लाख आम, सीताफल, पपीता, मौसमी, ड्रमस्टिक और केले के पौधे लगाए गए। आमतौर पर, प्रत्येक किसान को कपास और सोया से ₹15,000 की आमदनी मिल रही थी, जो नगण्य थी। ''फलदार वृक्ष लगाना कोई रॉकेट साइंस नहीं है, लेकिन हमने कमियों का विश्लेषण किया और तीन खामियां मिलीं।'' पहली थी बढ़िया नस्ल वाले पौधे। गांधी कहते हैं, ''जिस तरह आप किसी घोड़े या कुत्ते को खरीदते समय नस्ल को देखते हैं, वैसे ही पौधों की भी नस्ल होती है और मदर प्लांट अच्छी सेहत और बढ़िया नस्ल का होना चाहिए।''

सावधानी पूर्वक, पूरे भारत में जो नर्सरी उच्च गुणवत्ता वाले पौधे दे सकती हैं, उन की पहचान की गई थी। फसल उगाने के तरीके को बदल

एक कायाकल्प हुआ जल श्रोत।

सामुदायिक खेती शहरी लोगों के लिए फायदेमंद है

वेबिनार में, शहरों में रह रहे वो लोग जिनके पैतृक स्थान पर कृषि भूमि है और जो खेती करना चाहते हैं या जमीन खरीद कर खेती का व्यवसाय करने के इच्छुक लोगों द्वारा पूछे जाने पर, टिम्बाडिया का संदेश बिलकुल सरल था - व्यक्तिगत रूप से देखभाल किये बिना खेती नहीं चलती। सबसे पहले, स्पष्ट स्वामित्व के साथ जमीन खरीदना मुश्किल था और मिल भी जाए तो फिर बिजली, पानी की आपूर्ति, और कृषि विशेषज्ञता प्राप्त करने की समस्याएं थीं जो एक, दो एकड़ के भूखंड के लिए फायदेमंद नहीं हैं। ''इसलिए मुझे लगता है कि आगे बढ़ने का तरीका सामुदायिक खेती ही है; 100-200 लोग मिल कर 200 एकड़ जमीन खरीद के एक प्रबंधन समिति का गठन करें, जो पेड़ लगाने तथा अन्य मामलों पर निर्णय ले सकती है क्योंकि खेती में भी, कॉरपोरेट्स की तरह ही, पेशेवर प्रबंधन की आवश्यकता है।'' एक बार उत्पादन सार्थक हो गया तो बड़ी कंपनियां आएंगी और सीधे खरीद करेंगी ।

इस पर मयंक गांधी ने हस्तक्षेप करते हुए कहा कि अगर जमीन छोटी है - तो ऐसे में संसाधनों को साझा करना आवश्यक हो जाता है जो कि जैसे ट्रैक्टर, तकनीकी विशेषज्ञता, कच्चे माल आदि साझा करना। परली में एक खेत का औसत आकार 3 एकड़ है।

उन्हें आशंका है कि हाल के कृषि बिल छोटे किसानों पर प्रतिकूल प्रभाव डालेंगे, क्योंकि बड़े खाद्य कारखाने और डीलर, उत्पादकों के किसी बड़े निकाय के साथ व्यापार करना चाहेंगे न कि छोटे किसानों के साथ। सरकार कहती है कि FPO (किसान उत्पादक संगठन) बनाओ; चाहे उन्हें FPO कहें या सहकारिता, भविष्य सामुदायिक खेती का ही है। इसी वजह से टिम्बाडिया द्वारा, इस में रूचि रखने वाले लोगों को एक समूह में संगठित करने का प्रयास सराहनीय है।

एक सवाल के जवाब में उन लोगों का मार्गदर्शन करते हुए हुए, जिनके पैतृक गाँवों में कृषि भूमि खाली पड़ी है,टिम्बाडिया ने कहा कि जो लोग शहरों में रहते हैं अगर उनके पास खेतों की देखभाल की उचित व्यवस्था और नेटवर्क नहीं है तो, ''यह काम नहीं करेगा, क्योंकि पौधे और पेड़ जीवित चीजें हैं और उनकी देखभाल निहायत ही ज़रूरी है। जो लोग खेती करना चाहते हैं और साथ में शहर की जीवन शैली का आनंद भी उठाना चाहते हैं ... ये दोनों अपने आप साथ साथनहीं कर सकते।'' भारत में रहने का सबसे बड़ा फायदा यह है कि यहां कृषि विश्वविद्यालयों के माध्यम से पर्याप्त कृषि ज्ञान और विशेषज्ञता उपलब्ध है, लेकिन इस की कीमत को वहन करने के लिए सामूहिक रूप से काम करना होगा।

भूखंड उपलब्ध थे, ''और आप सस्ते में जमीन ले सकते हैं, गुजरात या पंजाब के विपरीत, महाराष्ट्र में, मुंबई से 100-150 किलोमीटर दूर, ₹12-15 लाख प्रति एकड़ में मिल जाएगी।यदि समान विचारधारा वाले लोगों का समूह, संयुक्त रूप से 50 करोड़ या अधिक रुपये का निवेश कर सके और सामुदायिक खेती करें तो कृषि तकनीकी के लिए वे भारत के सर्वश्रेष्ठ विशेषज्ञों की सेवाएं ले सकते हैं। लेकिन अगर आप, 500 किमी दूर जमीन के किसी भूखंड पर अकेले ही खेती कर उस के परिणाम चाहेंगे, तो ये संभव नहीं होगा। आप आम के पेड़ तो लगा सकते हैं, लेकिन आम नहीं आएंगे, सिर्फ पेड़ ही खड़े रह जाएंगे। संक्षेप में, सामुदायिक खेती आपके लिए, स्थानीय लोगों के लिए और राष्ट्र के लिए हितकर है।''

PDG राहुल टिम्बाडिया।

दिया और गहन प्रशिक्षण दिया गया। हालाँकि एक किसान को पेड़ उगाने के लिए किसी सबक की जरूरत नहीं है, वह आगे की कड़ी, प्रसंस्करण, मूल्य संवर्धन, विपणन करता है।

अब तक, परली में केवल दो किस्म - पपीता और ड्रमस्टिक ने फल देना शुरू कर दिया है। पपीते के फल की किस्म ऐसी है कि जहां पिछले साल इन किसानों को ₹10-15 प्रति किलो मिल रहा था, अब उन्हें ₹22-28 प्रति किलो मिल रहा है। कुछ किसान जो अब तक ₹10,000 कमा रहे थे, अब उन्हें ₹5 लाख की आय हो रही है; यह 50 गुना वृद्धि है। जब ऐसे किसानों को लोगों ने गर्व के साथ घूमते और दो पहिया वाहन ख़रीदते देखा तो बाकी लोग भी परिवर्तित हो गए।

रोटेरियन संदीप ओहरी ने, जिन्होंने वेबिनार संचालित किया, किसानों के दो वीडियो दिखाए जिन्होंने उनके ''अच्छे दिन'' का प्रमाण देते, संदीप गिट्टे, एक किसान ने कहा, ''मैंने एक एकड़ में पपीते के 900 पेड़ लगाए हैं और प्रति एकड़ मुझे 40 से 50 टन पपीते मिलते हैं। और पपीते पर हुए खर्च को निकालने के बाद मेरी आय पहले के ₹20,000 से बढ़कर ₹3 से 4 लाख हो गई है।

अंतर-फसल प्रणाली में और पपीते के पेड़ों के नीचे, मैंने तरबूज उगाये हैं, और एक एकड़ से, खर्च निकालने के बाद, मुझे लगभग ₹1.25 लाख की आय होती है। पहले मैं कपास की खेती कर रहा था, और मैंने सपने में भी नहीं सोचा था कि मैं खेती के जरिए इतना पैसा कमा सकता हूं। टिन की छत वाले घर से अब मैं एक कंक्रीट के घर में चला गया हूँ ... मेरे अच्छे दिन तो आ गए!''

मुंबई और पुणे पलायन कर गए लोग लौटने लगे जहां वे मजदूरी करते थे। उन्होंने कहा कि अगर हम अपने स्वच्छ और हरे-भरे गाँव में खूबसूरत ज़िंदगी गुजार सकते हैं तो मुंबई के स्लम्स में एक गटर जैसी ज़िंदगी क्यों जीयें।

मयंक गांधी

एक अन्य किसान, मुक्तेश्वर ने कहा कि पहले पानी लेने के लिए उन्हें 400-500 फीट नीचे जाना पड़ता था ''लेकिन अब हमें 50-70 फीट पर पानी मिलता है और हम बहुत खुश हैं।''

आइए, पीडीजी राहुल टिम्बाडिया का कृषि के लिए जो जुनून है, विशेष रूप से सामुदायिक

खेती के लिए, उस पर आगे बढ़ते हैं, इस वेबिनार को आयोजित करने का मूल कारण, रोटेरियन और अन्य संपन्न शहरी लोगों को बताना था कि अगर उनमें खेती के लिए जोश है और वे अपनी जमीन या खेत से दूर रहते हैं, तो सामुदायिक खेती के माध्यम से ही वे इसे एक लाभप्रद व्यवसाय बना सकते हैं।

जब संयोजक लोहरी ने टिम्बाडिया से पूछा कि उनके जैसे विज्ञान और कानून में स्नातक व्यक्ति का रुझान खेती की ओर किस तरह हुआ तो उन्होंने कहा कि कृषि में वह शुरू से ही रुचि रखते थे। 1987 में उन्होंने पहली बार कुछ कृषि भूमि खरीदी थी। वह इज़राइल और जापान का दौरा करने गए और जापान में ''जब मैंने पैकेज्ड खाद्य उत्पादों और उनकी मैकडैमिया नट्स की सुविधाएं देखीं, तो मुझे लगा कि कृषि और कृषि-पर्यटन में भविष्य उज्जवल है।'' इस प्रकार कृषि में उनके प्रयोग शुरू हुए।

आप आराम से 100 किलो भिन्डी ले सकते हैं। लेकिन फिर इस 100 किलो भिंडी का आप क्या करोगे, खा तो आप सकते नहीं, अगर आप इसे दोस्तों को देना चाहते हैं, तो आप कितनी बार दे सकते हैं?

PDG राहुल टिम्बाडिया

1991 में उन्होंने होटल उद्योग में प्रवेश किया था और ''आज हमारे पास तीन होटल, पाँच रेस्तरां और कुछ कृषि गतिविधियाँ हैं, जहाँ मुझे बहुत ज़्यादा सफलता तो नहीं मिली, लेकिन आज भी मेरा दृढ़ विश्वास है कि कृषि और कृषि-पर्यटन उद्योग में बहुत अधिक संभावनाएं हैं।''

बाद में ड्रिप सिंचाई का अध्ययन करने वो इज़राइल गए और वापस आ कर टमाटर और भिन्डी लगाए। उन्होंने हाइड्रोपोनिक्स सिस्टम (एक प्रकार की बागवानी जहां पौधों को मिट्टी के बिना उगाया जाता है, पानी के घोल में पोषक खनिज तत्वों का उपयोग करके) के माध्यम से टमाटर उगाया और बढ़िया फसल प्राप्त की। लेकिन 1989-90 में टमाटर की कीमत ₹3 प्रति किलोग्राम पहुँच गई थी, ''तो वास्तव में यह फायदेमंद नहीं था।''

इसके बाद वो मेहसाणा गए जहां उन्होंने यूकलिप्टस की खेती का अध्ययन किया और पपीता, सागौन और काजू के पौधे लगाए। यह बात 2005 की है, ''मुझे पपीते की फसल बढ़िया मिली, लेकिन 2005 में आई बाढ़ की वजह से मेरे खेत में पांच दिनों तक पानी भरा रहा और पपीते के सारे पेड़ मर गए। मैं बहुत हताश हुआ और मुझे लगा कि खेती करना मेरे

परली से एक कामियाब किसान।

किसानों के खुशनुमा चेहरे देखे जो ड्रमस्टिक, पपीता, केला और इतने सारे फल उगा रहे थे। अंत में, मुझे यकीन हो गया कि खेती में पैसा है।''

टिम्बाडिया ने कहा कि 1997 से वो देख रहे हैं कि पर्यटन उद्योग में बहुत पैसा है और अब उन्हें लगता है कि अगर कृषि-पर्यटन को भी बढ़ावा दिया जाए तो हमारे किसान लाभान्वित हो सकते हैं।

बाद में, *रोटरी न्यूज़* से बात करते हुए, टिंबडिया ने बताया कि बीड में जो काम ग्लोबल परली ने किया है वह सामुदायिक खेती के अनुरूप है। ''गांधी ने किसानों को एकजुट किया और उन्हें सफलता दी, इसी तरह, अगर शहरी क्षेत्रों में संपन्न लोगों के अप्रयुक्त संसाधनों, जमीनों को विशेष रूप से खेती में परिवर्तित कर दिया जाए तो लाखों लोगों की हजारों एकड़ बंजर भूमि पर फलों से लदे पेड़ों के बागान में बदल सकते हैं। जिसके फलस्वरूप गरीब लोग, आदिवासी और गैर-आदिवासी, दोनों सम्पन्नता के साथ सुखी जीवन जी सकते हैं।''

टिम्बाडिया का कहना है, ''अगर हम देश भर में बड़े पैमाने पर पर्माकल्चर (टिकाऊ और आत्मनिर्भर कृषि पारिस्थितिकी तंत्र का विकास) कर सकें तो यह कृषि संकट से निपटने और लोगों को गरीबी से बाहर निकालने के स्थायी समाधानों में से एक हो सकता है। बीड में मयंक गांधी इसे पहले ही साबित कर चुके हैं और यह लाखों लोगों के लिए आशा की किरण बन सकता है।''

उन्होंने एक जादुई दीपक को छू लिया है और रोटरी जैसे संगठन जिसका असाधारण नेटवर्क के ज़रिये और जिसमें फोकस्ड और (मोटिवेशनल स्किल्स) प्रेरक कौशल वाले लोग मौजूद हैं, वे पूरे देश में परिवर्तन ला सकते हैं।

बस की बात नहीं है।'' लेकिन 2019-20 में जब उन्होंने काजू और सागौन के पेड़ लगाए तो उसके परिणाम अच्छे मिले। सागौन के पेड़ 35-40 फीट तक पहुँच गए और काजू की खेती ने भी बढ़िया फसल देना शुरू कर दिया था। काजू का एक पेड़ 32 किलो काजू (छिलके सहित) देता है। लेकिन वह उसके प्रसंस्करण और बिक्री के नेटवर्क में उलझ गए हैं ।

एक और उदाहरण देते हुए, टिम्बाडिया ने कहा कि भिंडी की पैदावार इतनी बढ़िया होती है कि अगर आपके पास जगह है तो आप आराम से 100 किलो भिन्डी ले सकते हैं। ''लेकिन फिर इस 100 किलो भिंडी का आप क्या करोगे, खा तो आप सकते नहीं, अगर आप इसे दोस्तों को देना चाहते हैं, तो उनके घरों तक ड्राइव कर इसे बांटना होगा और ये आप कितनी बार कर सकते हैं? थोड़ी देर बाद दोस्त ऊब जाएंगे और कहेंगे कि जब देखो तब यह आदमी हर समय भिन्डी बांटता रहता है!''

हताश टिंबडिया जब इस कशमकश से गुजर रहा था, ''एक मित्र ने मुझे मयंक गांधी के बारे में बताया जिसने बीड जिले के किसानों की मदद की है और आज उन्हें हर एकड़ से ₹4-6 लाख मिल रहे हैं। सच कहूं तो मुझे विश्वास ही नहीं हुआ था, इसलिए वहां जा कर अपनी आँखों से

मैंने सपने में भी नहीं सोचा था कि मैं खेती के जरिए इतना पैसा कमा सकता हूं। टिन की छत वाले घर से अब मैं एक कंक्रीट के घर में चला गया हूँ ... मेरे अच्छे दिन तो आ गए!

संदीप गिट्टे

परली से एक किसान

अधिक जानकारी *www.globalparli.org* परें।

चित्र सौजन्य: Global Parli

एस कृष्णप्रतीश द्वारा रूपरेखा

Rotary PEOPLE OF ACTION

रो ई मंडल 3070 के रोटेरियन एक रोटरेक्टर को महंगा लैपटॉप दिलवाने में मदद करते हैं

रशीदा भगत

यह एक ऐसी अद्भुत कहानी है जिसमें दोनों की प्रेसिडेंशियल थीम परिलक्षित होती हैं - पूर्व रो ई अध्यक्ष मार्क मलोनी *(रोटरी दुनिया को जोड़ती है) और वर्तमान* रो ई अध्यक्ष होल्गर नेक *(रोटरी अवसर प्रधान करती है)।* और रोटरी के युवा सदस्यों-रोटरेक्टर्स को यह साबित भी कर दिखाया - उनका पैतृक संगठन किस प्रकार विभिन्न तरीकों से उनकी मदद कर सकता है।

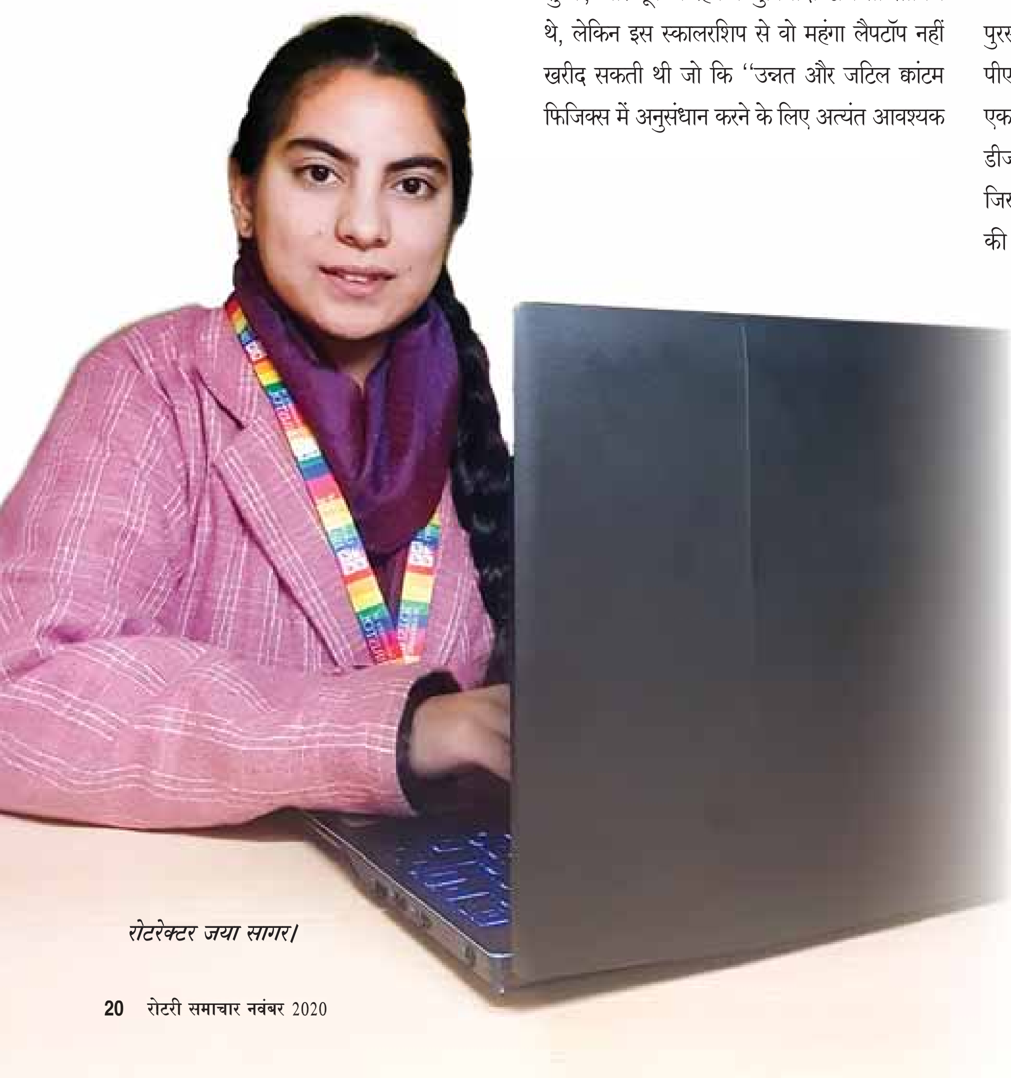

रोटरेक्टर जया सागर।

हाल ही में, रोटरी-रोटरेक्ट में तालमेल तब नज़र आया जब रोटरेक्ट क्लब मनाली की महासचिव, एनआईटी हमीरपुर से इलेक्ट्रॉनिक्स और कम्युनिकेशन इंजीनियरिंग में बी टेक, जया सागर को ब्रिटेन के ब्रिस्टल विश्वविद्यालय में, जुत्शी-स्मिथ स्कॉलर के अंतर्गत सीडीटी - क्वांटम फिजिक्स में पीएचडी करने के लिए छात्रवृत्ति मिली थी।

हालांकि उनकी छात्रवृत्ति में हवाई किराया, ट्यूशन शुल्क, और यूके में रहने के बुनियादी खर्च तो शामिल थे, लेकिन इस स्कालरशिप से वो महंगा लैपटॉप नहीं खरीद सकती थी जो कि ''उन्नत और जटिल क्वांटम फिजिक्स में अनुसंधान करने के लिए अत्यंत आवश्यक था, जिसके लिए गणितीय मॉडलिंग, सिमुलेशन और प्रोग्रामिंग क्षमता की बहुत अधिक आवश्यकता होती है।'' जया की मां एकल अभिभावक है, ''जो बड़ी मुश्किल से मेरे और मेरे भाई की शिक्षा का खर्च उठा रही हैं,'' और उनमें लगभग ₹1 लाख कीमत वाले इस लैपटॉप को खरीदने का सामर्थ्य नहीं था। विश्वविद्यालय के नियमों के अनुसार इस राशि के लिए जया को पार्ट टाइम काम करने की भी अनुमति नहीं थी।

अनुसंधान और नवाचार के लिए राष्ट्रीय युवा पुरस्कार प्राप्त जया, ब्रिस्टल विश्वविद्यालय से इस पीएचडी कार्यक्रम के लिए योग्यता प्राप्त करने वाली एकमात्र एशियाई है, जिसने रो ई मंडल 3070 के डीजी सी ए दविंदर सिंह को एक इ मेल भेजा था, जिसमें इस लैपटॉप के लिए वित्तीय मदद की अपील की गई थी। उसने लिखा था कि वह एक योग्य इंजीनियर है और उसने भारतीय रक्षा विभाग के लिए विभिन्न उपयोगी परियोजनाओं पर काम किया है, साथ ही 5 जी संचार, क्वांटम कंप्यूटिंग, सेब उत्पादक किसानों के लिए, हिमालय के क्षेत्रों में दूरदराज रहने वाले लोगों और विज्ञान में अन्य परियोजनाओं के लिए भी कार्य किया है।

रोटरेक्ट के मेल का जवाब देते हुए, डीजी सिंह ने उन्हें रोटरी क्लब मनाली के अध्यक्ष जीसी ठाकुर से संपर्क करने लिए कहा और उसकी अपील अन्य रोटेरियनों के साथ साझा की। राटरी क्लब मनाली और मंडल से अन्य रोटेरियनों, दोनों ने पैसे एकत्रित कर जया को भेज दिए गए। मंडल अध्यक्ष ने कहा की यदि ब्रिस्टल में जया को किसी प्रकार की सहायता की ज़रुरत पड़े तो वह उनके रोटरी मित्रों से संपर्क कर सकती है।

अपना पसंदीदा लैपटॉप खरीदने के बाद, जया कहती हैं कि इससे उन्हें ''अपने जटिल शोध कार्य और त्वरित परिणामों के प्रयोगों को जारी रखने के लिए उन्हें अधिक आत्मविश्वास और शक्ति मिली है। इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि जब उन्हें इस प्रतिष्ठित पीएचडी कार्यक्रम में प्रवेश मिला, तो मुझे पूरे भारत और विदेश से हजारों लोगों का अभिवादन और प्रशंसा पत्र मिले, ''लेकिन वो केवल रोटेरियन थे जिन्होंने मदद के लिए हाथ आगे बढ़ाया और मेरा मार्ग सुगम किया। आपकी मदद ने न केवल मेरी दक्षता बल्कि मेरे मनोबल में भी वृद्धि की है। इससे हमारे क्षेत्र के मेधावी छात्रों में आशा की किरण जगी है और अपने सपने पूरे करने के लिए वो अधिक लगन और निष्ठा से काम करेंगे क्योंकि वो जानते हैं कि उन्हें सहायता मिल जाएगी।''

15 सितंबर ब्रिस्टल पहुंची जया को, निर्धारित अवधि तक स्व-एकांत वास काटना था, लेकिन हाँ, वह अपनी पढ़ाई ऑनलाइन से शुरू कर सकती थी और 21 सितंबर से शुरू होने वाली कक्षाओं में भाग ले सकती थी। ''मौसम में बदलाव, ऊंचाई पर रहने और अलग तरह के भोजन की वजह से शुरू में बीमार रही थी लेकिन अब मैं ठीक हूँ और विश्वविद्यालय में व्यक्तिगत रूप से शामिल होने के लिए उत्साहित हूं।''

वो केवल रोटेरियन थे जिन्होंने मदद के लिए हाथ आगे बढ़ाया और मेरा मार्ग सुगम किया। आपकी मदद न केवल मेरी दक्षता बल्कि मेरे मनोबल में भी वृद्धि की है।

जैसा कि सिंह ने वादा किया था, रोटरी क्लब ऑफ ब्रिस्टल से उसे एक ईमेल भी मिला है और जल्द ही क्लब के सदस्यों के साथ जुड़ने की उम्मीद है।

जया ने कहा कि उनकी मां, लैपटॉप की खरीद में मदद के लिए रोटरी की बहुत आभारी थी, ये जानकर वो और भी खुश हुईं और उन्हें राहत मिली कि रो क्लब ब्रिस्टल के रोटेरियन उसके पास पहुंच गए थे। ''वह वास्तव में मेरे लिए बहुत चिंतित थी, क्योंकि मैं लंबे समय के लिए घर से बहुत दूर जा रही थी, लेकिन अब वह निश्चिन्त हैं।''

अपने मंडल में रोटरी और रोटरेक्टर क्लबों के मध्य पारस्परिक सामंजस्य के बारे में, डीजी सिंह का कहना था, ''हमारे मंडल के कुछ रोटरी क्लब सक्रिय रूप से रोटरी क्लब की गतिविधियों को लॉजिस्टिक और वित्तीय समर्थन दोनों माध्यम से सहयोग करते हैं। हमारे रोटेरियन नियमित रूप से सम्पूर्ण भारत से, मंडल में रोटरी के कार्यक्रमों में आये रोटरेक्टरस की यात्रा की व्यवस्था और मेजबानी करते हैं।''

सोने पे सुहागा हैं रोटरी क्लब मनाली और दोनों मंडल अध्यक्षों और सदस्यों के लिए जया की अंतिम पंक्तियाँ: ''पिछले साल जब मैं मनाली के रोटरेक्ट क्लब में शामिल हुई थी तो मुझे अंदाज़ा ही नहीं था कि यह मेरे जीवन में इतनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। धन्यवाद है, आपके अद्भुत नेतृत्व और आपकी मदद के लिए,'' वह कहती हैं। ■

डॉ महेश कोटबागी 2021-23 के लिए रो ई निदेशक चुने गए

टीम रोटरी न्यूज़

डॉ महेश कोटबागी, रोटरी क्लब पुणे स्पोर्ट्स सिटी, रोई मंडल 3131, को ज़ोन 4 और 7 के लिए 2021-23 का रो ई निदेशक चुना गया। कोटबागी एक पेशेवर अस्पताल प्रशासक है और पुणे, महाराष्ट्र में कोटबागी अस्पताल के अध्यक्ष है। वह चौथी पीढ़ी के चिकित्सक है; उनके दादा महात्मा गांधी के चिकित्सक थे। वह पुणे विश्वविद्यालय से स्त्री रोग विज्ञान पर अपनी थीसिस के लिए स्वर्ण पदक जीतकर स्नातकोत्तर हुए। 1991 में, उन्होंने 10 बिस्तरों वाले एक अस्पताल की स्थापना की थी, जो जल्द ही एक बहु-विशिष्ट अस्पताल में विकसित हो गया। उन्होंने एक कम लागत वाले डायलिसिस केंद्र की भी स्थापना की और वह स्वास्थ्य सेवा, आतिथ्य, पेट्रोलियम और निर्माण उद्योग में भी सम्मिलित है।

कोटबागी ने डीजी (2005-06), अंतर्राष्ट्रीय प्रशिक्षक नेता (2014), दक्षिण एशिया साक्षरता शिखर सम्मेलन - अध्यक्ष (2014), ARFC (2017-18) और GETS अध्यक्ष (2020) के रूप में सेवाएं दी। उन्हें रोई द्वारा सर्विस अबव सेल्फ अवॉर्ड और TRF द्वारा साइटैशन ऑफ मेरिटोरीअस सर्विस अवॉर्ड से सम्मानित किया गया है। उन्होंने लेसोथो, अफ्रीका के लिए रोटरी मेडिकल मिशन में स्वेच्छा से काम किया।

कोटबागी द्वारा संचालित चिमाय चेरिटेबल ट्रस्ट ग्रामीण बच्चों के लिए कम लागत वाली स्वास्थ्य सेवा और शिक्षा का समर्थन करती है। उन्होंने साक्षरता, पोलियो सर्जरी, रूबेला टीकाकरण, ग्रामीण महिलाओं के लिए गौ बैंक और विशेष बच्चों के कल्याण के लिए 100 से अधिक सेवा परियोजनाओं का नेतृत्व किया।

कोटबागी और उनकी पत्नी डॉ अमिता तीसरे दर्जे के मुख्य दानकर्ता और टीआरएफ के हितकारी हैं। ■

खसरा, रूबेला को 2023 तक मिटाया जा सकता है: जेकब जॉन

जयश्री

भारत से पोलियो-उन्मूलन करते हुए, हम अपने राष्ट्रीय धन के लिए प्रतिवर्ष ₹600 करोड़ का योगदान कर रहे हैं। यदि हम खसरा और रूबेला (MR) को मिटा देते हैं, हालाँकि मैंने स्वास्थ्य अर्थशास्त्र की गणना नहीं की है, फिर भी मैं आपको आश्वासन दे सकता हूँ, कि हमारा राष्ट्र स्वस्थ और धनवान बन जाएगा, वायरोलॉजिस्ट, डॉ जेकब जॉन ने कहा। रो ई मंडल 3232, द्वारा आयोजित मबैटल फॉर रूबेलाफनामक एक बहु-जिला आभासी संगोष्ठी में 30 रोटरी जिलों के रोटेरियन, इनर व्हील सदस्यों, रोटरेक्टरों और इंटरेक्टरों को संबोधित करते हुए, उन्होंने यह भी जोड़ा, स्वास्थ्य न केवल किसी राष्ट्र के विकास का एक उपाय है, बल्कि इसके विकास का एक ज़रिया भी है। डॉ जॉन, MR को खत्म करने के लिए सरकार के भारत विशेषज्ञ सलाहकार समूह (IEAG) के प्रमुख हैं, और रोटरी क्लब वेल्लोर, रो ई मंडल 3231 के सदस्य हैं।

रूबेला या जर्मन खसरा (जो इस नाम से भी जाना जाता है), हानिरहित है। लेकिन अगर गर्भवती महिला, अपनी गर्भावस्था की पहली तिमाही में इस वायरस का अनुबंध करती है, तो 90 प्रतिशत संभावना है कि बच्चा कई जन्मजात दोषों के साथ पैदा होगा।

रुबेला के खतरों पर टीएनपीएल पब्लिक स्कूल, करूर के एक इंटरेक्टर से एक सवाल के जवाब में डॉ जॉन ने समझाया कि रूबेला और ज़ीका केवल दो वायरस हैं, जो नाल को पार करेंगे और भ्रूण को संक्रमित करेंगे, जिसके परिणामस्वरूप भ्रूण के कान, आँख, हड्डियाँ और मज्जा प्रभावित होंगे। सुनाई न देने की समस्याएँ, मोतियाबिंद, हृदय की असामान्यता और मानसिक मंदता जैसे जन्म-दोषों के साथ बच्चे का जन्म होगा।

जीवन में जो सबसे बड़ी खुशी होती है, वह बच्चे और माता-पिता के लिए एक सदमा बन सकता है। पोलियो के विपरीत, यह कार्य आसान है, RIPE शेखर मेहता ने कहा। ''हमें बस इतना करना है कि जागरूकता पैदा करें और उन युवा लड़कियों की पहचान करें जिन्हें टीका नहीं लगाया गया है।'' इस कार्यक्रम में, दिवंगत PRID वाय पी दास को, कितनी गंभीरता से शामिल किया गया था, यह याद करते हुए उन्होंने कहा, MR का उन्मूलन हमारी तरफ़ से उन्हें सर्वश्रेष्ठ श्रद्धाँजलि होगी।''

डॉ जॉन ने कहा कि, MR उन्मूलन के लिए WHO की, 2023 की समय सीमा प्राप्त करने योग्य है, क्योंकि 95 प्रतिशत काम पहले ही हो चुका है। MR वैक्सीन, रूटीन यूनिवर्सल इम्यूनाइज़ेशन प्रोग्राम (UIP) का हिस्सा है। यदि सभी रोटरी जिले अपने क्षेत्रीय इलाकों में नियमित टीका-करण के लिए सामाजिक गतिशीलता को बढ़ाते हैं, तो हम तीन साल में इस बीमारी को मिटा सकते हैं।

रूबेला के खिलाफ़ लड़ाई पर एक वेबिनार।

श्रीलंका ने पहले ही MR को मिटा दिया है, उन्होंने कहा, ''हम इस द्वीप देश से सीख सकते हैं।'' अगर ठीक से संभाला जाए, तो MR वैक्सीन सुरक्षित है, डॉ जॉन ने कहा, ''उन रिपोर्टों को खारिज करते हुए कि MR वैक्सीन दिए जाने के बाद लोग बीमार पड़ गए थे। अगर आप बच्चों को पानी भरकर भी इंजेक्शन लगाएँगे, तो भी वे बीमार हो जाएँगे। MR के टीके कभी भी बीमारियों का कारण नहीं बनेंगे। हाँ, बच्चे को कुछ दिनों के लिए हल्का बुखार हो सकता है, क्योंकि यह वैक्सीन के प्रति शरीर की स्वाभाविक प्रतिक्रिया है।''

इस बैठक में, रोटरी को रुबेला उन्मूलन के लिए, रोटेरियन के अंदर जागरूकता फैलाने की आवश्यकता पर जोर दिया गया, जैसा कि पोलियो उन्मूलन के लिए किया गया था, यह PRID पी टी प्रभाकर ने कहा, जिन्होंने इस संगोष्ठी को संचालित किया। उन्होंने कहा कि RIDE महेश कोटबागी ने इसमें भाग लेकर, वैश्विक अनुदान के माध्यम से 100,000 ग्रामीण लड़कियों के लिए खसरा टीकाकरण करवाया है।

INPPC के अध्यक्ष और IEAG दीपक कपूर ने, 2023 तक MR उन्मूलन के लिए विस्तृत रोटरी कार्य-योजना को समझाते हुए कहा, कि प्रभाकर को रूबेला उन्मूलन पर काम करने में, ''उनकी पत्नी नलिनी का बहुत बड़ा सहयोग प्राप्त हुआ है।''

खसरा और रूबेला जैसी बीमारियों के खिलाफ टीके कभी-कभी सरकारी भंडारण और पीएचसी में खराब हो जाते हैं, जबकि 90,000 लोग, ज्यादातर बच्चे, हर साल खसरे से मर जाते हैं। हजारों शीशियों को नष्ट किया जा रहा है, क्योंकि उनकी समाप्ति की तारीखें बीत चुकी हैं। उन्होंने कहा कि समुदाय से पर्याप्त माँग नहीं है।

कपूर ने डॉ जॉन की पहल को याद किया, जिनके कारण कार्यक्रम में रोटरी की भागीदारी हुई। उन्होंने कहा, ''मुझे याद है कि उन्होंने पिछले रो ई अध्यक्षों राजेंद्र साबू, कल्याण बेनर्जी, पिछले निर्देशक सुशील गुप्ता और मुझे विश्वास दिलाया था, कि MR रोटरी के लिए बिलकुल उचित है। पोलियो के खिलाफ लड़ाई में रोटरी की सक्रिय भूमिका की चरम मान्यता को देखते हुए, यह कार्यक्रम अपने 3,400 से अधिक रोटरी क्लबों और 150,000 रोटेरियन के साथ बिलकुल उपयुक्त होगा।''

RIPE शेखर मेहता

जब रोटरी ने, तत्कालीन केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री जे पी नड्डा को इस कार्य योजना का प्रस्ताव दिया, तो उन्होंने इसका स्वागत किया था। 6 दिसंबर, 2017 को, MR पर विशेष ध्यान देने के साथ, मिशन 'इन्द्रधनुष' या नियमित टीकाकरण को बढ़ावा देने के लिए स्वास्थ्य मंत्रालय और रोटरी के बीच एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए थे। संचालन में सरकार की सहायता करना और मूल रूप से लोगों के आंदोलन को बढ़ावा देने में मदद करना, ''हमने इस प्रस्ताव को रखा। हम निश्चित थे, कि सरकार द्वारा इस वैक्सीन को लगाने की जगह, अगर जनता इसकी खुद माँग करे, तो यह कार्यक्रम अधिक सफल होगा।''

लड़ाई के खिलाफ रोटरी की संरचना

भारत में रो ई की 'राष्ट्रीय पोलियोप्लस समिति' के दो कार्य हैं - यह सुनिश्चित करना कि भारत पोलियो मुक्त रहे और MR का मुकाबला करे। INPPC में प्रत्येक रोटरी जिले में एक मंडल समन्वयक (DC) है। नलिनी प्रभाकर रो ई मंडल 3232 में DC हैं। DC को मंडलों में रोटरी क्लबों के प्रयासों का समन्वय करने के लिए रोटेरियंस, उनके जीवनसाथी, रोटरेक्टर्स और इंटरेक्टर्स की एक समिति गठित करनी चाहिए।

रोटेरियन, जिला मुख्य चिकित्सा अधिकारी (CMO) या टीकाकरण अधिकारी का दौरा कर सकते हैं, PHC की एक सूची प्राप्त कर सकते हैं, जोकि MR टीकाकरण करते हैं और यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि कार्य निर्दिष्ट दिनों में किया जाए। रोटेरियन जाँच कर सकते हैं कि क्या केंद्रों में वैक्सीन और इसकी प्रभावकारिता का पर्याप्त भंडार है।

लक्ष्य तांत्रिक रूप से करीब था, परंतु समय सीमा पहले ही बीत चुकी, क्योंकि कोविद महामारी की वजह से, देश भर के टीकाकरण में 30 प्रतिशत की गिरावट आई है। ''लेकिन प्रक्रिया फिर से शुरू हो गई है। यह समय, एक बार फिर से हमारे कंधों को पहियों में डालने का है। आप पोलियो उन्मूलन से इतिहास रचने की कगार पर हैं, और अब MR की बारी है,'' कपूर ने आग्रह किया।

खुला घर

DGE एन श्रीधर , रो ई मंडल 3232, जानना चाहते थे कि क्या NID पर, मौखिक पोलियो वैक्सीन और इंजेक्टेबल MR टीकाकरण, एक साथ किया जा सकता है। डॉ जॉन ने कहा कि MR इंजेक्शन वैक्सीन के साथ-साथ, मौखिक पोलियो वैक्सीन एक ही दिन दिया जा सकता है, लेकिन पोलियो NID के साथ नहीं जोड़ा जा सकता, क्योंकि MR वैक्सीन एक नियमित तरीके से दिया जाना चाहिए।

नलिनी ने कहा, ''हमारी वकालत लड़कियों तक पहुँचनी चाहिए, जब तक कि उनकी गर्भ-धारण की उम्र नहीं हो जाती। अब भी कई माता-पिता और लड़कियों को इसकी जानकारी नहीं है। यह एक बार का टीका है जिसे लड़कियों को दिया जाना चाहिए, इससे पहले की वे अपना पहला गर्भ धारण करें।'' उन्होंने रोटेरियंस से कॉलेजों का दौरा करने और लड़कियों के बीच जागरूकता पैदा करने का आग्रह किया। प्रभाकर ने सुझाव दिया कि मैरिज हॉल को दुल्हन से रूबेला प्रमाणपत्र दिखाने पर जोर देना चाहिए। ''यह प्रथा दक्षिण भारत के कई मैरिज हॉल में प्रचलन में है।''

किंग्स इंस्टीट्यूट के वायरोलॉजी विभाग की उप निदेशक डॉ. नलिनी राममूर्ति ने रूबेला और इसके दुर्बल प्रभाव के बारे में बताया। DG एस मुत्तुपलनियप्पन ने प्रतिभागियों का स्वागत किया।■

युवाओं को उत्कृष्टता के लिए प्रशिक्षित किया जाना चाहिए - RIPE शेखर मेहता

वी मुत्तुकुमारण

ऐसे समय में जब कोरोना वायरस महामारी और अन्य कारणों की वजह से हज़ारों लोग अपनी नौकरी को गंवा रहे हैं, तब विद्यार्थियों और युवाओं के कौशल को विकसित करने के लिए वेबिनार आयोजित करना वर्तमान समय की मांग एवं जरूरत है और यह राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुरूप है, आरआईपीई शेखर मेहता ने कहा। ''हमें उन्हें उनके कौशल का विकास करने और उनके काम में उत्कृष्टता लाने की जरूरत को समझाना होगा,'' स्कूल के विद्यार्थियों और युवा पेशेवरों के लिए रो ई मंडल 3131 के द्वारा आयोजित ऑनलाइन प्रोग्राम में उन्होंने उद्यम शिक्षा वेबिनार के अंतिम सत्र में कहा। विदाई सत्र की मेजबानी संयुक्त रूप से रो ई मंडल 3292 के रोटरी नेपाल साक्षरता मिशन द्वारा आयोजित की गई थी।

लेकिन भारत में श्रम के प्रति गरिमा की कमी एक बड़ी समस्या है जिसे रोटरी को हल करने की आवश्यकता है, उन्होंने कहा और गांधी जी के वचनों को उद्धृत किया जो कहते थे कि ''समाज में सभी की भूमिका (कार्यों का) का सम्मान किया जाना चाहिए।'' हमारी विशाल आबादी और कुशल सेवाओं की मांग के बावजूद भी केवल 5 प्रतिशत विद्यार्थी ही व्यावसायिक प्रशिक्षण प्राप्त करते हैं, जबकि एक छोटे लेकिन अधिक विकसित देश में 90 प्रतिशत विद्यार्थी कौशल प्रशिक्षण प्रापत करते हैं। जर्मनी जैसे विकसित देशों में भी 50 प्रतिशत से अधिक युवा व्यावसायिक प्रशिक्षण प्राप्त करते हैं, उन्होंने बताया। ''यदि मुझे एक एकाउंटेंट की आवश्यकता है तो इस जॉब के लिए 100 से अधिक आवेदनकर्ता हैं, लेकिन उनमें से 10 ने भी जॉब के लिए सही कौशल के साथ अपने ज्ञान को अपडेट नहीं किया होगा।'' खेद प्रकट करते हुए उन्होंने कहा।

मेहता ने बताया कि भारत में लघु उद्योगों के फलने-फूलने की बहुत संभावनाएं हैं, यदि युवाओं को सही कौशल प्रदान किया जाता है तो उन्हें इन नए कौशल का मूल्य समझना चाहिए ताकि भारत में लघु उद्योगों का विकास हो सके। ''हमारे भीतर उत्कृष्टता के प्रति एक जुनून होना चाहिए। रोटरी इंडिया ने 30,000 विधवाओं और एकल माताओं हेतु कौशल विकास कार्यक्रम शुरू किया है जिसमें वर्तमान में 6,000 महिलाएं अपोलो मेडस्किल्स द्वारा दो महीने के ऑनलाइन कोर्स के माध्यम से प्रशिक्षण प्राप्त कर रही हैं और फिर एक महीने का हैंडस-ऑन-प्रोग्राम के द्वारा प्रशिक्षित किया जाता है, जिसके बाद वे प्रशिक्षकों के साथ काम करेंगी।''

RIPE शेखर मेहता

रोटेरियन प्रदीप वाघ

उन्होंने कहा कि ''पीडीजी तीर्थमान साकिया और आईपीडीजी किरन लाल श्रेष्ठ के नेतृत्व में रोटरी नेपाल साक्षरता मिशन ने हिमालयी देश में पूर्ण साक्षरता हासिल करने की दिशा में एक लंबा सफर तय किया है,'' और उन्होंने यह भी बताया कि ''पीडीजी मोहम्मद फैज किदवई ने अकेले ही पकिस्तान में साक्षरता परियोजनाओं को शुरू किया।''

वेबिनार सिरीज़

जुलाई से रो ई मंडल 3131 के द्वारा 400 से अधिक प्रतिभागियों के साथ चार वेबिनार की मेजबानी की गई जिनमें रोटरेक्टर, इंटरेक्टर्स, और पूरे महाराष्ट्र के सरकारी स्कूलों के शिक्षक शामिल हुए थे। ''पश्चिमी देशों की स्कूल शिक्षा प्रणाली पर एक शोध से पता चलता है कि वे प्राथमिक विद्यालयों से ही उद्यम शिक्षा को महत्व देते हैं। हम उन कौशलों की पहचान करते हैं जिन्हें वेबिनार के द्वारा विद्यार्थियों में विकसित किया जा सकता है, जो आत्मविश्वास बढ़ाते हों, सूचना एकत्र करने की क्षमता का विकास करते हैं एवं निर्णय लेने की प्रक्रिया का विकास करते हैं। विद्यार्थियों में उद्यम क्षमता को विकसित करने के लिए शिक्षकों को उपयुक्त मॉड्यूल भी दिए जाते हैं।फ़्फ़रो ई मंडल 3131, अंतर्राष्टीय सेवा के मंडल संरक्षक प्रदीप वाघ ने बताया।

रोटरेक्टर और इंटरेक्टर के लिए एक प्रारंभिक बिजनेस प्लान प्रतियोगिता को आयोजित किया गया था, जिसमें ज्यूरी पैनल के द्वारा 23 प्रेजेण्टेशन प्राप्त किए गए। आरएसी महू समुदाय ने अपने शहर की योजना के लिए प्रमाणपत्र और ₹10,000 के नकद पुरस्कार सहित शीर्ष पुरस्कार जीता, 'कचरा मुक्त शहर' के प्रति एक पहल के लिए, जिसे चार सदस्यीय रोटारेक्ट टीम के द्वारा आयोजित किया गया था। रोटेरियन माला धीतल (RAC इटाहरी, रो ई मंडल 3292) और इंटरेक्टर स्वारली वैद्य (सिटी प्राइड जूनियर कालेज का इंटरेक्ट क्लब) दूसरे स्थान पर (उपविजेता) रहीं।

रो ई मंडल 3131-डीलीसीसी सुबोध मालपानी, पीडीजी प्रमोद जेजुरिकर, जिला साक्षरता की डायरेक्टर दीपा भागवत, आईपीडीजी धीरन दत्ता, रो ई मंडल 3040 के पीडीजी चंदू अग्रवाल तीर्थमान साकिया, किरन श्रेष्ठ और मोहम्मद किदवई और रोटेरियन नितिन नाइक, क्यूबिक टेक के चेयरमैन ने भाग लिया। ■

फाउंडेशन ट्रस्टी अध्यक्ष का संदेश

संस्थान के माध्यम से भविष्य में निवेश करें

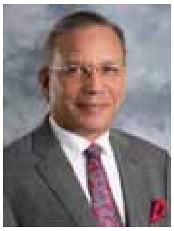

1870 के दशक की शुरुआत में, एक जीनियस ने तकनीक के माध्यम से जीवन को बेहतर बनाने के दृष्टिकोण को ध्यान में रखते हुए अपनी प्रयोगशाला में कड़ी मेहनत की। कई असफल प्रयासों के बाद, 1880 में थॉमस एडिसन ने एक नए प्रकाश बल्ब का आविष्कार किया जिसे बड़े पैमाने पर उत्पादित किया जा सकता था।

जब किसी ने उन्हें बताया कि सफलता पाने से पूर्व उनकी कोशिशें 10,000 बार असफल हुई है तो उन्होंने जवाब दिया कि उन्होंने केवल 10,000 तरीके खोजे है जिनसे बात नहीं बनी! एडिसन की तरह, द रोटरी फ़ाउंडेशन एक बेहतर दुनिया के दृष्टिकोण को ध्यान में रखते हुए कार्य करता है। और हम भी, असफलताओं के सामने दृढ़ और रचनात्मक बने रहते है।

इस वर्ष की शुरुआत में, हमारी महत्वपूर्ण पोलियो प्रतिरक्षण गतिविधियों को अस्थायी रूप से रोकना पड़ा ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि पोलियो उन्मूलन कार्यक्रम कोविड -19 महामारी को बढ़ाने में योगदान ना दे। और इसलिए बहुत से कमजोर देशों में पोलियो के खिलाफ लड़ाई में रोटरी द्वारा तैयार किए गए बुनियादी ढांचे का इस्तेमाल कोविड-19 से लड़ने में किया गया, जैसा कि हमने इबोला, पीले बुखार और एवियन फ्लू के प्रकोप के दौरान किया था।

शुक्र है, हमने जुलाई में अग्रिम पंक्ति के कार्यकर्ताओं और समुदायों की सुरक्षा के लिए सभी सावधानियाँ बरतते हुए, पोलियो प्रतिरक्षण गतिविधियों को फिर से शुरू किया। इन चुनौतीपूर्ण दिनों के दौरान, हमारा काम - संकट में लोगों तक पहुंचना - हमेशा की तरह नहीं रहा।

हमारे वैश्विक अनुदान मॉडल की सफलता अचूक है। 2013-14 में इसकी शुरूआत से, संस्थान ने 47 मिलियन डॉलर से अधिक के 868 अनुदान प्रदान किए। 2019-20 तक, स्वीकृत अनुदान की संख्या बढ़कर 1,350 हो गई, जिसकी कीमत 100 मिलियन डॉलर से अधिक थी। जहाँ अनुदानों की संख्या में 50 प्रतिशत और धनराशि में 123 प्रतिशत से अधिक की बढ़ोत्तरी हुई, वहीं इसके समतुल्य वार्षिक निधि योगदान में केवल 5 प्रतिशत की वृद्धि हुई, और यह चिंताजनक है।

जिन लोगों को हमारी ज़रूरत है, उन तक पहुंचने के लिए, हमारे संस्थान में जो प्यार है उसे फैलाने के लिए, हमें इस चुनौती का सामना करना होगा और अपनी धन की जरूरतों को पूरा करने के लिए मिलकर काम करना होगा। मदर टेरेसा ने एक बार कहा था कि यदि हम प्यार भरा संदेश सुनना चाहते है, तो हमें उसे दूसरों को भी भेजना होगा। दीपक को जलाए रखने के लिए हमें उसमें तेल डालते रहना पड़ता है। मुझे लगता है कि टीआरएफ दुनिया भर के समुदायों के बेहतर भविष्य में निवेश करने का सबसे अच्छा अवसर प्रदान करता है।

Ravi

के आर रवींद्रन

फाउंडेशन ट्रस्टी अध्यक्ष

अपरिचित स्थिति में

हांक सार्टिन

ताइवानी लोग अपने आतिथ्य-सत्कार एवं मित्रता पर गर्व करते हैं। जब आप 12 से 16 जून तक रोटरी इंटरनेशनल कन्वेंशन के लिए ताइपे गए हैं तब आपको वहां पर स्थानीय रोटेरियनों के साथ घुलने-मिलने के लिए निमंत्रण मिल सकता है। एक अच्छा प्रभाव बनाने एवं अनजाने में होने वाली गलतियों से बचने के लिए यहां कुछ शिष्टाचार सुझाव दिए गए हैं।

हालांकि हाथ मिला कर अभिवादन करना ताइवान के व्यावसायिक माहौल में प्रथागत हो गया है, पर फिर भी आप पारंपरिक अभिवादन के अन्य तरीकों का भी उपयोग कर सकते हैं, थोड़ा सा सिर झुका कर अभिवादन कर सकते हैं। बिजनेस कार्ड का आदान-प्रदान करना एक बहुत ही आम बात है। अपने कार्ड को दोनों हाथों से प्रस्तुत करना सुनिश्चित करें। जब आप किसी से कार्ड प्राप्त करें तो तुरंत ही आप इसे अपनी जेब में न डाल लें ब्लकि आप कार्ड को दोनों हाथों से पकड़कर कुछ क्षणों तक कार्ड को पढ़ें।

ताइवानी संस्कृति में भोजन को इतना महत्व दिया जाता है कि ताइवान में अभिवादन का एक आम तरीका ''ची बाओ ले मा?'' है, जिसका मतलब होता है कि ''क्या आपने खाना खा लिया?'' आपका स्वागत-सत्कार करते समय आपका मेजबान खाने के लिए आपकी प्लेट में कुछ खाना भी रख सकता है : जो कुछ भी आपको खाने के लिए पेश किया जाए, आप उसे खाएं।

ताइवान के लोग टोस्ट का आदान-प्रदान करने के प्रति उत्सुक होते हैं। आपके गिलास को दोनों हाथों से पकड़कर रखते हुए एक पारंपरिक टोस्ट दिया जाता है। अगर कोई गिलास लेकर हाथ में आए और आपको कहे ''गनबेई!'' या होडाला! , तो यह आपका पेय ''खत्म कर दें'' कहने के समान है। यदि आप शराब पीना नहीं पसंद करते हैं तो सॉफ्ट ड्रिंक या चाय के साथ अपना टोस्ट खाना आपके लिए पूरी तरह से ठीक है। आपके मेजबान चाहते हैं कि आपका स्वागत हो।

अधिक जानें और पंजीकरण करें **convention.rotary.org** *पर।*

2021 TAIPEI

कोविड हो या फिर मानसून की बाढ़, रोटरी क्लब बॉम्बे के रोटेरियनों ने दोनों चुनौतियों का डट कर किया सामना

रशीदा भगत

जब रोटेरियन किसी लक्ष्य पर आँख गड़ा लेते हैं तो उसे प्राप्त कर के ही छोड़ते हैं,चाहे कुछ भी हो जाए। यह एक बार फिर से साबित हो गया जब मंडल 3141 से रोटरी क्लब मुंबई के रोटेरियन, मुंबई के अन्य क्लबों के साथ मिल कर कोविड महामारी के बीच विषम परिस्थितियों के बावजूद उनके द्वारा शुरू किये गए विन्स (WinS) के एक विशाल प्रोजेक्ट को निष्पादित करने में जुटे थे।

2018 में मंडल 3141 की WinS कमेटी द्वारा इस योजना की भूमिका बना कर शुरू की गई परियोजना अपने आप में चुनौतियों से भरी थी - महाराष्ट्र के पालघर जिले में स्थानीय जिला परिषद स्तरीय 752 स्कूलों में हैंडवाश स्टेशन (HWS) स्थापित करना। ढाल नामक परियोजना के अंतर्गत लगाए जाने वाले हैंडवाश स्टेशनों की कुल 1,142 थी, और रोटरी क्लब बॉम्बे को 752 में से 600 स्कूलों का काम दिया गया था। इस विशिष्ट क्लब ने 264,465 डॉलर (₹1.93 करोड़) के वैश्विक अनुदान के माध्यम से इसकी शुरुआत

की और उन्होंने 775 हैंडवाश स्टेशन लगाने की प्रतिबद्धता जताई।

इस परियोजना में शामिल अन्य क्लब थे बॉम्बे सीकोस्ट, बॉम्बे वेस्ट, मुंबई घाटकोपर और मुंबई दिवास, रोटरी क्लब पालघर द्वारा इसके संचालन में प्रदान की गई अमूल्य लॉजिस्टिक सहायता सहित, रो ई मंडल 3141 से डीजी नॉमिनी संदीप अग्रवाला ने बताया। रो क्लब बॉम्बे द्वारा एकत्रित की गई ₹34.5 लाख की अतिरिक्त धन राशि सहित, परियोजना की कुल लागत ₹2.27 करोड़ से भी अधिक थी।

उन्होंने कहा कि जब जून 2020 में इस परियोजना का उदघाटन RIPE शेखर मेहता द्वारा करवाने की योजना बनाई गई थी, उस समय किसको मालूम था कि एक वायरस इस कार्यक्रम को चौपट कर के रख देगा जिसकी वजह से हैंडवाश स्टेशनों को बनाना और स्कूलों तक पहुंचाना मुश्किल हो जाएगा। जैसे जैसे कोविड के मामले बढ़ने लगे, इस परियोजना को पूरा करने में दिक्कतें बढ़ती चली गईं, ज़िला परिषदों के स्कूलों में हमारे और मजदूरों के आवागमन पर कई प्रकार के प्रतिबंध लगा दिए गए। लेकिन हमने आवश्यक अनुमति ले कर काम करना जारी रखा। लेकिन उसके बाद मानसून अपने साथ बाढ़ ले कर आ गया, जिस कारण हमारा काम और भी मुश्किल हो गया, उन्होंने बताया।

अग्रवाला बताते हैं कि इस परियोजना से पूर्व भी रो क्लब बॉम्बे की एक हस्ताक्षर परियोजना रही है - *जलजीवन*, जिसका उद्देश्य वंचितों को स्वच्छ व सुरक्षित पेयजल उपलब्ध करवाना है। इस परियोजना के अंतर्गत क्लब ने लगभग 50 गांवों में सेवा की है जिसमें स्वयं सहायता समूहों, पंचायतों आदि को वाटर एटीएम उपलब्ध करवाया गया है, जिसके माध्यम से उपभोक्ताओं को बहुत ही कम कीमत पर पानी दिया जाता है।

WinS की इस परियोजना का आरम्भ यूनिसेफ के सहयोग से किया गया था। सीएसआर फंड की मदद से ''उन्होंने करीब 2,000 जिला परिषद स्कूलों को पहले ही पूरा कर लिया था और 752 स्कूल बाकी रह गए थे। यहीं से हमारा मंडल और क्लब उनके साथ जुड़ गया।'' जब लागत का आकलन कर लिया तो यह निर्णय किया गया कि स्टेनलेस स्टील के हैंड वाश स्टेशन लगाना एक प्रकार से, ''स्कूल के लिए समस्या पैदा करना है जिन्हें वास्तव में स्टील से बने वाश स्टेशन की आवश्यकता नहीं है, जो असामाजिक तत्वों द्वारा चोरी कर जिसे खुले बाजार में किलो के हिसाब से बेचा जा सकता है। इसलिए कम कीमत वाले हलके और सस्ते विकल्प की खोज शुरू हुई, डीजीएन ने कहा।''

> जैसे जैसे कोविड के मामले बढ़ने लगे, इस परियोजना को पूरा करने में दिक्कतें बढ़ती चली गईं, लेकिन हमने आवश्यक अनुमति ले कर काम करना जारी रखा। लेकिन उसके बाद मानसून अपने साथ बाढ़ ले कर आ गया, जिस कारण हमारा काम और भी मुश्किल हो गया।
>
> **DGN संदीप अग्रवाला**
> रो ई मंडल 3141

हैंड वाश सुविधा का परिवहन करने के लिए एक नाव का उपयोग किया गया।

रोटरी क्लब बॉम्बे के पूर्व अध्यक्ष विजय जटिया ने बताया कि 2019-20 की WinS समिति ने हार्डवेयर आपूर्तिकर्ता, नीलकमल इंडस्ट्रीज और क्रियान्वयन के लिए उनके स्थानीय भागीदार सेक्रेड के साथ मिलकर सभी बाधाओं को दूर कर परियोजना को पूरा किया। ''इस महामारी के बाद, जब स्कूल फिर से खुलेंगे तो यूनिसेफ द्वारा निर्मित पाठ्यक्रम के तहत हम न सिर्फ शिक्षकों और अभिभावकों को HWS की ज़रुरत और इसके फायदे बताएँगे बल्कि प्रशिक्षित भी करेंगे साथ ही किशोर लड़कियों को मासिक धर्म स्वच्छता प्रबंधन (MHM) के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी भी देंगे।''

अग्रवाला कहते हैं, ''यूनिसेफ और हमारे अन्य सहयोगियों से सलाह के बाद, HWS

को विशेष रूप से रो क्लब बॉम्बे ने नीलकमल के परामर्श से ऐसा डिजाइन किया, जो हल्का और टिकाऊ था, जिसकी लागत अप्रत्याशित रूप से कम थी और जिसे चोरी नहीं किया जा सकता था। साथ ही इसका एर्गोनॉमिक डिज़ाइन उपभोक्ताओं के बीच अत्यधिक सफल और लोकप्रिय सिद्ध हुआ।''

यूनीसेफ के अनुसार प्रत्येक 25 छात्र पर एक नल होना चाहिए और हमने इससे से भी कम छात्रों पर ये सुनिश्चित किया है। चूँकि कई स्कूलों में स्वच्छ जल की उपलब्धता नहीं है इसलिए परियोजना के इस भाग को भी रोटरियनों ने अपनी योजना में समाहित कर लिया है।

WinS का मूल उद्देश्य अंततः आचरण में परिवर्तन लाना है, स्कूल बंद होने के बावजूद ''हम स्कूल प्रबंधन की समितियों को हाथ धोने का प्रशिक्षण दे रहे हैं और इसके लाभ बता रहे हैं और इसकी वकालत कर रहे हैं। इन विद्यालयों के प्रधानाचार्य हमारे साथ सहमति दिखाते हुएपूरे उत्साह के साथ क्थ्ड स्थापित करने के उत्सुक दिखे और इसके लिए उन्होंने इन दिनों में भी अपने विद्यालय खोले और यहां तक कि अपने शिक्षकों को संघटित कर प्रशिक्षण दिलवाया,'' वे कहते हैं।

वास्तव में स्टील से बने वाश स्टेशन की आवश्यकता नहीं है, जो असामाजिक तत्वों द्वारा चोरी कर जिसे खुले बाजार में किलो के हिसाब से बेचा जा सकता है। इसलिए कम कीमत वाले हलके और सस्ते विकल्प की खोज शुरू हुई, डीजीएन ने कहा।

DGN संदीप अग्रवाला

जटिया कहते हैं कि इस परियोजना की कल्पना कोविड के हालात से पहले ही की गई थी, लेकिन अब कोरोना महामारी के मद्देनजर इस परियोजना को विशेष महत्व मिल गया है क्योंकि लगातार हाथ धोते रहना प्रत्येक के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। इस परियोजना को पूरा करने का श्रेय वह रोटेरियन सिद्धार्थ भीमराजका, अभिनव अग्रवाला और अभिषेक सराफ को देते हैं और रोटरी क्लब पालघर को HWS और पानी की टंकियों के परिवहन के लिए प्रदान की गई सहायता और एनजीओ सेक्रेड को उन्हें लगाने के लिए धन्यवाद दिया।

अग्रवाला कहते हैं कि रोटेरियन दिलीप पीरामल और वीआईपी इंडस्ट्रीज के उदार योगदान का विशेष रूप से उल्लेख करना चाहूंगा क्योंकि विभिन्न चुनौतियों के कारण एक अन्य क्लब को सौंपे गए 70 से अधिक स्कूलों का काम पूरा नहीं हुआ था जो आज इनकी बदौलत ही संभव हो सका।

रोटरी क्लब बॉम्बे ने अब अपने *जल जीवन* कार्यक्रम के तहत उन 146 स्कूलों में स्वच्छ पेयजल उपलब्ध कराने का निर्णय किया है जिनमें छात्रों की संख्या 60 से अधिक है। डीजीएन ने कहा कि परियोजना की लागत लगभग ₹1.5 करोड़ है और समीक्षा के लिए एक ग्लोबल ग्रांट आवेदन भेजा है।

नीलकमल इंडस्ट्रीज़ के परामर्श से रोटरी क्लब बॉम्बे द्वारा एक विशेष रूप से डिज़ाइन किया गया हैंड वाश स्टेशन।

₹4.5 करोड़ के कोविड राहत कार्य

रोटरी क्लब कलकत्ता के बाद, भारत में दूसरे सबसे पुराने और 91-वर्षीय रो क्लब मुंबई के रोटेरियनों ने स्वयं ही ₹4.5 करोड़ से अधिक की राशि एकत्रित कर कोविड-संबंधी राहत निष्पादित किये हैं।

- 58 वेंटिलेटर महाराष्ट्र सरकार और केंद्रीय अस्पताल, धनबाद द्वारा संचालित अस्पतालों को दिए।

हम न सिर्फ शिक्षकों और अभिभावकों को HWS की ज़रुरत और इसके फायदे बताएँगे बल्कि प्रशिक्षित भी करेंगे साथ ही किशोर लड़कियों को मासिक धर्म स्वच्छता प्रबंधन (MHM) के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी भी देंगे।

विजय जटिया
पूर्व अध्यक्ष, रोटरी क्लब बॉम्बे

- 11 डायलिसिस मशीनें पालघर और मुंबई के अस्पतालों को ।
- 5 एचएफएनसी (हाई फ्लो नेसल कैनुला) मशीनें विभिन्न अस्पतालों में प्रदत्त करवाई गई। 20 अतिरिक्त एचएफएनसी के लिए एक वैश्विक अनुदान अपेक्षित है।
- 11,250 पीपीई किट मुंबई, चेन्नई और बेंगलुरु के विभिन्न अस्पतालों में दी गईं।
- क्लब के रोटेरियन्स द्वारा बेघर, प्रवासी मजदूरों, कामगारों और दैनिक वेतन भोगियों के लिए रोटरियनों द्वारा संचालित रसोई से उन की देखरेख में रोज़ाना 30,000 भोजन पर 16.5 लाख से अधिक व्यक्तियों को (सितंबर तक) भोजन के पैकेट मुफ्त वितरित किये गए।
- विभिन्न पुलिस स्टेशनों पर कॉफी-चाय की वेंडिंग मशीन लगाना।
- ₹20 लाख के 2,500 कोविड-19 परीक्षण किट टाटा मेमोरियल अस्पताल को उपलब्ध कराये।
- क्लब ने 600 से अधिक प्रशिक्षित स्वयंसेवकों और कॉउंसलर्स के साथ मिल कर एक अखिल भारतीय टोल-फ्री हेल्पलाइन स्थापित की है जो स्वास्थ्य परामर्श के लिए या मानसिक रूप से व्यथित फोन करने वालों की मदद करती है। यह हेल्पलाइन उन लोगों की भी मदद करने का प्रयास करती है जिन्हें भारत में कहीं भी शुष्क राशन की आवश्यकता है।
- मालेगांव (मुंबई से 4 घंटे दूर) में फंसे कर्फ्यूग्रस्त लोगों के लिए तैयार भोजन उपमा और पोहा के 40,000 पैकेट की आपूर्ति। इसके अलावा, 25 मई तक
- 1,000 मुफ्त भोजन के पैकेट भी वितरित किए गए।
- 1,150 - N95 श्वसन मास्क, संपर्क रहित डिजिटल थर्मामीटर और ऑक्सीमीटर पल्स मशीनों का मुंबई के विभिन्न अस्पतालों में वितरण।
- मुंबई के स्लम्स में सामुदायिक शौचालयों का रखरखाव करने वाले स्वच्छता कार्यकर्ताओं को चेहरा ढकने के लिए 1,200 फेस शील्ड्स और विभिन्न संस्थाओं को 5,000 हैंड सैनेटाईज़र्स बांटे। ■

एक रोटेरियन डॉक्टर कोरोना वायरस के साथ अपने संघर्ष को याद करते हैं

राजन देशपांडे

डॉ राजन देशपांडे अपने क्लिनिक में एक बच्चे की जांच करते हुए।

कोविड-संबंधी जटिलताओं के कारण हमारे प्रिय PRID वाय पी दास और मेरे बैचमेट, रो ई मंडल 2980 के PDG वी नागराज, दोनों के अकस्मात निधन से हुए नुकसान के अनुभव के बाद, मैं कोरोनावायरस के साथ अपने संघर्ष को साझा कर रहा हूं। और मैं आप सभी से बहुत, बहुत सावधान रहने और अपने एवं अपने परिवार की रक्षा करने का आग्रह करता हूं।

6 अप्रैल को, ऑल इंडिया रेडियो पर, मैंने कोरोना और बच्चों के बारे में बात की थी, जहाँ मैंने कहा था कि यह वायरस हमारे साथ लंबे समय तक रहने वाला है।

मैंने एक करीबी दोस्त, MBBS से एक सहपाठी को खो दिया जो एक साधारण व्यक्ति थे और उन्होंने किराए के एक छोटे से भवन में अपनी प्रैक्टिस जारी रखी और इस वायरस की चपेट में आ गए, सबसे अच्छा इलाज मिलने के बावजूद भी समस्याएं कम नहीं हुई और उनकी मृत्यु हो गई।

अपने भयावह सपने में भी, मैंने कभी नहीं सोचा था कि मैं कोरोनावायरस का शिकार हो जाऊंगा। एक वरिष्ठ बाल रोग विशेषज्ञ होने के नाते, मैंने सामाजिक दूरी रखने, पूरी पीपीई किट पहनने और नियमित रूप से हाथ को स्वच्छ रखने जैसी सभी सावधानियों का पालन किया। मैं बच्चों के माता-पिता को 2 मीटर दूर रखने और बच्चों की जांच करने को लेकर सावधान रहता था।

मेरी उम्र के कारण मेरे परिवार के सदस्यों द्वारा मुझे अस्पताल जाने से मना किया गया। लेकिन मैं गया, बहुत ही सावधानी के साथ ओपीडी में केवल चार घंटे बिताए।

8 जुलाई की शाम को, मेरी पत्नी ने गले में खराश की शिकायत की। अगली सुबह, उसको बुखार चढ़ने लगा और उसका बदन दर्द करने लगा। हमने तुरंत ही उसकी जांच करवाई; वह पाज़िटिव निकली। दो दिन बाद, मुझमें सिरदर्द और बदन दर्द के हल्के लक्षण विकसित हुए। मैं भी पाज़िटिव निकला और हमें अपने स्वयं के अस्पताल, एक प्राधिकृत कोविड अस्पताल में भर्ती कराया गया। अपने 42 साल के करियर में मैंने किसी भी बीमारी के लिए एक दिन की भी छुट्टी नहीं ली थी, और मैं अपने युवा डॉक्टरों और नर्सों से कहता था कि युवाओं को कभी भी

बीमार नहीं पड़ना चाहिए। मुझे देखो, मैं कभी छुट्टी नहीं लेता, यह मेरे शब्द हुआ करते थे।

मेरे बेटे डॉ कावन, जो एक बाल रोग विशेषज्ञ है और मेरी बहू डॉ पल्लवी, जो एक नैदानिक सूक्ष्म जीवविज्ञानी है, के द्वारा त्वरित रूप से मेरा उपचार शुरू किया गया। वे बारीकी से हमारे स्वास्थ्य की निगरानी कर रहे थे और हुबली एवं बैंगलोर के कोविड विशेषज्ञों के साथ इलाज के तरीके पर चर्चा कर रहे थे। ऐसा लग रहा था जैसे हम दोनों को हल्का संक्रमण था और हम सभी सामान्य नैदानिक और प्रयोगशाला मानदंडों की वजह से ठीक हो रहे थे। चूंकि हम दोनों में सुधार हो रहा था, इसलिए हमें 10वें दिन छुट्टी दी जानी थी।

अगली सुबह मेरी पत्नी बहुत खुश थी कि हम घर वापस जा रहे थे। लेकिन नियति को कुछ और ही मंजूर था। उस दिन दोपहर को, मैं बहुत थका हुआ और बात करने या चलने में असमर्थ महसूस कर रहा था। मुझमें ऑक्सीजन की कमी होना शुरू हो गई और मैं सांस लेने में असमर्थ हो गया। मेरे बेटे ने तुरंत एचआरसीटी स्कैन, और ईसीजी के लिए अपॉइंटमेंट लिया। स्कैन सेंटर पर, मैं स्कैन मशीन तक कुछ कदम भी नहीं चल पा रहा था, और साँस लेना मुश्किल होता जा रहा था।

छाती के सीटी स्कैन और प्रयोगशाला के मानदंडों ने परिवर्तन दिखाते हुए अवलोकन एवं आगे के उपचार हेतु हुबली के एक उच्च केंद्र में प्रवेश लेने का समर्थन किया। उसी शाम मेरी पत्नी और मैं हमारे ही अस्पताल से निकले; उसे घर छोड़ दिया गया और मैंने अपने दोनों पोते/पोतियों को द्वार पर बुलाया। मेरी बहू के साथ उन्होंने दूर से ही मुझे अलविदा कहा। अंदर ही अंदर मैं यह सोच रहा था कि क्या मैं उन्हें आखिरी बार देख रहा हूँ।

मेरी और जांच की गई, मुझे विभिन्न दवाएं दी गई और निरंतर ऑक्सीजन पर रखा गया और बड़ी ही सतर्कता के साथ मेरी निगरानी की गई। तीन दिनों के बाद मुझमें ऑक्सीजन की और कमी हो गई और मुझे डर था कि कहीं मुझे आईसीयू में स्थानांतरित न होना पड़े और मैंने प्रार्थना की कि मुझे वेंटिलेटर पर नहीं रखा जाना चाहिए।

कोरोना महामारी को गंभीरता से लें

अपने आप को सुरक्षित रखें और आभासी बैठकों का चयन करें और अनावश्यक व्यक्तिगत बैठकों से बचें।

कभी भी मास्क पहनना न भूलें और दूसरे लोग जो आपसे बात कर रहे हो उन्हें भी मास्क पहनकर अपना मुंह और नाक ढंकने की याद दिलाएं।

शिष्टाचार भरी मुलाकातों से बचें

याद रखें वो एकमात्र व्यक्ति जो आपकी मदद कर सकता है वह आप खुद हैं।

कोविड उपचार में उपयोग की जाने वाली कुछ दवाइयाँ प्राप्त करना मुश्किल था और वे आसानी से उपलब्ध भी नहीं थी। हालात अधिक बिगड़ने के अनुमान में, मेरे बेटे ने प्रति इंजेक्शन के लिए ₹40,000 देकर उन्हें खरीदा था। बढ़ती हुई मात्रा के साथ ऑक्सीजन देना जारी रखा गया।

चिकित्सकों, पल्मोनोलॉजिस्ट और गहन चिकित्सकों की पूरी टीम ने कोविड विशेषज्ञों के साथ चर्चा की और मुझे प्लाज्मा थेरेपी देने का फैसला किया। दो कोविड विशेषज्ञों ने मुझे समझाया कि इससे जटिलताएं उत्पन्न नहीं होंगी और मैं अगले ही दिन बेहतर महसूस करूंगा।

प्लाज्मा हासिल किया गया और मेरे अंदर डाला गया। जैसा कि सलाहकारों ने कहा था, प्लाज्मा ने वाकई में बहुत बदलाव लाया! मेरी ऑक्सीजन स्तर के साथ ही मेरे मानदंडों में सुधार होने लगा। लेकिन शुरुआती 3- 4 दिन मेरे लिए दुःस्वप्न की तरह थे। यह समझना मुश्किल था कि मैं किस दिशा की ओर अग्रसर था; जहाँ एक ओर मैं सकारात्मक रहने की कोशिश कर रहा था, वहीं दूसरी ओर नकारात्मक

विचार मुझपर हावी हो रहे थे क्योंकि मेरी उम्र और सह-रुग्णता मेरे पक्ष में नहीं थी। इसके अलावा, चूंकि मैं स्वयं एक डॉक्टर हूँ, तो बहुत ही खराब परिदृश्य और जटिलताएं मेरे दिमाग से खेलती रहीं। लेकिन ईश्वर की कृपा से मुझमें सुधार होने लगा।

मैं उस भले मानुष को तो नहीं जानता जिसने अपना प्लाज्मा दान किया था; लेकिन मैं वास्तव में उनका आभारी हूं। इस दुनिया में वाकई में भले लोग मौजूद है। उन्हें मेरा दिल से आभार है।

चूंकि मुझमें सुधार हो रहा था, मैंने उल्टे होकर पेट के बल सोना, अपना श्वसन व्यायाम और औसतन छह मिनट की पैदल यात्रा करना और नियमित रूप से अपने ऑक्सीजन के स्तर की जाँच करना जारी रखा, क्योंकि यह वायरस वास्तव में फेफड़ों पर हमला करता है, और ज्यादातर समस्याएं इसके इर्द-गिर्द ही घूमती है।

समय पर उपचार, अच्छे समर्पित डॉक्टर और चिकित्सा कर्मचारी, निरंतर निगरानी के साथ सही समय पर सही जांच और दवाइयाँ, ये सभी बहुत महत्वपूर्ण है। रोगी के लिए डॉक्टरों और अस्पताल पर विश्वास करना और उनके निर्देशों का ठीक से पालन करना महत्वपूर्ण है। मैं धन्य हूँ कि मैं हुबली के बेहतरीन डॉक्टरों की टीम की निगरानी में था जिन्होंने बहुत अच्छे से मेरा ख्याल रखा।

मेरा वजन 7-8 किलो घट गया और मैं काफी कमजोर महसूस कर रहा था। परामर्शदाताओं ने मुझे दवाओं, नियमित श्वास व्यायामों और प्राणायाम के साथ-साथ पौष्टिक आहार लेते रहने की सलाह दी।

मैं भाग्यशाली था कि मैं मौत के मुंह से बचकर वापस लौट पाया। कुछ ऐसे लोग है जो वेंटीलेटर पर आईसीयू में रहे और ठीक होकर वापस आ गए। उनके लिए मैं कहूंगा कि वे मौत के मुंह में जाकर लौटे है। मेरे माता-पिता नहीं है, लेकिन उनका आशीर्वाद मेरे साथ जरूर था। मुझे लगता है मैं निश्चित रूप से परिवार, दोस्तों, रिश्तेदारों और मेरे मरीजों की शुभकामनाओं की वजह से ही बच पाया हूँ।

मेरा बेटा कवान और उसकी पत्नी, जिसे मैं अपनी दूसरी बेटी मानता हूँ, ने बहुत मेहनत की और मुझे एक नई बहुमूल्य ज़िंदगी प्रदान की।

मुझे लगता है कि यह मेरा दूसरा जीवन है जिसने मुझे कुछ सबक सिखाए है; जीवन में उचित प्राथमिकताएं रखों, अपना ध्यान रखों, अपने आप को थोड़ा समय दो, अपने परिवार की परवाह न करते हुए लगातार काम करते रहने का कोई अर्थ नहीं है, अपने परिवार के साथ अच्छा वक्त बिताएं और अपने शौक पूरा करें। अपने सपनों को पूरा करें।

इसलिए, भले ही सामाजिक मानदंड शिथिल हो रहे हों, आप उतना ही सतर्क, सावधान और एहतियात के साथ रहें जैसे कि यह एक आपातकालीन स्थिति है, क्योंकि यह वास्तव में है। सुरक्षित रहें, केवल तभी बाहर जाएं जब बहुत आवश्यक हो, और बिना किसी चूक के सभी सावधानियों का पालन करें। अत्यधिक सावधानी बरतें।

सेवा करना सीखें लेकिन साथ ही अपने आप को पहचानें और अपने परिवार के लिए जिएं और इस दुनिया को बिना किसी पछतावे और अपने सपनों को अधूरा न छोड़ते हुए अलविदा कहें।

लेखक रो ई मंडल 3170 के एक पीडीजी है।

Rotary PEOPLE OF ACTION

रो ई मंडल 3190 ने किया कोविड एम्बुलेंस ड्राइवरों, पैरामेडिक्स का सम्मान

टीम रोटरी न्यूज़

रोटरी सिद्दरबेटटा, प्रायोजन क्लबों में से एक, एम्बुलेंस विशेष स्टाफ को सम्मानित करते हुए।

रो ई मंडल 3190 ने कर्नाटक में कोविड संकट के दौरान 250 एम्बुलेंस ड्राइवरों और पैरामेडिक्स को उनकी सेवा हेतु सम्मानित किया। जिले की रोग निवारण एवं उपचार टीम ने पाया कि इस क्षेत्र में 65 कोविड एम्बुलेंस काम कर रहे थे और सभी ड्राइवरों को ₹1,000 के चेक के साथ-साथ 'वारियर ऑन व्हील्स' के प्रशस्ति पत्र सौंपने का फैसला किया। लगभग 33 क्लबों ने इसके लिए ₹375,000 जुटाए और प्रत्येक क्लब ने अपने-अपने क्षेत्रों में इन वारियर ऑन व्हील्स को सम्मानित किया। ■

पीडीजीयों को श्रद्धांजली

मंडल गवर्नर्स सामुदायिक सेवा परियोजनाओं को लागू करने में एक शक्तिशाली ताकत के रूप से रोटरी के विकास में योगदान करते हैं। जिन पीडीजी यों का निधन हुवा है उनके परिवारों के प्रति हमारी संवेदना।

वी नागराज
(1998-99)
रो ई मंडल 2981

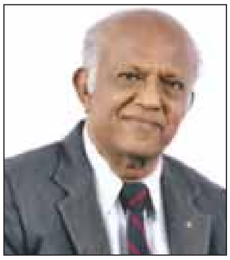

अन्नामलै मुत्तुरामन
(1992-93)
रो ई मंडल 3000

जी जया राव
(1983-84)
रो ई मंडल 3020

सुरेश कास्लीवाल
(1984-85)
रो ई मंडल 3040

शरद पातक
(1999-2000)
रो ई मंडल 3040

नरेशचन्द जैन
(2003-04)
रो ई मंडल 3040

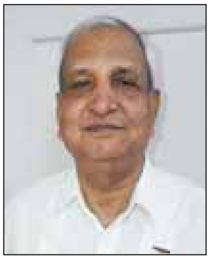

डॉ सतपाल सिंगला
(1992-93)
रो ई मंडल 3090

यु सूर्य प्रकाश भट
(2003-04)
रो ई मंडल 3181

एम रंगस्वामी अयर
(1988-89)
रो ई मंडल 3211

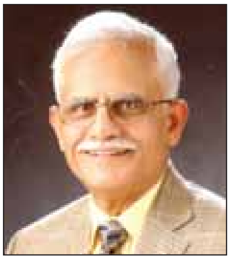

रंगस्वामी राजा रामकृष्णन
(1986-87)
रो ई मंडल 3232

डॉ डी के गुप्ता
(1980-81)
रो ई मंडल 3261

नारायण नायक
(2016-17)
रो ई मंडल 3262

अजय कुमार दत्ता
(1985-86)
रो ई मंडल 3291

RIPE मेहता ने भारतीय रोटेरियनों से अफ्रीका में और अधिक परियोजनाएँ करने का आग्रह किया

वी मुत्तुकुमारन

अगले दो वर्षों में, भारत भर के रोटरी क्लबों को, भारत के बाहर अपनी वैश्विक अनुदान परियोजनाओं का, कम से कम पाँच प्रतिशत करने के लिए कहा गया है और इसका एक बड़ा हिस्सा अफ्रीका में आएगा,'' RIPE शेखर मेहता ने कहा। दक्षिण अफ्रीका सरकार के साथ साझेदारी में, 'रोटेरियंस फ़ॉर फैमिली हेल्थ एंड एड्स प्रिवेंशन' (RFHA), साउथ अफ्रीका के रोटेरियंस द्वारा होस्ट किए गए, 'रोटरी फैमिली हेल्थ डेज़' (RFHD) पर एक वेबिनार में बोलते हुए उन्होंने कहा कि अगले साल ''रो ई के रूप में कार्यभार संभालने के बाद,GG परियोजनाओं का कम से कम 10 प्रतिशत देश के बाहर किया जाएगा।''

मेहता ने कहा कि रोटरी, अपनी सरकार, NGO और कॉरपोरेट्स के साथ मिलकर, दक्षिण अफ्रीका में एक बड़ी भूमिका निभाने के लिए तैयार है। RFHA ने पिछले कुछ वर्षों में स्वास्थ्य विभाग के साथ जो साझेदारी की है, उसको भी उन्होंने महत्वपूर्ण बताया। ''दुर्भाग्य से, इस वर्ष, हम RFHD के इवेंट्स को आयोजित नहीं कर पाएँगे, क्योंकि हम सबसे बड़ी स्वास्थ्य समस्या से जूझ रहे हैं, जिसने मानव जाति को पीड़ित किया है। कोविद ने दुनिया को अपने घुटनों पर ला दिया है और हम वास्तव में नहीं जानते कि यह कब तक जारी रहेगा। जबकि हमारे कई स्वास्थ्य कार्यक्रम इससे बाधित हो रहे हैं, यह हमारे लिए अपनी रणनीतियों पर पुनर्विचार करने और अपनी कुल्हाड़ियों को तेज करने का समय है,'' उन्होंने कहा।

RFHD, RFHA का एक हस्ताक्षर कार्यक्रम है, जिसे अफ्रीका के नौ देशों में, प्रत्येक वर्ष अक्टूबर के दौरान आयोजित किया जाता है। तीन दिन के मुफ़्त स्वास्थ्य शिविरों में लोगों को, 'रोके जाने वाले रोगों' और एचआईवी/ एड्स की रोकथाम के लिए स्क्रीन किया जाता है तथा बच्चों को वायरस और संक्रमण से बचाने के लिए टीकाकरण किया जाता है। 2011 से, RFHA द्वारा सार्वजनिक-निजी भागीदारी मॉडल के माध्यम से पेश किए गए लगभग 11 मिलियन मुफ्त स्वास्थ्य शिविरों में 2.5 मिलियन से अधिक लोग लाभान्वित हुए हैं।

RFHA के संस्थापक, मैरियन बंच और इसके वर्तमान CEO, सू पगेट को, कार्यक्रम को मजबूती से आगे बढ़ाने के लिए बधाई दी। उन्होंने आगे यह भी कहा कि रोटरी केवल पोलियो को खत्म करने के लिए प्रतिबद्ध नहीं है, बल्कि यह कोविद, एचआईवी/एड्स और अन्य स्वास्थ्य मुद्दों से भी निपटेगी।

एक कॉर्पोरेट विरासत

पोलियो उन्मूलन, पिछले 35 वर्षों में रोटरी का कॉर्पोरेट कार्यक्रम रहा है। 125 देशों के, एक वर्ष में 350,000 मामलों से लेकर, इस वर्ष के, दो देशों में

रोटरी फैमिली हेल्थ डेज़ वेबिनार।

पोलियो से पीड़ित 150 बच्चों को मिलाकर, ''अब तक रोटरी ने पाँच मिलियन से अधिक बच्चों को, या तो मृत्यु या अपंग होने से बचाया है।'' अफ्रीका को नाइजीरिया के साथ पोलियो मुक्त घोषित किया जाना, एक प्रमुख मील का पत्थर है, जिसे WHO ने इस सितंबर प्रमाणित किया है। मेहता ने कहा कि पोलियो, दुनिया से लगभग समाप्त होने वाली दूसरी, वैक्सीन द्वारा रोके जाने वाली बीमारी है और इस काम में रोटरी न्यायसंगत रूप से गर्व कर सकती है।

भारत सरकार ने, पोलियो विरासत और जिलों में साक्षरता, जल और स्वच्छता के क्षेत्र में की जा रही कई सफल परियोजनाओं को देखते हुए, रोटरी को गंभीरता से लिया है। ''करीब 100 मिलियन बच्चे, रोटरी द्वारा डिजाइन किए गए ई-पाठ्यक्रम के माध्यम से सीख रहे हैं। लॉकडाउन के दौरान 12 टीवी चैनलों पर दिखाए जा रहे हैं। यह कार्यक्रम, हालात सामान्य होने के बाद 250 मिलियन बच्चों तक पहुँचाया जाएगा,'' उन्होंने बताया। भारत सरकार के साथ साझेदारी के बिना यह मिशन संभव नहीं हो पाता। रोटरी इंडिया का लक्ष्य, वर्तमान 76 प्रतिशत की तुलना में, भारत को 95 प्रतिशत से अधिक साक्षर बनाना है।

मिशन अफ्रीका

मेहता ने अफ्रीका के रोटरी क्लबों से, अपनी सदस्यता बढ़ाने के लिए आह्वान करते हुए कहा, ''इस क्षेत्र में विकास की बहुत संभावना है। हम जबरदस्त पहुँच, नेटवर्क, उत्कृष्ट विरासत और उत्साही रोटेरियंस की वजह से एक उत्कृष्ट संगठन हैं, जिसने पिछले 35 वर्षों में, पोलियो को समाप्त करने की अपनी प्रतिबद्धता से यह साबित किया है। RFHA, अफ्रीका में सार्थक काम कर रहा है, जिसे दक्षिण एशिया सहित दुनिया के अन्य हिस्सों में दोहराया जा सकता है।''

भारत में RFHD का आयोजन दो वर्षों के लिए किया गया था; अब इसे फिर शुरू किया जा सकता है और क्रमिक तरीके से नेपाल, पाकिस्तान, बाँग्लादेश और श्रीलंका ले जाया जा सकता है। रो ई ने दुनिया भर में, एक समय की आपदा प्रतिक्रिया निधि डॉलर 25,000, के अलावा कोविद परियोजनाओं के लिए, वैश्विक अनुदान के रूप में 20 मिलियन डॉलर की मंजूरी दी है। उन्होंने कहा कि भारतीय रोटेरियंस ने, ज़मीनी स्तर पर, कोविद केंद्रों की स्थापना, उपकरण-दान, पीपीई किट, मुखौटे और सैनिटाइज़र के लिए 30 मिलियन डॉलर की परियोजनाएँ की हैं। ''ऐसी कोई बीमारी नहीं है, जिसे हम दूर नहीं कर सकते और ऐसी कोई समस्या नहीं है, जिसका हम सामना नहीं कर सकते,'' उन्होंने कहा।

RFHD वेबिनार को संबोधित करते हुए, दक्षिण अफ्रीका के स्वास्थ्य मंत्री, डॉ ज़ेलिनी मैखिज़ ने कहा, ''रोटरी द्वारा यह स्वास्थ्य पहल, प्राथमिक स्वास्थ्य सेवा के लक्ष्यों को प्राप्त करती है। समुदायों को स्वास्थ्य देखभाल के लिए, एक सक्षम वातावरण के माध्यम से, मूल स्वास्थ्य देखभाल को अभ्यास में लाने का अवसर दिया जाता है।''

इस वर्ष के कार्यक्रम की समयबद्धता और अधिक नाजुक नहीं हो सकती है, उन्होंने कहा, ''हम कोविद की वृद्धि से बाहर निकलते हैं और सार्वभौमिक स्वास्थ्य कवरेज पर अपनी ऊर्जा को फिर से बढ़ाते हैं।'' वेबिनार में, स्वास्थ्य विशेषज्ञों और रोटेरियंस, जिनमें 'रोग नियंत्रण और रोकथाम केंद्र' के निदेशक डॉ जॉन ब्लैनफोर्ड, ग्लोबल रोटरी के CEO डॉ इयान बर्टन, 'परिवार स्वास्थ्य और एड्स रोकथाम' के लिए बनाए गए एक्शन ग्रुप के CEO, सू पगेट और उप स्वास्थ्य मंत्री, डॉ जो फ़ाहला सहित कई सरकारी अधिकारी शामिल हुए। ■

Rotary PEOPLE OF ACTION

पुणे पुलिस थानों में सैनिटाइज़र-टनल्स स्थापित किये गए

टीम रोटरी न्यूज़

रोटरी क्लब पुणे गणेशखिंद के अध्यक्ष राजेश जोशी एक पुलिस अधिकारी का अभिनंदन करते हुए।

अपने कोविद-राहत प्रयासों के भाग के रूप में, रोटरी क्लब पुणे, गणेशखिंद, रो ई मंडल 3131, ने शहर के चाकन और म्हालुंज पुलिस स्टेशनों को दो प्रक्षालक-सुरंगों (सैनिटाइज़र-टनल्स) का दान किया।

सैनिटाइजिंग सुविधाएँ, कर्मचारियों और आगंतुकों के लिए एक त्वचा के अनुकूल तरल-पदार्थ को पूर्ण शरीर पर छिड़काव करने की पेशकश करती हैं। एक औद्योगिक क्षेत्र के आसपास के क्षेत्र में स्थित, चाकन पुलिस स्टेशन में प्रतिदिन सैकड़ों आगंतुक आते हैं और इसमें 70 सदस्यीय पुलिस दल है। प्रत्येक सुरंग की कीमत ₹150,000 है।

कोटकर एनर्जी डायनेमिक्स, चाकन में एक स्थानीय कंपनी द्वारा निर्मित सुरंगों में, पॉलीविनाइल स्क्रीन से ढका हुआ, एक धातु से निर्मित ढाँचा होता है और ढाँचे के अंदर फव्वारे होते हैं। सुरंग में प्रवेश और निकास आसान तथा तेज़ है, क्योंकि स्क्रीन फ़ोल्डर प्लास्टिक से बने हैं। एक वरिष्ठ पुलिस अधिकारी ने कहा, ''यह रोटरी द्वारा किया गया, एक बहुत ही उपयोगी और विचारणीय दान है।''

क्लब ने महामारी के दौरान स्टेशनों पर पुलिस अधिकारियों को उनकी सेवा के लिए सम्मानित किया। क्लब के अध्यक्ष राजेश जोशी और उनकी पत्नी गौरी, कोटकर एनर्जी के प्रबंध निदेशक, अतुल कोटकर और उनकी पत्नी अर्चना इस कार्यक्रम में शामिल थे। ■

रोटरी का वैश्विक परिचालन 'बढ़िया' और वित्त 'मजबूत' स्थिति में है: जॉन ह्युको

वी मुत्तुकुमारण

रो ई मंडल 3232 द्वारा एक वेबिनार।

कोरोना से फैली निराशा और दुनिया के लिए की गई दुःखद भविष्यवाणियों के बीच, मैं उस उम्मीद की किरण को देख सकता हूँ जो रोटरी ने बाकी दुनिया को दिखायी है। रोटरी के वैश्विक परिचालन बढ़िया स्थिति में है और हमारे वित्त मजबूत है। हमारे 1.2 मिलियन रोटेरियनों ने आभासी प्रौद्योगिकियों को अपनाया है और वे सेवा परियोजनाओं, अनुदान संचयन समारोहों और फेलोशिप घटनाओं को करने के नए तरीकों पर प्रयोग कर रहे है। हमें विकास को बनाए रखने हेतु नए सदस्यों को नवीन क्लब अनुभव प्रदान करने के लिए नए सिरे से कुछ अलग हटकर सोचने की आवश्यकता है। रो ई के महासचिव जॉन ह्युको दुनिया में रोटरी की वर्तमान स्थिति पर रोटरी क्लब मद्रास, रो ई मंडल 3232, द्वारा आयोजित एक वेबिनार को संबोधित कर रहे थे।

लेकिन वह चिंता या चुनौतियों से जुड़े छह मुद्दों को हरी झंडी दिखाने के लिए तत्पर थे जिन्हें बहुत देर हो जाने से पहले तत्काल संबोधित करने की आवश्यकता थी। हमें रोटरेक्टरों को रोटरी के करीब लाने की आवश्यकता है क्योंकि वे हमारी भावी संपत्ति है। लेकिन वास्तविकता यह है कि 95 प्रतिशत रोटरेक्टर कभी भी रोटेरियन नहीं बनते। दूसरा, सदस्यता अवरोधन में, हम देखते है कि जो लोग रोटरी में 2-3 साल से है, उनकी रोटरी छोड़कर जाने की संभावना सबसे अधिक होती है। जहाँ भारत, कोरिया, ताइवान, अफ्रीका और पूर्वी यूरोप में विकास मजबूत है, वहीं अमेरीका, कनाडा, ऑस्ट्रेलिया और यूके में सदस्यता में सीधी गिरावट दर्ज की गई है, जहाँ रोटेरियनों की औसत आयु भी लगातार बढ़ रही है, उन्होंने कहा। तीसरा, रोटेरियनों को कोरोना के बाद की दुनिया में एक आभासी वातावरण में सामुदायिक परियोजनाओं को करने हेतु अपनी रचनात्मकता को उजागर करने की आवश्यकता है।

ह्युको ने कहा ऐसे समय में जब जीवन कठिन होता जा रहा है आभासी मंचों के माध्यम से अनुदान संचयन समारोहों को अनूठे ढंग से संचालित करने की आवश्यकता है और यहीं पर रोटरेक्टर अपने विचारों का योगदान दे सकते है। वर्तमान स्थिति की वजह से, कमजोर क्लबों के लिए अस्तित्व में बने रहना मुश्किल हो सकता है और इसलिए मजबूत, सुदृढ़ क्लबों को प्रौद्योगिकी और सलाहकार सेवाओं

के साथ उनकी मदद करनी चाहिए, उन्होंने कहा। आखिरकार, दुनिया को रोटरी की आवश्यकता पहले से कई अधिक है। यह हमारा रोटरी क्षण है क्योंकि कोविड हमारे लिए नए अवसर खोलेगा।

वैश्विक दृष्टिकोण

जनवरी और मार्च के बीच, मुझे महामारी पर आयोजित की गई कई कार्यशालाओं और सेमिनारों में आमंत्रित किया गया था और मुझे यह एहसास हुआ कि दुनिया इस संकट से निपटने और चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार नहीं है। दावोस फोरम में भाग लेने के तुरंत बाद, उन्होंने महसूस किया कि कोविड संकट जल्द ही समाप्त होने वाला नहीं है और एक नए आभासी वातावरण में अपने ऑपरेटिंग सिस्टम के समेकित पारगमन के माध्यम से हमें नए सामान्य के लिए तैयार करने हेतु मैंने महामारी प्रतिक्रिया कार्य बल की स्थापना की।

उन्होंने रोई कर्मचारियों -- रो ई मुख्यालय, इवेंसटन, में 575, और यूरोपीय संघ एवं दिल्ली में 200 - से आभासी कार्य के लिए सिस्टम तैयार करने के लिए कहा। पुणे, सिडनी, टोक्यो और ब्राजील में रोई का आईटी और बैक ऑफिस का काम ही किया जा रहा है।

1930 की महामंदी के ठीक तीन साल बाद रोटरी की सदस्यता में पांच प्रतिशत की सबसे बड़ी गिरावट आई। लेकिन स्पैनिश फ्लू (1918) से लेकर विश्व युद्धों और वैश्विक अर्थव्यवस्थाओं में वित्तीय संकट तक की बड़ी त्रासदियों के दौरान, सदस्यता में केवल 1-2 प्रतिशत की गिरावट आई। उन्होंने कहा, सदस्यता में केवल एक प्रतिशत की गिरावट से रोटरी को 800,000 डॉलर का वार्षिक नुकसान होगा और एक साल में पांच प्रतिशत नकारात्मक वृद्धि से 4 मिलियन डॉलर का नुकसान होगा। लेकिन रोटरी की वित्तीय स्थिति मजबूत है, जो इसे कोविड तूफान का सामना करने में सक्षम बनाएगा, उन्होंने आश्वासन दिया।

अब तक, संस्थान ने दुनिया भर में कोविड संबंधित परियोजनाओं और गतिविधियों को निष्पादित करने के लिए वैश्विक अनुदान, डीडीएफ और आपदा प्रतिक्रिया कोष के माध्यम से रोटरी क्लबों को 30 मिलियन डॉलर का वितरण किया है। उन्होंने कहा कि सबसे अधिक प्रभावित देशों में कोविड निगरानी और अनुबंध अनुरेखण के लिए पोलियो के बुनियादी ढांचे का उपयोग किया जा रहा है। पाकिस्तान और अफगानिस्तान (दोनों में इस वर्ष 125 मामले मिले) में पोलियो का टीकाकरण एक संक्षिप्त निलंबन के बाद फिर से शुरू हो गया, और स्वास्थ्य कार्यकर्ता कोविड के चलते पर्याप्त सावधानियाँ बरत रहे है।

रो ई महासचिव जॉन ह्युको।

विरासती परियोजनाएं

रोटरी क्लब मद्रास के अध्यक्ष कपिल एस चिताले ने लाल खसरा उन्मूलन कार्यक्रम को याद किया, जिसका बीड़ा क्लब ने 1979 में रोटरी क्लब व्हिटबी, रोई मंडल 7070, कनाडा के साथ संयुक्त रूप से उठाया था। ''इस परियोजना की सफलता ने हमें 1985 में पोलियो उन्मूलन कार्यक्रम शुरू करने के लिए प्रभावित किया और तत्कालीन रोई अध्यक्ष मेट कैपरस ने 1987 में भारत के पोलियो प्लस अभियान के लिए 2.6 मिलियन डॉलर के अनुदान को मंजूरी दी।'' 1944 के बाद से, क्लब द्वारा अपनाई गई शहरी झुग्गी, रोटरी नगर, में बच्चों और महिलाओं को कंप्यूटर शिक्षा, सिलाई और अन्य कुशल नौकरियों में व्यावसायिक प्रशिक्षण की एक श्रृंखला प्रदान की जा रही है।

पिछले पांच वर्षों में 93 वर्षीय इस क्लब ने ग्रामीण क्षेत्रों में 1,500 शौचालयों का निर्माण किया है। चिताले ने कहा, 35-एकड़ बॉयज़ टाउन सोसाइटी में एक तकनीकी प्रशिक्षण केंद्र खोला जाएगा, जिसमें 200 विद्यार्थियों को नि:शुल्क भोजन तथा आवास और स्कूल की सुविधाओं का लाभ प्राप्त होगा। यह केंद्र 268,000 डॉलर की एक वैश्विक अनुदान परियोजना के तहत बनाया गया है। इतने वर्षों में, क्लब ने एक AKS दानकर्ता (पीडीजी जे बी कामदार और मरलीन) और 40 प्रमुख दानदाताओं के साथ टीआरएफ को 2 मिलियन डॉलर से अधिक का दान किया है। इसने 21 रोटरी क्लबों, 26 इंटरेक्ट क्लबों और 10 रोटरेक्ट क्लबों को प्रायोजित किया है।

इस अवसर पर पूर्व अध्यक्ष ए के गोपीनाथ, के. गोपाल रत्नम, क्लब सचिव पी बी प्रसाद और पीडीजी कामदार ने बातचीत की। इस आभासी बैठक में अमेरिका, ब्रिटेन, कनाडा, स्वीडन, ऑस्ट्रिया, फिलीपींस, मलेशिया, मिस्र, नाइजीरिया, इजरायल, पाकिस्तान और बांग्लादेश सहित 17 देशों के लगभग 275 रोटेरियन और 200 रोटरेक्टरों ने भाग लिया।

डीजी एस मुत्तुपलनियप्पन, डीजीई जे श्रीधर, पीआरआईडी पी टी प्रभाकर, पीआरआईडी मिकेल अहलबर्ग (स्वीडन), पीडीजी ISAK नज़र, पीडीजी बाबू पेरम, पीडीजी मंजीत साहनी, पीडीजी राजेंद्र राय, पीडीजी चंद्र बॉब, पीडीजी एस कृष्णावामी, पीडीजी पीटी रामकुमार, पीडीजी ओलिवन्नन, पीडीजी ए सुब्रमण्यम, और पीडीजी ए पी कन्ना शामिल हुए थे। ■

क्विलॉन रोटरी ने बीते 70 वर्षों का अवलोकन किया

हुमायूँ थाज

वर्ष 1949 में गर्मियों की एक सुहानी शाम में, इंडस्ट्री के कुछ प्रमुख दिग्गज और दर्जनों पेशेवर लोग एक विचार पर चर्चा करने के लिए कोल्लम में इकट्ठे हुए। देश को अभी-अभी ही ब्रिटिश शासन से आजादी मिली थी। जो लोग इकट्ठे हुए थे उनमें से कुछ इस सेवा और फैलोशिप संगठन के बारे में जानने आए थे जो कि पश्चिम में उत्पन्न हुआ था और अब यह भारत में लोकप्रियता प्राप्त कर रहा था। वे जानते थे कि रोटरी अस्पतालों और स्कूलों के निर्माण में मदद करने में शामिल था और संघर्षरत दुनिया में शांति स्थापित करने में मदद कर रहा था।

ये 'रोटेरियन' सच्चे, प्रामाणिक अखंड स्वभाव वाले चरित्रवान पुरूष थे जिन्होंने दोस्ती और भाइचारे के साथ समुदाय की सेवा करने की शपथ ली। ऐसा लगता था कि यह लोग दूसरों की मदद करके इसका आनंद ले रहे थे। इससे अच्छे लोग उनकी ओर आकर्षित हुए और क्विलॉन रोटरी क्लब का जन्म हुआ। विचार-विमर्श की बैठकों और उत्साहपूर्ण बातचीत के बाद, क्लब को आधिकारिक तौर से सितंबर 1949 में स्थापित किया गया था और JEA परेरा जो कि एक उद्योगपति थे एवं इंडिया रेयर अर्थ लिमिटेड के मालिक थे, वह क्लब के चार्टर अध्यक्ष बने।

क्लब के 70 वें वर्षगांठ समारोह में केरल के राज्यपाल आरिफ मोहम्मद खान के साथ रोटरी क्लब क्विलॉन के सदस्य PDG शिरीष केसवन।

जल्द ही, संस्थापक पिता ने बड़ी और चुनौतिपूर्ण परियोजनाओं को लेकर सामुदायिक सेवा शुरू कर दी और इन परियोजनाओं को उत्साहपूर्वक संपन्न किया। पहली परियोजना 1949 में पूरी की गई जिसका उद्देश्य क्विलॉन पुअर होम के लिए बस खरीदने के लिए क्विलॉन नगरपालिका को दान के लिए धन जुटाना था। एक ब्लड बैंक की स्थापना करने और एक इलेक्ट्रोकार्डियोग्राफ प्राप्त करने के लिए सरकारी जिला अस्पताल को धनराशि भी दान की गई थी।

वर्ष 1962 में, जिस समय राजा शंकरलिंगम क्लब के अध्यक्ष थे, तब उस समय कला, विज्ञान, उद्योग और कृषि की अखिल भारतीय प्रदर्शनी आयोजित की गई थी जिसमें केरल और मद्रस राज्य के तत्कालीन राज्यपाल वी.वी. गिरि, विष्णुराम मेधी, और राज्य के मुख्यमंत्री पट्टोम पिल्लई ने भाग लिया था। 40-दिवसीय प्रदर्शनी से जुटाई गई धनराशि को कोल्लम में लाल बहादुर स्टेडियम के निर्माण करने के लिए क्विलॉन नगरपालिका को दान कर दिया गया था। आज भी यह शहर का एक ऐतिहासिक प्रतीकहै।

1960 के दशक में कोल्लम के सरकारी जिला अस्पताल को अधिक

रोटरी क्लब क्विलॉन के अध्यक्ष ए अब्दुल रहिम (बीच में) और रोटेरियन सी वी बालाचन्द्रन (चरम दाएं) के साथ बॉलिउड अभिनेता दिलिप कुमार और अभिनेत्री वहिदा रहमान।

कमरों एवं बेड की सख्त जरूरत थी। उन दिनों में निजी स्वास्थ्य सेवाएं कम थीं और प्रारंभिक अवस्था में थी। क्लब ने मदद करने का निर्णय लिया। वे मिले और चर्चा की और एक योजना बनाई। एक दो-मंजिला रोटरी पे वार्ड जिसमें बाहर कमरों के सैट थे, उसका निर्माण किया गया और उसे अस्पताल प्रशासन को सौंप दिया गया। भारत के तत्कालीन राष्ट्रपति वीवी गिरि ने इस कॉम्प्लेक्स का अनावरण किय। कॉम्प्लेक्स से हर साल एक बड़ी धनराशि प्राप्त होती है जिसका उपयोग फिर से दवाईओं को खरीदने एवं रोटरी पे वार्ड के रखरखाव करने के लिए किया जाता है।

पहला इंटरेक्शन क्लब वर्ष 1963 में सेंट एलॉयसिअस हाईस्कूल में स्थापित किया गया था। 1967 में क्विलॉन इनर व्हील क्लब का गठन किया गया था। सन् 1966 में क्लब से पीर मोहम्मद को रो ई मंडल 320 (केरल, तमिलनाडु और सिलोन) का गवर्नर चुना गया था। इंडियन मेडिकल एसोसिएशन के सहयोग से, शहरों एवं उपनगरों की जरूरतों को पूरा करने के लिए कोल्लम में RMA ब्लड बैंक की स्थापना करने के उद्देश्य से 1999 में एक मैचिंग ग्रांट प्रोजेक्ट को पूरा किय गया था। बाद के वर्षों में, कई अन्य परियोजनाओं के लिए फिर मैचिंग ग्रांट परियोजनाओं को शुरू किया गया जिसमें एस एस समिथैया केंद्र के लिए किचन का निर्माण एवं पेयजल सुविधा शामिल है।

क्लब का लंबे समय से यह सपना था कि क्लब के पास बैठक और फैलोशिप के लिए खुद का परिसर हो। क्लब के द्वारा खरीदी गई जमीन पर एक दो-मंजिला इमारत का निर्माण किया गया था। इस उद्घाटन सन् 1994 में केरल के राज्यपाल बी. रचैया द्वारा किया गया था। सभागार के साथ एक रोटरी कम्युनिटी सेंटर भूतल पर प्रदान किया गया था। सन् 2011-12 में, कृष्णन जी. नायर की अध्यक्षता में क्लब को रो ई जोन 5 के लिए चेंज मेकर अवार्ड मिला, जिसमें उत्कृष्ट सेवा परियोजनाओं के लिए यह पुरस्कार था जिसमें 1,500 क्लब शामिल थे।

उसी वर्ष, पश्चिम अफ्रिका के एक देश गाम्बिया के तीन गांवों में सौर प्रकाश की सुविधा के लिए एक अंतर्राष्ट्रीय प्रोजक्ट शुरू किया गया और इसे सफलतापूर्वक पूरा किया गया। क्लब को ईआरईवाई का दर्जा भी मिला जिसका अर्थ है कि प्रत्येक सदस्य ने इस साल टीआरएफ के वाषिक फंड में कम से कम 25 का योगदान दिया है।

क्लब ने एक प्रमुख कोविड राहत प्रोजेक्ट शुरू किया है। जिला अस्पताल कोल्लम को फाउंडेशन के अनुदान की मदद से को ₹60 लाख की लागत के दो वेंटिलेटर एवं चार किडनी डायलिसिस मशीनों से लैस किया जाएगा। सभी सदस्य पॉल हैरिस के फैलो हैं, जिनमें से चार कई स्तरों पर प्रमुख डोनर हैं।क्लब ने छह जिला गवर्नर दिए हैं, डीजी शिरीष केसवन सहित। क्लब के पिछले गवर्नरों में एस पीर मुहम्मद, डाक्टर पॉल क्रिश्चियन, पी गोपीनाथ पिल्लई, प्रोफेसर के उदयकुमार और डॉक्टर जी ए जॉर्ज हैं।

फरवरी 2020 में क्लब ने केरल के राज्यपाल आरिफ मोहम्मद खाने के साथ मुख्य अतिथि के रूप में क्लब की 70 वीं वर्षगांठ मनाई। समय के साथ-साथ, यह क्लब अदम्य भावना के साथ अनगिनत परियोजनाओं को करना जारी रखेगा, इस प्रकार नए क्लबों और रोटेरियनों को प्रेरणा मिलेगी।

लेखक रोटरी क्लब क्विलॉन के सचिव हैं।

एक ज़ोमेटो डिलीवरी वुमन, एक माँ, एक नायिका

किरण ज़ेहरा

उमा देवी एक ऑर्डर डिलीवर करने की तैयारी कर रही थी जब उन्होंने मेरा इंटरव्यू कॉल अस्वीकार किया था और तुरंत एक व्हाट्सएप वॉयस नोट भेजा जिसमें रात 10 बजे उनकी शिफ्ट खत्म होने पर कॉल करने का अनुरोध किया गया था। सप्ताह में छह दिन, प्रतिदिन 10 घंटे के लिए, वह जोमेटो के लिए भोजन वितरित करती है। यह नौकरी उन्हें अपने बिलों का भुगतान करने, उनके बेटे की स्कूल फीस भरने और एक गरिमामय जीवन जीने में मदद करती है, वह आत्मविश्वास से कहती है।

लेकिन अपने बेटे के कॉलेज और क्रिकेट कोचिंग की फीस का भुगतान करने के लिए प्रति सप्ताह 4,000 के लिए 300 किमी की सवारी करना पर्याप्त नहीं था। कल तक मुझे नहीं पता था कि मैं उसकी फीस के लिए 28,000 की व्यवस्था कैसे करूंगी, लेकिन भगवान की कृपा से सब कुछ ठीक हो गया। और यह सब *chappatikings.com* के सीईओ, आरके राजा की वजह से संभव हुआ, जिन्होंने सोशल मीडिया पर मेरी कहानी साझा की।

राजा द्वारा लिंक्डइन पर एक वास्तविक जीवन की नायिका से मुलाकात के बारे में पोस्ट डालने के बाद से उनकी कहानी ने इंटरनेट पर तहलका मचा दिया। वह एक ऑर्डर लेने के लिए मेरी रसोई में आई और मैंने टिप्पणी की कि इतनी युवा होने के नाते उन्हें पहली मंजिल तक की सीढ़ियां चढ़ने पर थकान नहीं होनी चाहिए। दोनों ने बात करना शुरू किया और जब मुझे पता चला कि इतने संघर्ष की चिंता किए बिना वह अपने बेटे के जीवन को बेहतर बनाने के लिए कितनी मेहनत कर रही है, और पांच घंटे से भी कम समय की नींद ले रही है, तो मुझे बहुत धक्का लगा, वह कहते है। उनके पोस्ट के कुछ ही मिनटों के भीतर, उनके बेटे के कॉलेज का नामांकन शुल्क जमा हो गया था!

ज़ोमेटो का डिलीवरी पर्सन बनने का चुनाव करने पर, उमा कहती है, मैं अपने परिवार की

उमा देवी अपने बेटे के साथ।

मुझे कभी भी देर से डिलीवरी करने को लेकर शिकायत सुनने को नहीं मिली न किसी ने कभी ऑर्डर रद्द किया और न ही मैंने कभी भी खाना गिराया।

लोगों ने मुझे 'लेडी ज़ोमेटो' कहकर संबोधित किया, मेरे लिए ताली बजाई, मेरे साथ सेल्फी ली, और यह दर्शाया कि उन्हें कितना गर्व महसूस होता है जब उनका भोजन एक महिला डिलिवर करती है।

वित्तीय स्थिति के कारण केवल कक्षा तीन तक ही पढ़ सकी और जब मैंने दस साल पहले अपने पति को खो दिया तो मेरा जीवन पूरी तरह से हिल गया। मैं किन नौकरियों के लिए आवेदन कर सकती थी? सौभाग्य से उनके पति ने उन्हें दोपहिया वाहन चलाना सिखाया था और नौकरी के विवरण में कहा गया था जिसके पास बाइक हो वो आवेदन कर सकता है। इसलिए मैंने इसके लिए आवेदन दिया।

अपने पति की मृत्यु के तुरंत बाद उनका सामना जीवन की भयंकर सच्चाई से हुआ जब एक युवा विधवा के रूप में मैंने एक करीबी रिश्तेदार से वित्तीय सहायता मांगी, और उसने बदले में मुझसे दैहिक रूप से शोषित होने की मांग की... आप समझ सकते है मेरे कहने का अर्थ क्या है वह कहती हैं। उमा नौकरी पाने में सक्षम नहीं थी और घर का किराया और स्कूल की फीस भरने की जिम्मेदारी उनके सिर पर थी। वह आगे कहती है, ''मैं अपने बेटे के लिए संघर्ष करने के लिए तैयार थी लेकिन मैं अपने आत्मसम्मान और गरिमा के साथ समझौता नहीं कर सकती थी।''

उनकी पहली नौकरी 7,000 महीने के वेतन पर एक बैटरी डीलर के लिए नकद जमा करने की थी। वह उस नौकरी में करीब 10 साल तक रही और दो साल पहले एक बेहतर वेतन के लिए ज़ोमेटो में चली गई ताकि मैं अपने बेटे का एक अच्छे कॉलेज में दाखिला करा सकूँ, वह कहती है। इस नई नौकरी ने उन्हें न सिर्फ बेहतर वेतन दिया बल्कि एक पहचान भी दिलाई। उमा ज़ोमेटो की एक डायमंड स्टार कर्मचारी है। वह विनम्रतापूर्वक समझाती है, मुझे कभी भी देर से डिलीवरी करने को लेकर शिकायत सुनने को नहीं मिली न किसी ने कभी ऑर्डर रद्द किया और न ही मैंने कभी भी खाना गिराया।

ज़ोमेटो डेलिवरी वुमन।

लोगों ने उसे आश्चर्य, ताज्जुब और विस्मय के साथ देखा, वह कहती है, और कई बार उन्होंने मुझे 'लेडी ज़ोमेटो' कहकर संबोधित किया, मेरे लिए ताली बजाई, मेरे साथ सेल्फी ली, और यह दर्शाया कि उन्हें कितना गर्व महसूस होता है जब उनका भोजन एक महिला डिलिवर करती है। लेकिन इस नौकरी में उनका सबसे अच्छा पल वो था जब वह एक ट्रैफिक सिग्नल पर रुकी और बाइक पर बैठे कुछ नौजवानों ने मुझे सलामी दी। मुझे बहुत खुशी और गर्व महसूस हुआ, वह मुस्कुरायी।

जहाँ तक चेन्नई का सवाल है, वह कहती है, तो यहाँ पर कामकाजी महिलाओं का सम्मान किया जाता है और उनके साथ अच्छा व्यवहार किया जाता है; अगर हम गरिमापूर्ण तरीके से व्यवहार करते है तो कुछ भी गलत नहीं हो सकता। तो, क्या वह दिन के अंत तक थकावट महसूस करती है? बेशक, मुझे थकान महसूस होती है लेकिन एक माँ के रूप में अपने कर्तव्यों की तुलना में, मुझे लगता है कि इतनी यात्रा करना कोई समस्या नहीं है। मैं सुनिश्चित करती हूँ कि मुझे हर दिन पांच घंटे की नींद मिले और मैं समर्पण के साथ अपना काम करूँ। मैं चाहती हूँ कि मेरा बेटा मुझ पर गर्व करे। ■

Rotary PEOPLE OF ACTION

एक ग्रामीण समुदाय का परिवर्तन

ए अर्शिया

रोटरी क्लब मद्रास नॉर्थ तीन दशक से भी अधिक समय से नेपालयम गांव के सरकारी स्कूलों से जुड़ा हुआ है। ओल्ड नेपालयम गवर्नमेंट स्कूल की स्थापना के समय से ही, हमारे क्लब के सदस्यों ने स्कूल के निर्माण, बुनियादी ढांचे की स्थापना - कंप्यूटर लैब, पुस्तकालय, मनोरंजन केंद्र, शौचालयों के नवीनीकरण, छात्रों के लिए ट्यूशन का आयोजन, और अन्य कई ऐसी सेवाओं में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

हमारे वरिष्ठ सदस्यों ने हमेशा वर्षों से स्कूल और छात्रों के कल्याण में विशेष रुचि ली है, जिसमें सदस्यों का स्वतंत्रता दिवस, गणतंत्र दिवस और त्योहारों जैसे सभी प्रमुख अवसरों पर स्कूल का दौरा किया जाना, छात्रों और शिक्षकों के साथ समय बिताना शामिल है।

पिछले साल अगस्त में, हमारी टीम ने इस स्कूल का दौरा करने के साथ सुब्बारेड्डीपलायम स्थित एक अन्य सरकारी स्कूल का भी दौरा किया। हमने एक करियर मार्गदर्शन सत्र, साइकोमेट्रिक टेस्ट और छात्रों के मूल्यांकन को आयोजित करने के लिए कॉलेज देखो संगठन के साथ साझेदारी की। इसके बाद कक्षा 10 के छात्रों के साथ 1-1 परामर्श सत्र भी आयोजित किया गया। कॉलेज देखो टीम ने डॉ एमजीआर जानकी कॉलेज के स्वयंसेवकों को प्रशिक्षित किया, जो मनोविज्ञान में डिग्री हासिल कर रहे थे, और उन्होंने छात्रों के साथ इन परामर्श सत्रों के संचालन में हमारा समर्थन किया। यह रोटेरियनों और छात्रों दोनों के लिए... उनके व्यक्तित्व के गुणों, रुचियों और कैरियर आकांक्षाओं की पहचान करने का एक अद्भुत अनुभव था। कई छात्रों ने अपना खुद का व्यवसाय स्थापित करने, सरकारी नौकरी करने, पुलिस बल में शामिल होने, इंजीनियरिंग और आर्ट्स में डिग्री हासिल करने, और तकनीकी

एक करियर मार्गदर्शन सत्र।

एवं अन्य विभिन्न पाठ्यक्रमों में डिप्लोमा करने में रुचि व्यक्त की।

इस प्रक्रिया के माध्यम से, उच्च शिक्षा के लिए नपालयम के तीन स्कूलों के 30 छात्रों की पहचान की गई। इस प्रक्रिया में स्कूल के प्रिंसिपल और शिक्षकों द्वारा साक्षात्कार, मूल्यांकन और सुझावों की एक श्रृंखला शामिल थी।

इनमें से हमारे क्लब ने ऐसे 11 छात्रों की सूची तैयार की है जो प्रतिभाशाली और उच्च अंक प्राप्त करने वाले है, और उनकी उच्च शिक्षा को प्रायोजित किया जाएगा।

कक्षा 10 तक पढ़ाई पूरी कर चुके पांच छात्रों को CPCL (चेन्नई पेट्रोलियम कॉलेज पॉलिटेक्निक कॉलेज) में सफलतापूर्वक दाखिला मिल गया है। कक्षा 12 तक की पढ़ाई पूरी करने वाले छह छात्रों को डॉ एमजीआर जानकी कॉलेज में भर्ती कराया गया और उनकी ऑनलाइन कक्षाएं शुरू की गई।

स्पेशल प्रोजेक्ट्स - नपालयम - के तहत गठित की गई एक विशेष समिति की अध्यक्षता अध्यक्ष वेंकटरमन, सुरेश कृष्ण और कुमार राजेंद्रन के साथ दुरई पांडियन और अर्शिया द्वारा की गई।

हम अपने क्लब के सदस्यों को इस अद्भुत यात्रा हेतु उनके उदार योगदान के लिए धन्यवाद देते है, जो इस गांव के इतने सारे परिवारों में एक सकारात्मक परिवर्तन लाएगा। हमारा अंतिम लक्ष्य इन स्कूलों से उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले अधिक विद्यार्थियों को प्राप्त करना, हमारे करियर जागरूकता कार्यक्रमों के माध्यम से उनकी मदद करना और उच्च शिक्षा का समर्थन करना है। हम प्रायोजकों और भागीदारों का स्वागत करते है।

कृपया rotaryclubofmadrasnorth@gmail.com पर हमसे संपर्क करें।

लेखक रोटरी क्लब मद्रास नॉर्थ की एक सदस्य है।

एक सपना सच हो गया

नपालायम गाँव के एक सरकारी स्कूल की हमारी यात्रा के दौरान, हम कक्षा 12वीं की एक 17 वर्षीय छात्रा आशा से मिले। वह हमसे मिलने के लिए उत्साहित और रोमांचित थी, क्योंकि हम शहर से आए थे। बहुत सारी जिज्ञासाओं के साथ, वह चेन्नई के स्थानों, शहरी जीवन और हमारे अनुभवों के बारे में सवाल पूछती रही। उसने बाद में हमें बताया कि कैसे उसका पूरा जीवन उसके गाँव के इर्द-गिर्द घूमता रहा और उसे बमुश्किल ही अन्य स्थानों पर जाने का मौका मिला। जब वह छोटी थी, तो वह पोंगल के त्योहार पर चेन्नई और समुद्र तट पर जाया करती थी। उसने वास्तव में अपनी शहरी यात्राओं का आनंद लिया। बाद के वर्षों में, सभी अपने काम में इतने व्यस्त हो गए कि अब वे चेन्नई नहीं जाते है। अपने परिवार की विकट परिस्थितियों के बावजूद, इस बहुत ही मेहनती छात्रा ने अपनी पढ़ाई में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। बचपन से ही रेवती का सपना चेन्नई शहर में उच्च शिक्षा प्राप्त करने का था। लेकिन उसे लगा कि यह हमेशा के लिए एक सपना बनकर ही रह जाएगा, मगर उसके स्कूल में हमारे द्वारा आयोजित किए गए एक कैरियर मार्गदर्शन कार्यक्रम में भाग लेकर, जहाँ उसने कहा कि वह वाणिज्य में डिग्री हासिल करना चाहती है और बैंक मैनेजर बनना चाहती है, वह चकित थी कि उसका सपना सच होने जा रह है। नियत समय पर, उसे एक प्रायोजित कार्यक्रम के अंतर्गत चुना गया और उसे चेन्नई के एक प्रतिष्ठित आर्ट्स कॉलेज में दाखिला मिल गया। अब, वह खुशी से अपनी पसंद के डिग्री कार्यक्रम में भाग ले रही है।

रोटरी क्लबों ने वृक्षारोपण को नई ऊँचाइयाँ दीं

किरण ज़ेहरा

रोटरी डिस्ट्रिक्ट 3170 के, पीडीजी गणेश भट्ट, कर्नाटक के कारवार के पास येलापुर में घटित एक घटना को याद करते हैं, जब एक युवा लड़के को साँप के काटने पर, 82 वर्षीय व्यक्ति ने उसे हर्बल उपचार देकर बचाया था। ''उसने बस अपने घर के पिछवाड़े से एक पत्ता तोड़ा और लड़के के पैर पर, उस जगह रखा जहाँ उसे साँप ने काट लिया था।'' कुछ ही मिनटों में, लड़का अपने पैरों पर खड़ा हो गया था; उस बूढ़े व्यक्ति ने सेवा के लिए एक पैसा तक नहीं लिया। हैरान भट्ट ने उनसे इस पत्ती बारे में जानना चाहा। बूढ़े व्यक्ति ने जवाब दिया कि, अगर उसने इसके रहस्य का खुलासा किया, तो प्रभाव खो जाएगा। पीडीजी का कहना है, ''मुझे आने वाली पीढ़ियों के लाभ के लिए, उन्हें

नीचे : पीजीजी गणेश भट और रोटरी कल्ब धारवाड़ सेंट्रल के रोटेरियन रोटरी आई उद्यान में पौधारोपण करते हुए।

राजी करना था, ताकि वह इस हर्बल रहस्य का खुलासा करें।

बूढ़े व्यक्ति ने भट्ट को अपने साथ दो और दिनों तक रहने के लिए कहा। खाँसी के इलाज से लेकर अल्सर तक और साँप के काटने का इलाज करने तक, बूढ़े व्यक्ति के पास, उसके बगीचे में लगभग 40 किस्म के हर्बल पौधे थे। भट्ट कहते हैं, इससे मुझे धारवाड़ में एक औषधीय उद्यान शुरू करने की प्रेरणा मिली। अपनी माँ और सास की स्मृति को जीवित रखने के लिए पोषित किए जा रहे, 'रोटरी आईस उद्यान' में 160 से अधिक औषधीय झाड़ियाँ और पौधे हैं। उद्यान का रख-रखाव, रोटरी क्लब धारवाड़ सेंट्रल के रोटेरियन, सुरेश बाबू की अध्यक्षता वाले वालचंदनगर इंडस्ट्रीज द्वारा किया जाता है। क्लब अपने अध्यक्ष आनंद नायक और सचिव करण डोडवाड़ के नेतृत्व में इस उद्यान का विस्तार करेगा।

हरे ग्रेनेड

रो ई मंडल 3131 के, रोटरी क्लब पुणे कोथरुद के रोटेरियन, पुणे के पास आरे गाँव पर बमबारी कर रहे हैं, महरे ग्रेनेडफ उर्फ़ बीज बमों के साथ। क्लब की पर्यावरण एवेन्यू चेयर, अनुजा शाह कहती हैं, जैसा कि कहा जाता है, मएक पत्थर से दो आमम तोड़ना, उसी तरह, बीज बम फेंकने के लिए, गाँव में घूमकर पर्यावरण को बचाने के हमारा प्रयास, न केवल इस जगह के लिए, बल्कि हमारे स्वास्थ्य के लिए भी अच्छा है। क्लब के सदस्यों ने अपने परिवारों के साथ, बीज बमबारी गतिविधि में भाग लिया, जो कि एक गैर सरकारी संगठन, 'नाता फाउंडेशन' द्वारा किया गया था। वह आगे कहती हैं, एनेट्स को यह पसंद आया और हम जल्द ही और अधिक बम विस्फोट करने की योजना बना रहे हैं।

रोटरी क्लब मुंबई और 'नाता फाउंडेशन' के साथ साझेदारी में, क्लब ने पहले गाँव के प्रत्येक घर में और उसके बाहर सौर लैंप लगाए थे। साथ ही, 5,000 फल देने वाले पौधे भी लगाए थे। सौर लैंप, ग्रामीणों को अतिरिक्त घंटे काम करने में मदद करते हैं और बच्चे देर शाम तक अध्ययन कर सकते हैं। फलवाले पेड़, गाँव के हरित आवरण को बहाल करते हुए, आजीविका कमाने का एक अतिरिक्त स्रोत होंगे, वह कहती हैं।

रोटरी व्हील पार्क

एक कंक्रीट जंगल के बीच में हरे भरे पार्क में टहलने की कल्पना करें। न केवल हमारे फेफड़ों के लिए ताजा ऑक्सीजन और शहर के लिए पर्यावरण-संतुलन, बल्कि यह हमारे क्लब के भव्य सार्वजनिक छवि के लिए भी एक पहल होगी। पार्क का निर्माण रोटरी व्हील के आकार में किया जा रहा है, अध्यक्ष क्षितिज चौधरी, रोटरी क्ल औरंगाबाद पूर्व, रो ई मंडल 3132 कहते हैं।

'भारतीय खेल प्राधिकरण' के अनुरोध पर, औरंगाबाद में BAMU परिसर में दो एकड़ का विशाल पार्क आ रहा है, जहाँ क्लब ने TRF के सहयोग से दो चेक डैम का निर्माण पहले ही कर लिया है। मानसून ने इस साल डैम्स को पाँच गुना भर दिया है और इस क्षेत्र में भूजल-स्तर में सुधार हुआ है, वह बताते हैं। यह रोटरी व्हील पार्क अपने हस्ताक्षर डिज़ाइन की वजह से, दूर से ही दिखाई देगा, वे कहते हैं।

पहले चरण में, क्लब ने देसी बरगद, पीपल और नीम के पेड़ लगाए हैं, जिनकी उम्र 500 साल है और 1,000 मीटर-जॉगिंग ट्रैक बिछाया गया है।

एक नया मंत्र: मचलो, हरियाली की ओरफ

रो ई मंडल 3090 के, रोटरी क्लब अहमदगढ़ ने, शहर में सड़क के किनारे वृक्षारोपण अभियान चलाया। वृक्षारोपण अभियान को आगे ले जाने के लिए, क्लब शैक्षणिक और निजी संस्थानों को शामिल कर रहा है। उन छात्रों और कर्मचारियों को सम्मानित किया जाएगा, जो एक पौधा लगाने की प्रतिज्ञा करेंगे।

रो ई मंडल 3291 के, रोटरी क्लब कलकत्ता पूर्व-मध्य और रोटरी क्लब कलकत्ता सन सिटी

रो ई मंडल 3190 की वृक्षा चेतना परियोजना।

ने, चक्रवात अंफ़ान से प्रभावित राजारामपुर ग्राम पंचायत के 100 किसानों को फूल और फल देने वाले पौधे वितरित किए। क्लब को RCC और 'सोनारतोरी महिला और बाल कल्याण संस्थान' द्वारा सहायता प्रदान की गई।

रोटरी क्लब अहमदाबाद अस्मिता, रो ई मंडल 3054 के, 'अखिल महिला क्लब' ने शहर के एक रिसॉर्ट में 67,000 पेड़ लगाए हैं।

रो ई मंडल 3190 के, रोटरी क्लब बैंगलोर लेकसाइड, रोटरी क्लब बैंगलोर सेंट्रल और रोटरी क्लब कोलार ने, 'प्रोजेक्ट वृक्ष चेतना' के तहत, आठ किसानों की भूमि में 410 आम के पेड़ लगाए। क्लब आठ एकड़ भूमि पर फलों के पौधे लगाएगा और अनुमान है कि, इससे किसानों की आय में ₹80,000 सालाना की वृद्धि होगी।

रो ई मंडल 2981 के, रोटरी क्लब मयिलाडुदुरई ने डीजी आर बालाजी बाबू की मौजूदगी में 'परसालूर वीरतीस्वरर मंदिर' में वृक्षारोपण अभियान चलाया। यह क्लब ₹1.25 लाख की लागत से लगभग 3,000 पौधे लगाएगा।

रो ई मंडल 2981 के, रोटरी क्लब तंजावुर साउथ ने, मलिटिल स्कॉलर्स स्कूलफ के इंटरेक्टर्स के साथ मिलकर, एक लाख रुपये की लागत से, स्कूल कैंपस की शोभा बढ़ाने के लिए, एक विदेशी किस्म के 'टर्मिनैलिया मैंटली' नामक 50 से अधिक पौधे लगाए। क्लब ने नियमित रूप से पौधों को पानी देने के लिए एक ड्रिप-सिंचाई इकाई भी स्थापित की है।

रो ई मंडल 3212 के, रोटरी क्लब तिरुनेलवेली टाउन ने, I-ADay को चिह्नित करने के लिए, मश्री सत्य साईं बाला गुरुकुलम मैट्रिक स्कूलफ में पौधे लगाए।

रोटरी क्लब मयिलाडुदुरई, रो ई मंडल 2981 द्वारा, डीजी बालाजी बाबू की उपस्थिति में एक मेगा ट्री प्लांटेशन ड्राइव।

एन कृष्णमूर्ती द्वारा रूपरेखा

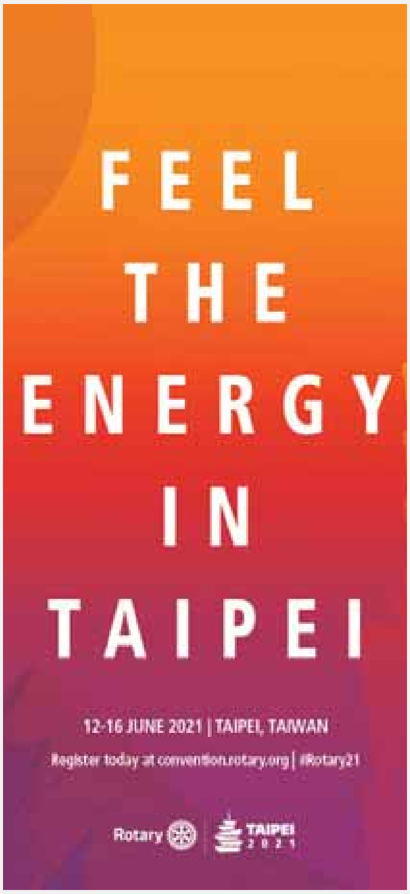

District Wise TRF Contributions as on September 2020

(in US Dollars)

District Number	Annual Fund	PolioPlus Fund	Endowment Fund	Other funds	Total Contributions
		India			
2981	15,842	1,943	5,000	0	22,785
2982	12,228	1,379	15,703	14,615	43,925
3000	5,297	0	10	10,800	16,107
3011	(12,658)	100	40,450	96,368	124,261
3012	10,225	0	0	3,079	13,304
3020	42,219	5,645	0	2,625	50,490
3030	625	1,030	0	73,418	75,072
3040	522	67	0	50	639
3053	6,581	303	0	60,668	67,552
3054	60,325	140	0	77,844	138,310
3060	21,523	(966)	7,077	54,567	82,200
3070	2,094	0	0	11,108	13,203
3080	12,021	8,958	0	0	20,978
3090	13,723	0	0	(736)	12,987
3100	1,565	0	0	6,411	7,976
3110	8,849	0	0	0	8,849
3120	0	1,769	0	(1,769)	0
3131	26,371	4,850	9,000	78,206	118,427
3132	3,557	85	0	3,903	7,545
3141	159,812	200	15,865	250,683	426,560
3142	77,641	5,061	0	4,793	87,494
3150	7,300	300	17,667	22,021	47,287
3160	4,496	5,442	0	0	9,938
3170	3,806	2,470	125	73,012	79,414
3181	8,536	347	0	7,050	15,933
3182	10,475	0	0	1,581	12,056
3190	19,869	753	25,000	105,540	151,162
3201	6,346	1,583	0	54,712	62,642
3202	27,285	1,568	135	10,167	39,155
3211	934	1,899	0	37,439	40,272
3212	10,418	8,023	14	44,327	62,783
3231	(513)	27	0	1,167	680
3232	(723)	900	1,000	86,190	87,368
3240	14,847	6,950	0	1,000	22,797
3250	2,087	187	0	93	2,367
3261	(750)	0	0	1,833	1,083
3262	1,629	1,168	0	0	2,797
3291	5,088	185	0	17,650	22,923
India Total	**589,490**	**62,368**	**137,046**	**1,210,415**	**1,999,319**
3220 **Sri Lanka**	11,582	5,121	0	8,919	25,623
3271 **Pakistan**	1,006	1,000	0	22,100	24,106
3272 **Pakistan**	5,240	7,446	0	0	12,686
3281 **Bangladesh**	32,989	500	1,000	32,941	67,430
3282 **Bangladesh**	5,300	300	0	8,396	13,996
3292 **Nepal**	12,351	7,409	0	75,246	95,006
South Asia Total	**657,959**	**84,144**	**138,046**	**1,358,017**	**2,238,166**
World Total	**20,790,668**	**3,581,457**	**5,801,230**	**7,462,148**	**37,635,502**

Source: RI South Asia Office

ताइपे का उत्थान

सूज़ी एल मा

पवित्र मंदिरों, बादलों को चीरने वाली गगनचुंबी इमारतें, पहाड़ी पर्यटक स्थलों, अतुलनीय भोजन, और एक चमक-धमक भरी रात्री जीवनशैली: 2021 रो ई सम्मेलन के स्थल, ताइवान के ऊर्जस्वी राजधानी शहर में आपका स्वागत है।

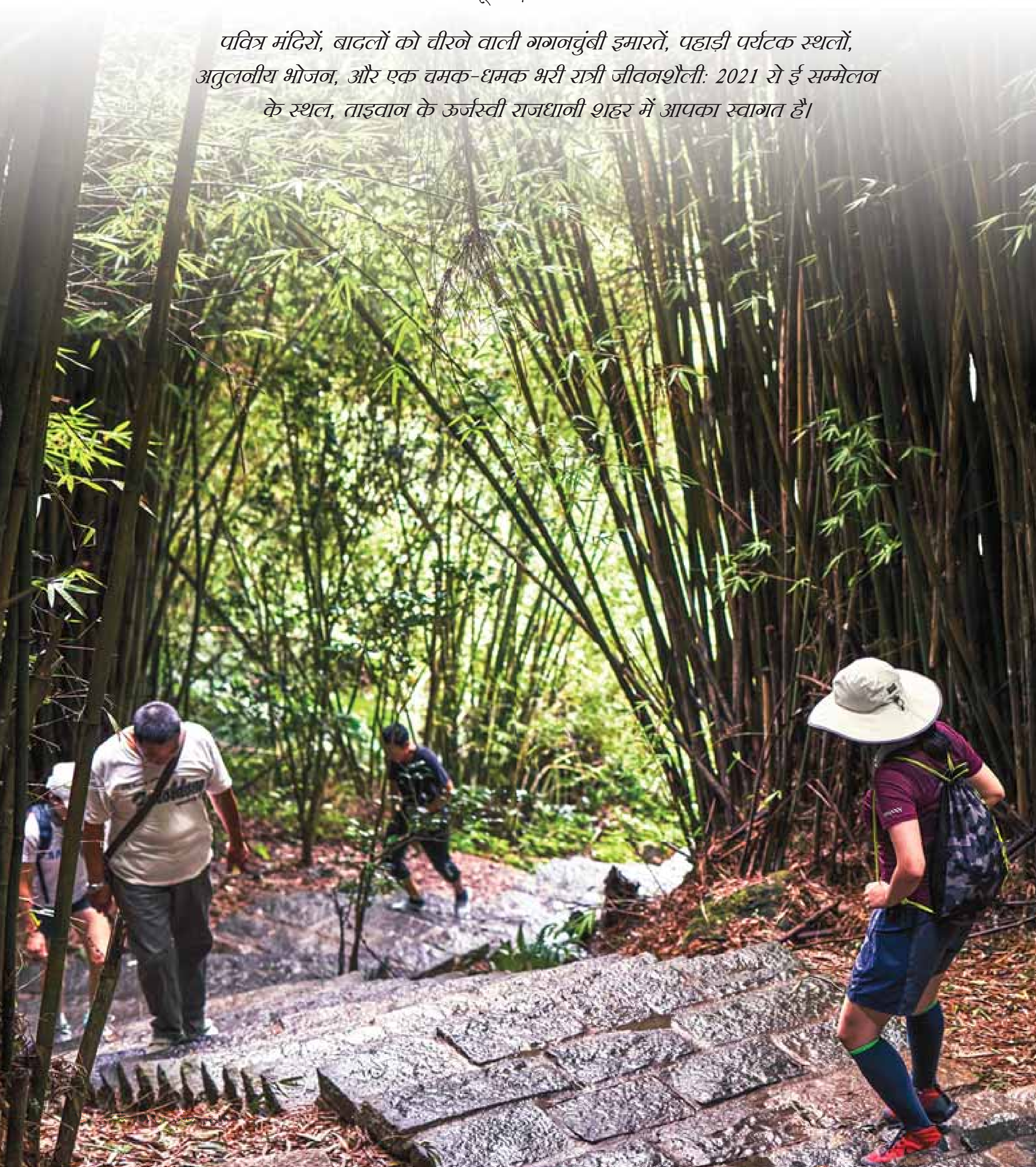

यह लगभग 500 साल पहले समुद्री धुंध से उभरा था, एक आलीशान एशियाई टापू जो हरे-भरे जंगलों से ढका और ऊंचे पहाड़ों से घिरा हुआ था। इस बात से फर्क नहीं पड़ता कि यहाँ कि सभ्यता और संस्कृति सदियों पुरानी थी। अज्ञात समुद्र की खोज करने वाले पुर्तगाली नाविकों के लिए, यह पूरी तरह से नया था, और यह एक स्वर्ग की तरह लग रहा था। उन्होंने इसे एक नाम दिया जो जल्द ही जहाजी मल्लाहों के नक्शे पर दिखाई देने लगा: इल्हा फॉर्मोसा - खूबसूरत द्वीप।

यह नाम अब भी प्रचलित है, हालांकि चीनी तट से लगभग 100 मील पूर्व की ओर स्थित यह फॉर्मोसा द्वीप, आज ताइवान के नाम से जाना जाता है। इसे चार एशियाई बाघों में से एक भी माना जाता है, सुदूर पूर्व की अर्थव्यवस्थाओं का एक चतुष्क, जो 20वीं सदी के अंत में लोकप्रिय हुआ और जिसका विस्तार 21वीं सदी में भी जारी है। ताइवान के लिए, उस चमत्कारी विकास का मुकाम और प्रतीक उसकी राजधानी ताइपे है, एक ऐसा शहर जो अपने अनंत उत्साह के साथ 24/7 जगमगाता रहता है, और यहीं बात इसे 2021 के रोटरी अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन के लिए एक आदर्श स्थल बनाती है, जिसकी थीम है *फ़ील दी एनर्जी।*

यह ताइवानी रोटेरियनों के लिए एक लंबे समय से प्रतीक्षित क्षण है, जिन्होंने 1948 में अपना पहला क्लब, रोटरी क्लब ताइपे की स्थापना की थी। बहत्तर साल बाद, ताइवान में लगभग 900 क्लब और लगभग 35,000 रोटेरियन है। इसके 12 मंडल 12 से 16 जून तक 2021 सम्मेलन के लिए मेजबानों के रूप में कार्य करेंगे। ताइवानी रोटेरियन इस सम्मेलन की तैयारी पांच सालों से कर रहे है, परियोजना प्रमुख केनेथ एम शूपर्ट जूनियर कहते है। वे बहुत गौरवान्वित महसूस कर रहे है, और वे इस सम्मेलन को अपने शहर और अपने देश का प्रतिबिंब बनाना चाहते है।

रोटरी क्लब डेकाटुर, अलबामा, के एक सदस्य, शूपर्ट ने 1976 से रोटरी क्लब ताइपे के एक सदस्य और पूर्व रोई अध्यक्ष गैरी सी के हांग के सहयोगी के रूप में सेवा दी। शूपर्ट और उनकी पत्नी लिन, डेकातुर क्लब की एक सदस्य, जिन्होंने हांग की पत्नी कोरिना के सहयोगी के रूप में सेवा दी, कई बार ताइपे का दौरा कर चुके है। वे यहाँ वापस जाने को लेकर उत्सुक है। ताइपे शहर बहुत दिलचस्प है, शूपर्ट कहते हैं। आपको यहाँ सभी आधुनिक इमारतें देखने को मिलती है जिनमें सुंदर और प्राचीन मंदिर भी शामिल है। वह इस शहर की जीवंतता (जो रात्री में इसके बाजारों से झलकती है), इसकी स्वच्छता और लघु उद्यानों से लेकर आस-पास के पहाड़ी इलाकों तक, इसके अनेक दर्शनीय स्थलों का गुणगान करते है।

शूपर्ट यहाँ के खाने की भी बहुत तारीफ करते है - और ताइवान के आगंतुकों के बीच ऐसा करने वाले वह अकेले नहीं है। सबसे सादा भोजन भी विशेष अवसर की तरह लगता है - द्वीप के विविध व्यंजनों एवं पुराने और नए दोस्तों के साथ आनंद लेने का समय। शूपर्ट की उन रोटेरियनों के लिए कुछ सलाह है जो ताइवान के मेजबान के अतिथि के रूप में भोजन पर आमंत्रित किए जाते है। जब तक आप वास्तव में और अधिक नहीं चाहते तब तक अपनी प्लेट खाली न करें,

ताइपे 101 टॉवर।

बाएं : गुयानीशन एक विलुप्त 2021 फुट लंबा ज्वालामुखी आब एक हाइकिंग ट्रेल में परिवर्तित किया गया हैं।

वह कहते है। जब आपको लगता है कि भोजन खत्म हो गया है, तब वास्तव में ऐसा नहीं होता। और भी चीजें आना बाकी रहती है।

शूपर्ट ताइवान के लोगों की मित्रता के बारे में भी बताते है और सिफारिश करते है कि 2021 सम्मेलन में भाग लेने वाले आगंतुक ताइपे के चमत्कारों से परिचित होने के लिए स्थानीय रोटरी सदस्यों पर भरोसा करें। आगामी पृष्ठों में, आप देखेंगे कि हमने ठीक ऐसा ही किया है। हमने लगभग एक दर्जन रोटेरियनों और रोटरेक्टरों से सुझाव एकत्रित किए, जो शहर से अच्छी तरह से परिचित हैं। (रोटरी के कुछ सदस्यों से मिलिये जिन्होंने हमें ताइपे की शख्सियतों: हमारे पाँच टूर गाइड के रूप में घुमाया, पृष्ठ 51)। हमारे दौरे की शुरुआत एक असंभाव्य देखने लायक स्थल से हुई जो शूपर्ट की सूची में भी शीर्ष पर था: भूमिगत रेल।

एमआरटी से सफर करें

किसी भी नए शहर में, आगंतुकों का पहला कार्य यह पता लगाना होता है कि आसपास घूमने का सबसे अच्छा साधन क्या है। ताइपे में, इस उस प्रश्न का उत्तर है मास रैपिड ट्रांजिट सिस्टम। जैसा कि रोटेरियन और रोटरेकटर जूली चू समझाती है, एमआरटी नक्शे पर मौजूद एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुंचने के साधन से कई अधिक है।

2021 सम्मेलन में भाग लेने वाले आगंतुक ताइपे के चमत्कारों से परिचित होने के लिए स्थानीय रोटरी सदस्यों पर भरोसा करें। हमने लगभग एक दर्जन रोटेरियनों और रोटरेक्टरों से सुझाव एकत्रित किए, जो शहर से अच्छी तरह से परिचित हैं।

चू का जन्म ताइपे में हुआ था, लेकिन उन्होंने अपनी अधिकतर युवावस्था विदेश में बिताई। जब वह 25 साल की उम्र में वापस लौटी, तो वह अपने पैतृक शहर के बारे में बहुत कम जानती थी। मुझे एक विदेशी के रूप में ताइपे को जानना था, चू समझाती है। मैंने यहाँ की भाषा बोली, लेकिन बहुत सारी चीजें मेरे लिए अलग थी। चठढ की वजह से मैंने अपने गृह नगर को फिर से जाना। एमआरटी की मदद से वह लिटल मनीला जैसे आसपास के विशिष्ट संस्कृति वाले इलाकों में गई। एक तरफ वह उससे समुद्र की ओर तो दूसरी तरफ पहाड़ों की ओर गई। वह इससे रेड लाइन के अंत तक गई जहाँ तामसुई नदी समुद्र में गिरती है, ताकि वह सूर्यास्त देख सकें, लाइव संगीत सुन सकें और तट पर घूम सकें। वह इससे माओकोंग गोंडोला गई, जो एक केबल कार है जिससे उन्होंने माओकोंग गाँव के चाय के बागानों और वाटिकाओं की सैर की। यह रेलें शहर के केंद्र में भूमिगत चलती है, लेकिन डाउन्टाउन के बाहर कुछ स्थानों पर यह जमीन के ऊपर चलती है, जिससे चू को ताइवान के देहाती इलाकों से फिर से परिचित होने का मौका मिला।

चू ने अधिक व्यावहारिक कारणों के लिए भी चठढ की सराहना की। स्टेशनों पर रात में यात्रा करने वाली महिलाओं के लिए विशेष प्रतीक्षा कक्ष है, और उन क्षेत्रों में अतिरिक्त सुरक्षा होती है। इस प्रणाली में विशेष आवश्यकताओं वाले यात्रियों के लिए व्यवस्थाएं भी शामिल है: जब चू एक साथी रोटेरियन के साथ यात्रा कर रही थी जिनका एक पैर टूट गया था, तब एमआरटी ने उनकी मदद के लिए एक अनुरक्षक का प्रस्ताव दिया। जैसा कि चू और शूपर्ट दोनों बताते है, एमआरटी की पहचान इसकी स्वच्छता है। स्टेशनों या ट्रेनों में खाने या पीने की अनुमति नहीं है। यहाँ तक कि बाथरूम भी बेदाग है – चू के घर के पास एमआरटी स्टेशन की एक बाथरूम में ताजा फूल महकते है। चू ने हमें एक बढ़िया अंदर की बात बताई: वह कभी-कभी एमआरटी स्टेशनों पर शौचालय का उपयोग करने के लिए जाती है, और स्टेशन के परिचारक अक्सर आपको मुफ्त में अंदर जाने देंगे यदि आप उनसे कहेंगे कि आप सिर्फ शौचालय का उपयोग करने के लिए ही वहाँ आए है।

अंग्रेजी में उपलब्ध मानचित्रों और प्रत्येक स्टेशनों की हेल्प डेस्क पर नियुक्त अंग्रेजी बोलने वाले परिचारकों की मदद से एमआरटी से यात्रा करना आसान होता है। ट्रेनें नियमित रूप से और समय पर चलती है। सम्मेलन में जाने वालों को उनकी सम्मेलन सामग्री में रेल से घूमने के लिए एक नि:शुल्क पास प्राप्त होगा, जिससे ताइपे सम्मेलन स्थल, ताइपे नांगांग एक्सबिशन केंद्र, जिसके पास अपना खुद का एमआरटी स्टेशन है, तक पहुंचना सुविधाजनक हो जाएगा।

ऊपर जाने के लिए लिफ्ट लें

एक चीज जिसे आप जरूर देखना चाहेंगे वो है ताइपे 101, एक गगनचुंबी इमारत जो इस शहर

के क्षितिज पर अपना वर्चस्व स्थापित करती है। इसकी 101 मंजिलों के कारण जाना जाने वाली यह इमारत, 2004 से लेकर 2009 में दुबई के बुर्ज खलीफा का निर्माण पूरा होने तक दुनिया की सबसे ऊंची इमारत थी। अपनी 1,667 फीट की ऊंचाई के साथ यह शहर का सर्वोच्च स्थान है - और लगभग हर रोटरी सदस्य जिससे हमने बात की, ने ताइपे के किसी भी दौरे पर इसे एक आवश्यक पड़ाव के रूप में उल्लिखित किया।

कुछ लोग कहते है कि यह टॉवर पैगोड़ा जैसा दिखता है, जबकि अन्य लोग सोचते है कि यह बांस के डंठल जैसा दिखता है। ताइवान में भूकंप और तूफान का खतरा रहता है, इसलिए ताइपे 101 को 9.0 तीव्रता का भूकंप झेलने हेतु डिज़ाइन किया गया था और इसमें सोने की गेंद के आकार का 728-टन वजनी पेंडुलम जैसा अवमंदक भी जो तेज़ हवाओं में इमारत को स्थिर रखने में मदद करता है। (यह अवमंदक 87वीं से 92वीं मंजिल तक से दिखाई देता है)

पांचवी से 89वीं मंजिल तक लिफ्ट से जाने में केवल 37 सेकंड लगते है। 89वी मंजिल पर एक आंतरिक वेधशाला है और 91वीं मंजिल पर एक बाहरी वेधशाला है। पिछले साल यहाँ के भवन प्रबंधन ने आम जनता के लिए 101वीं मंजिल खोली थी, जो पहले वीआईपी लोगों के लिए आरक्षित थी; बाहरी दृश्यों को देखने वाले मंच पर प्रवेश करने से पहले एक सुरक्षा जीन पहनने की आवश्यक होती है। वेधशाला की मंजिलों पर जाने के लिए टिकटें ऑनलाइन या टॉवर से भी लगभग 20 डॉलर में खरीदी जा सकती है।

शीर्ष मंजिल पर जाने से पहले या बाद में, निचली मंजिलों पर उच्च-स्तरीय दुकानों से खरीदारी करने या खाने के लिए रुकें (दिन ताई फुंग, ताइपे के प्रसिद्ध पकौड़े की एक दुकान यहाँ पर स्थित है; इसका छोटा, मूल रेस्तरां ज़िनयी मार्ग पर है)। यदि आप एक मनोरम दृश्य के साथ अपना भोजन करना चाहे, तो 85वीं और 86वीं मंजिल पर रेस्तरां भी मौजूद है।

चढ़ाई करें

जहाँ ताइपे 101 के शीर्ष तक की यात्रा शहर के 360-डिग्री दृश्यों को देखने का सबसे अच्छा

लुंगशान मंदिर।

डंपलिंग से लेकर डॉनट: ताइपे का एक पाक कला दौरा

रात्री बाजार: उग्र, ऊर्जावान और अंतहीन आनंद, ताइपे के रात्री बाजार आंखों और कानों के साथ-साथ पेट के लिए भी एक दावत हैं। जहाँ भोजन मुख्य आकर्षण है, वहीं इस बाजार में कपड़े, जूते, स्मृति चिन्ह और खिलौने भी बिकते है, साथ ही यह मनोरंजन भी प्रदान करते है, जैसे उत्सव रूपी आकर्षण, वीडियो गेम और भविष्य बताना। बाजार शाम के 4 बजे से खुलता है - और रात्री 1 बजे तक खुला रहता है। हमारे रोटरी टूर गाइडों द्वारा सबसे अधिक जिन स्थानों का उल्लेख किया गया वह शिलिन और रोहे के रात्री बाज़ार थे।

आम तौर पर भोजन अक्सर छोटी प्लेट में दिया जाता है, लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि यह मामूली है: ताइपे के रात्री बाजारों के अनेक दर्जन विक्रेताओं को *मिचेलीन गाइड* 2020 द्वारा मान्यता दी गई है। सबसे लोकप्रिय स्टालों पर कतारें लंबी हो सकती है - लेकिन यह सबसे अच्छा भोजन खोजने का एक बढ़िया तरीका है। कुछ जगहों पर खाने वालों के लिए टेबल और स्टूल होते है, लेकिन ज्यादातर लोग बाजार घूमते हुए खाते है (या घर पर खाने के लिए इसे ले जाते है)। तले हुए और सीख में पिरोए हुए व्यंजनों जैसे अन्य खाद्य पदार्थों की तरह ही विदेशी लोग पकौड़ी, नूडल्स, और मीठा पाव से परिचित होंगे - हालांकि इनमें अक्सर एक ताइवानी तड़का मौजूद होता है, जैसे कि आपके चेहरे जितने बड़े आकार का चपटा भुना हुआ चिकन कटलेट और सीख में पिरोया हुआ दूध से बना गोलाकर व्यंजन। मीठी ब्रेड के साथ भाप से पका हुआ एक नरम व्यंजन जो ब्रेज़्ड पोर्क बेली से भरा हुआ होता है, जिसे *गुआ बाओ* कहते है; परतदार, खुशबूदार हरे प्याज से बने पैनकेक जिसे अंडे या मांस के साथ सैंडविच जैसा बनाया जा सकता है; और ओवन में पकी हुई मिर्चदार मांस की टिकिया से भरी मीठी रोटी को जरूर खाकर देखें। यहाँ ताजे फलों का रस मिलता है; पपीते का दूध और अन्य मलाईदार मिश्रण; और, बेशक सभी फ्लेवर में चबाई जा सकने योग्य कसावा की गेंदों से भरी हुई बुलबुले युक्त गरमागरम चाय। अंत में मीठे के लिए, *मोची,* एक मीठा, चबाया जा सकने वाला चावल का केक जरूर खाएं जो उबला

ताइपे भोजन।

हुआ या ग्रिल किया हुआ होता है और कभी-कभी महीन बर्फ के साथ परोसा जाता है।

पॉल कुओ का पसंदीदा रात्री बाजार भोजन एक सीप आमलेट है, जो सीप से भरा एक खस्ता अंडा पैनकेक होता है जिसके ऊपर एक मीठी और खट्टी सॉस डाली जाती है। रोटेरियन और रोटरेक्टर एलिस (यी-चुन) लिन, खुशबूदार टोफू की अनुशंसा करती है जो एक तेज़ गंध वाला किण्वित बीन दही होता है जिसे ताइवान के लोग बहुत पसंद करते है। स्थानीय लोगों द्वारा पसंद किए जाने वाला एक और अनोखा रात्री बाज़ार व्यंजन है पिग ब्लड केक, जिसे वाकई में आयताकार आकार में सूअर के खून और चिपचिपे चावल से बनाया जाता है और यह सूअर के मांस के रस में डूबा हुआ और धनिया के साथ मूंगफली के आटे में लिपटा हुआ होता है और एक सीक के साथ परोसा जाता है। लिन इसे एक चबाने वाले, चिपचिपे, नमकीन व्यंजन के रूप में वर्णित करती है - जो उनका बेहद पसंदीदा रात्री बाज़ार खाद्य पदार्थ है।

डंपलिंग: ताइपे में, डंपलिंग हर जगह मिलते है। पूर्व मंडल 3500 के गवर्नर होंग शु चेन और उनकी पत्नी, रीटा, जो एक रोटियन है, दीन ताई फंग की सलाह देते है (ताइपे में कई स्थान है, लेकिन थोड़ी प्रतीक्षा करनी पड़ सकती है, dintaifung.com.tw/eng पर जाकर प्रतीक्षा समय की जांच करें)। यह जगह अपने *ज़िआओ लॉन्ग बाओ,* या सूप पकौड़ियों के लिए प्रसिद्ध है - जब आप उसे दांत से काटते है, तो स्वादिष्ट मांस का रस पतली परत से बाहर निकलता है। ज़िआओ लॉन्ग बाओ के लिए सूअर का मांस सबसे आम भरावन है, लेकिन दिन ताई फंग सूअर के मांस और केकड़े के अंडों या हरे कुम्हड़ा और झींगों के साथ अन्य विविधताएं प्रदान करता है। इस मेन्यू में अन्य प्रकार के डंपलिंग, पॉट स्टिकर, और वॉन्टन के साथ-साथ उबले हुए मीठे पाव, नूडल्स, सूप, चावल के व्यंजन, सब्जियां और यहाँ तक कि *ज़िआओ लॉन्ग बाओ* जैसी मिठाई भी शामिल होती है जो मीठे लाल बीन क्रीम या चॉकलेट से भारी हुई होती है। पॉलीन लेउंग कहती है, ''अगर आप ताइपे आते है और दिन ताई फंग नहीं जाते तो आपका यहाँ आना बेकार है।''

हॉट पॉट: ताइवान में भोजन साझा करना एक जोड़ने वाला अनुभव है, और ऐसा करने का सबसे अच्छा

तरीका है हॉट पॉट - आमतौर पर सैकड़ों विकल्पों वाला एक बुफ़े। यह शोरबा की एक केतली के साथ शुरू होता है जिसे मेज पर बर्नरों के ऊपर गरम रखने के लिए रखा जाता है। सब्जियां, पतला कटा हुआ मांस, समुद्री खाद्य पदार्थ, नूडल्स, टोफू और डंपलिंग अलग-अलग बर्तनों में आते है; खाने वाले खुद अपने भोजन का चुनाव करके उन्हें शोरबा में पकाकर एक स्वादिष्ट सूप तैयार करते है। खाने वाले पके हुए भोजन को विभिन्न प्रकार की चीजों और सजावट की वस्तुओं, जैसे सोया सॉस, तिल का तेल, गर्म सॉस, मूंगफली की चटनी, बारबेक्यू सॉस, सीलेन्ट्रो और लहसुन में डुबोकर सीधा पॉट से खाते है। कई ताइवानी एक कच्चा अंडा शामिल करना भी पसंद करते है। कुछ रेस्तरां अलग-अलग बर्तन पेश करते है, जबकि अन्य एक बड़ा सार्वजनिक पॉट प्रदान करते है, जो अक्सर आधे हिस्से में विभाजित होता है, जिसमें एक तरफ मसालेदार शोरबा और दूसरी तरफ एक सौम्य पेय होता है। हॉट पॉट साझा करने की अपनी खूबसूरती होती है। भले ही हम एक-दूसरे को पहले से नहीं जानते हो, लेकिन हॉट पॉट साझा करने के बाद हम दोस्त बन जाते है, पॉल कुओ की पत्नी, सीसिलिया कहती है।

नाश्ता: ताइवान के नाश्ते में बैठकर खाने वाले उबले हुए चावल और गर्म सूप से लेकर कॉफी और एक बेकरी रोल तक शामिल है। हमारे भोजन यहां तक कि नाश्ते पर भी विभिन्न चीनी क्षेत्रों का बहुत प्रभाव है, जूली चू कहती है। ''हमारे पास चीन के उत्तरी भाग से मीठी रोटी या डोनट्स, और दक्षिण से चावल और दलिया है।'' सुबह का भोजन भी पश्चिम के प्रभाव को दर्शाता है: नाश्ते के कुछ स्थानों आप मेनू में काली मिर्च सॉस के साथ पास्ता या हैम्बर्गर देख सकते है। चू का पसंदीदा नाश्ता *दान बिंग* है जो अंडे की एक पतली परत के साथ दिया जाने वाला एक क्रेप है जो रोल करके परोसा जाता है। आप इसे कहीं भी, कभी भी प्राप्त कर सकते हैं; यह जल्दी मिल जाता है, और आप इसमें ऊपरी परत के रूप में ट्यूना, सूअर का सूखा मांस और सब्जियां मिला सकते है। उसके पसंदीदा व्यंजनों में से एक अन्य है हरे प्याज की पकी हुई मीठी रोटी, जिसके आटे में हरा प्याज मिलाया जाता है या ऊपर से छिड़का जाता है। एक कप गरम या ठंडे हल्के मीठे दूध वाली चाय के साथ नाश्ता खत्म करें। पहली बुलबुलेदार चाय का आधार दूध वाली चाय थी, जिसकी उत्पत्ति ताइवान में हुई थी।

फूड कोर्ट: यह सही है: ताइपे में डिपार्टमेंट स्टोर फूड कोर्ट एक उचित खाद्य गंतव्य है, जहाँ किराने का सामान, पैक किए हुए विशिष्ट खाद्य पदार्थ, गर्म खाद्य पदार्थ और मीठाई मिलती है। लेउंग ज़िन्यि जिले की ओर जाने जाने की सलाह देती है, जिसमें उत्कृष्ट खाद्य स्थलों (ताइपे 101 वाला सहित) के साथ उच्च स्तरीय अनेक शॉपिंग मॉल मौजूद है। वह ताइवान में लोकप्रिय एक डिपार्टमेंट स्टोर चेन (खाद्य स्थल निचले स्तर पर है), सोगो में जाने के लिए कहती है। ताइपे के दान जिले में सोगो स्थान पर, आप रामन का एक कटोरा खा सकते है, पेट भर के चीनी *डिम सम* खा सकते है, अपने संतुलित आहार को परे रखकर फैंसी केक खा सकते है, या बस एक मीठी रोटी और कॉफी या चाय के लिए किसी बेकरी पर रुक सकते है।

ताइपे में एक फुड कोर्ट।

सुविधा स्टोर भोजन: रोटरेकटर विक्की त्सो, एक फ्रांसीसी-प्रशिक्षित पेस्ट्री शेफ और न्यूयॉर्क सिटी में इंटरनेशनल कलिनरी सेंटर से स्नातक, ताइवान के सुविधा स्टोर की एक बड़ी प्रशंसक है। वह अक्सर डाक टिकट या कॉन्सर्ट टिकट खरीदने, पैकेज भेजने और प्राप्त करने और अपने बिजली बिल का भुगतान करने के लिए 7-इलेवन में जाती है। लेकिन, वह कहती है, सुबह के नाश्ते, दोपहर के भोजन, कॉफी, या अल्पाहार के लिए भी यह एक बढ़िया जगह है। त्सो स्वादिष्ट टी एग का आनंद लेती है, जो सोया सॉस और चाय के मिश्रण में डूबा हुआ होता है। उसके बचपन के पसंदीदा व्यंजन में से एक है सूखा रामन नूडल्स जिसके टुकड़े करके एक फ्लेवर डालकर स्वादिष्ट बनाया जाता है और कुरकुरे चिप्स की तरह इसे कच्चा खाया जाता है। नाश्ते के लिए वह अक्सर *फैन टुआन* - एक चिपचिपा चावल का रोल जो पारंपरिक रूप से नमकीन मूली और साग, और सूअर के मांस से भरा होता है - और मूंगफली के स्वाद वाला दूध, *मी जियांग* चुनती है। ■

तरीका है, वहीं रोटरेक्टर विक्की त्सो एलफन्ट माउंटेन (एमआरटी पर ताइपे 101 का अगला स्टॉप) के शीर्ष से क्षितिज को देखना पसंद करती है, विशेष रूप से रात में। इसके शिखर तक पहुँचने के लिए 600 सुव्यवस्थित सीढ़ियाँ चढ़नी पड़ती है।

ताइवान एक पहाड़ी द्वीप है, और स्थानीय लोगों को मनोरंजन के लिए लंबी पैदल यात्रा करना बहुत पसंद है। त्सो यांगमिंगशान राष्ट्रीय उद्यान जाने की भी अनुशंसा करती है, जहाँ बस, टैक्सी या कार के माध्यम से आसानी से पहुँचा जा सकता है। इस उद्यान में लंबी पैदल यात्रा करने के लिए कई पगडंडियाँ, झरने, कैला लिली के घास के मैदान, घने जंगल और घास के खुले मैदान है जहां गाय देखी जा सकती है। यांगमिंगशान में त्सो भोजन या नाश्ते हेतु रुकने की योजना बनाने के लिए कहती है; पार्क में और उसके आसपास कैफे और रेस्तरां है, उनमें से कुछ से शहर के मनोरम दृश्य दिखाई देते है।

रोटेरियन कोजी फुकुहारा, गुआनयिनशान नामक एक छोटे पर्वत की चढ़ाई करना पसंद करते है, जिसके शिखर पर लगभग एक घंटे या उससे कम समय में पहुंचा जा सकता है। कठिन यात्रा करने के बाद, फुकुहारा पहाड़ के पास एक रेस्तरां में कलश-चिकन खाते है। यह ताइवान का एक लोकप्रिय व्यंजन है, इसका यह नाम इसलिए रखा गया क्योंकि पूरी मुर्गियों को चुपड़कर, मिट्टी के कलश में भुना जाता है, एक बार चिकन पकाने के लिए और दूसरी बार उच्च तापमान पर उसकी त्वचा को कुरकुरा करने के लिए। यह बहुत रसीला और नमकीन होता है, फुकुहारा कहते है, और आप इसे सूप और बीयर के साथ खाते है।

एक डुबकी लगाएं

ताइपे में गरम पानी का झरने पर्यटकों के मध्य लोकप्रिय है, लेकिन स्थानीय लोगों के लिए, ये जीने का एक तरीका है। मेरे कुछ दोस्त हर दिन, सुबह या शाम को वहाँ पर जाना पसंद करते है, मंडल 3500 के पूर्व गवर्नर, टोनी चांग कहते है (जो अब मंडल 3501 और 3502 में विभाजित हो गया है)। यह एक सामाजिक गतिविधि है।

गर्म पानी के झरने लगभग 95 से 115 डिग्री फेरन्हाइट तक के होते है। चांग बताते है कि यहाँ सस्ते या नि:शुल्क सार्वजनिक स्नानघरों से लेकर महंगे स्पा रिसॉर्ट्स तक हर तरह की पसंद और बजट के झरने है। कुछ सुविधाओं में खुली हवा में स्नान करना उपलब्ध है, जबकि अन्य जगहों पर आंतरिक पूल मौजूद है। आप सभी एक स्विमिंग सूट के साथ जा सकते है या केवल अपने पैरों को गर्म पानी में डुबो सकते है।

ताइपे में, सबसे प्रसिद्ध गरम पानी के झरनों में बेतौ हॉट स्प्रिंग्स और यांगमिंगशान के भीतर और आसपास के झरने शामिल है, जो निष्क्रिय और सक्रिय ज्वालामुखियों का घर है। चांग का पसंदीदा झरना जियाओक्सी में ताइपे से लगभग एक घंटे की दूरी पर है: यह पूर्वी तट के करीब स्थित एक छोटा शहर है, वह कहते है। आप वहाँ के रिसॉर्ट्स और होटलों में खुले गरम पानी के झरनों पर जा सकते है, जहाँ आप पहाड़ों और जंगलों से घिरे होंगे और समुद्र को देख सकते है। यह बहुत खूबसूरत है।

नैशनल पैलेस म्यूज़ियम।

लुंगशान मंदिर के अंदर।

चीनी संस्कृति के 7,000 वर्षों का दौरा करें

ताइपे में घूमने के लिए बहुत सारे स्थान है, मंडल 3480 (जो कि 3481 और 3482 मंडलों में विभाजित हो चुका है) के पूर्व गवर्नर येन-शेन हसेह की पत्नी, कैथरीन हसेह कहती है। यहाँ समुद्र तट है, पहाड़ है - लेकिन नैशनल पैलेस म्यूज़ीअम एक खजाना है।

इस संग्रहालय में लगभग 700,000 चीनी कलाकृतियाँ है जो 5000 ईसा पूर्व से अधिक पुरानी है। चूंकि देखने लायक बहुत सी चीजों है पर हसेह - संग्रहालय के शिक्षक संघ के एक सदस्य और पूर्व अध्यक्ष - हरिताश्म संग्रह के साथ शुरूआत करने की सिफारिश करते है, जिसमें जानवरों, मूर्तियों, गुलदानों और गहनों की नाजुक नक्काशी शामिल है। इसका सबसे प्रसिद्ध नमूना और यकीनन संग्रहालय की सबसे मूल्यवान वस्तु, हरे और सफेद हरिताश्म के एक टुकड़े से निर्मित बॉक चॉय के ऊपरी भाग की एक अनमोल नक्काशीदार कलाकृति है जिसे जेडाइट कैबिज के नाम से भी जाना जाता है।

संग्रहालय के प्रसिद्ध कांसे के बर्तनों के संग्रह में 13वीं शताब्दी ई पू से भी पहले की घंटियों का एक सेट और नौवीं शताब्दी ई.पू. के समय के सैन्य कार्यों, विवाहों और भूमि अनुदानों की स्मृति में अंकित किए गए अनुष्ठानिक बर्तन शामिल है। आप सम्राट की तिजोरी, शाही परिवार और दरबार के विशिष्ट उपयोग और मनोरंजन की वस्तुओं का एक संग्रह भी देख सकते हैं; इसमें एक सुसज्जित नक्काशीदार खोखला हाथी दांत गोला शामिल है जिसके अंदर अन्य नक्काशीदार गोले लगे हुए है।

संग्रहालय में चित्र, सुलेख एवं कपड़े, और सुंदर सेलेडॉन और डिंग वेयर बर्तन भी शामिल है। हसेह सलाह देते है कि मुख्य आकर्षणों को देखने के लिए तीन घंटे का समय निकालें। यहाँ प्रवेश शुल्क (लगभग 12 डॉलर) लगता है, लेकिन पर्यटन नि:शुल्क है और अंग्रेजी में उपलब्ध है।

पर्यटक की तरह मज़े करें

कुछ समयनिकल कर ताइपेई की कुछ जानी-मानी जगहों पर जाएँ। मंदिरों के शहर में लुंगशान मंदिर विशेष है। 1738 में स्थापित, यह ताइपे के सबसे पुराने मंदिरों में से एक हैं, और यह विभिन्न लोक देवताओं और विश्वास प्रणाली की कहानी सुनाता है। फॉर्मोसन पशु क्षेत्र का दौरा करें। चिड़ियाघर में फॉर्मोसन काले भालू को देखिये, यह ताइवान का स्वदेशी जानवर हैं। दीहुआ स्ट्रीट पर टहलते हुए, एक ऐतिहासिक व्यापारिक जिला का मज़ा लें। यह बाजारों, चाय की दुकानों, कला दीर्घाओं और पारंपरिक वास्तुकला से भरपूर जगह है। तमसुई और कीलुंग नदियों के किनारे बाइक चलने का आनंद उठाये। आप पर्यटक स्थलों के करीब MTR स्टेशनों से YouBike के कियोस्क पर बाइक किराए पर ले सकते हैं।

© Rotary

रविशंकर डाकोजु ने की चार भारत-पाक रोटरी परियोजनाओं की घोषणा

वी मुत्तुकुमारण

गैर-सरकारी स्तर पर भारत-पाकिस्तान संबंधों को बढ़ावा देते हुए, रोटेरियन रविशंकर डाकोजु, रोटरी क्लब बैंगलोर, रो ई मंडल 3190, जिन्होंने TRF को ₹100 करोड़ दान किए हैं, ने चार संयुक्त कार्यक्रमों की घोषणा की, जो पड़ोसी देश के रोटेरियंस के साथ फैलोशिप और सांस्कृतिक संबंधों को बढ़ावा देंगे। हमारे पड़ोसी देश, रो ई मंडल 3272, पाकिस्तान द्वारा आयोजित एक वेबिनार में 'बॉर्डरलेस वर्ल्ड एँड पीस' पर अपने भाषण को देते हुए, उन्होंने रोटेरियनों को एक शांतिपूर्ण पृथ्वी की खातिर, एक साथ आने के लिए आहवान किया और कहा, रक्षा पर भारी धन खर्च करने की बजाय, इसका उपयोग बेहतर शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा और बुनियादी ढाँचे के निर्माण में किया जाना चाहिए।

डाकोजु ने कहा, DG नागेंद्र प्रसाद और IPDG डॉ समीर हरियानी, मेरी सीमा-पार की पहल में मेरा नेतृत्व कर रहे हैं। मुझे मेरे रोटरी संरक्षक, PDG सुरेश हरि सहायता प्रदान करते हैं, जो रो ई मंडल 3272, के PDG मीर आरिफ अली के साथ समन्वय कर रहे हैं।

TRF को पाकिस्तान से अधिक PHF पाने में मदद करने के डाकोजु के सुझाव पर, रो ई मंडल 3190, में संचित पॉइंट्स का दान करते हुए, PDG सुरेश हरि ने अपने और अपने दोस्तों के व्यक्तिगत खातों से दान करके, पॉइंट्स को 100,000 तक पहुँचाने पर सहमति व्यक्त की। कुछ भाग, वास्तविक देने और कुछ भाग, पॉइंट्स हस्तांतरण के माध्यम से, इन सभी पॉइंट्स को रो ई मंडल 3272 में रोटेरियन के योगदान के रूप में PHF बनने के लिए दिया जा सकता है, यह भाव दोनों देशों के बीच एक अद्भुत बंधन को स्थापित करेगा, तथा TRF एवं रोटरी भाईचारे, दोनों को मजबूत करेगा, दकूजो ने कहा।

इसके अलावा, 'पाओला दकूजो रविशंकर फाउंडेशन' की ओर से, लाहौर और आसपास के इलाकों में कोविद प्रभावित परिवारों की मदद के लिए, फल और सब्जियाँ बेचने के मकसद से, 100 मोबाइल गाड़ियाँ खरीदने में मदद करने के लिए, 10,000 डॉलर की राशि, रो ई मंडल 3232 को दान की जाएगी। आरिफ अली ने लाभार्थियों की सूची तैयार कर ली है और यह कार्यक्रम उन लोगों की मदद करेगा, जिन्होंने अपनी नौकरी खो दी है या कोविद प्रभाव के कारण संघर्ष कर रहे हैं, उन्होंने कहा।

तीसरे, उनकी जिला टीम सुबह और शाम भारतीय तीर्थ यात्रियों के लिए करतारपुर में 'गुरुद्वारा दरबार साहिब' में ठहरने का प्रयास कर रही है, ताकि रोटेरियन को पाकिस्तान में अपने समकक्षों के साथ अधिक बातचीत करने का अवसर मिले। वर्तमान में, एक दिन में सिख मंदिर जाने वाले तीर्थ यात्रियों की अधिकतम संख्या पर प्रतिबंध हैं और उन्हें केवल कुछ घंटों के लिए वहाँ रहने की अनुमति है।

24 अक्टूबर को बेंगलुरु से अमृतसर पहुँचने और फिर पाकिस्तानी रोटेरियंस के साथ झंडे और विचारों के आदान-प्रदान के लिए, सीमा पर पहुँचने के उद्देश्य से एक 'रोटरी शाँति-रैली' निकाली जा रही है। DG प्रसाद, रो ई मंडल 3272 और भारतीय अधिकारियों के साथ, बिना किसी अड़चन के शाँति-रैली करने के लिए समन्वय कर रहे हैं। अपने बचपन के दिनों को याद करते हुए, रविशंकर ने चुटकी लेते हुए कहा, जब अन्य छात्र कक्षा में नोट्स ले रहे होते, तब मैं तब सो रहा होता था। कक्षा 10 की परीक्षा में न्यूनतम 32 प्रतिशत के साथ पास होने से पहले मैं तीन बार फ़ेल हुआ था।

लेकिन वह बड़े सपने देखा करते थे, मैं माउंट एवरेस्ट पर चढ़ने का सपना भी देखता था, पर एक पहाड़ पर चढ़कर वह समाप्त हो गया। लेकिन मैं कई लोगों को तलहटी पर देखता हूँ, क्योंकि वे बड़े सपने देखने की क्षमता नहीं रखते हैं। सपने देखे बिना, तो मैं एक मरा हुआ आदमी बनकर रह जाऊँगा।

रविशंकर के लिए ''धर्म बहुत ही व्यक्तिगत है, यद्यपि मैं एक हिंदू के रूप में पैदा हुआ, पर मैंने एक रोमन कैथोलिक, पाओला रॉड्रिग्ज से शादी की और गौरवान्वित महसूस किया। मैं भगवान से प्रार्थना करता हूँ, कि मैं अपने अगले जन्म में भी उनसे ही शादी कर सकूँ।'' उनका दर्शन सर्व धर्म सम्मानत्व है (सभी धर्मों का सम्मान करना) ''मैं एक बहु-धर्मीय घर में रहता हूँ और अब तक, हमारे बीच कोई बहस या लड़ाई नहीं हुई है। इसके विपरीत, हम विभिन्न त्योहारों को मनाने का आनंद उठाते हैं।'' विनोबा भावे का हवाला देते हुए उन्होंने कहा कि राष्ट्र-राज्यों की अवधारणा पुरानी है, क्योंकि हम भविष्य में एक सीमाहीन राज्य की ओर बढ़ेंगे।'' उन्होंने रक्षा पर खर्च की जा रही बड़ी राशि, जोकि ''हमारे सकल घरेलू उत्पाद का लगभग 15.5 प्रतिशत है, जबकि संसाधन दुर्लभ हैं,'' को कम करने की वकालत करते हुए कहा कि इस धनराशि का हमारे रहने की स्थिति में सुधार के लिए बेहतर उपयोग किया जा सकता है। ''मुझे शर्म आती है कि देश के नाम पर, हम एक दूसरे से लड़ते हैं और मरते-मारते हैं। क्या यही सभ्यता है, जिसमें हम जानवरों से बेहतर नहीं हैं?''

ज़कात और CSR

भारत ने अप्रैल 2014 में CSR अधिनियम पारित किया और पाकिस्तान ने मई 2017 से CSR

का पालन शुरू किया, जिससे कंपनियों को अपने वार्षिक लाभ का कम से कम 2 प्रतिशत चैरिटी और परोपकारी गतिविधियों के लिए आबंटित करना अनिवार्य हो गया। इस्लाम ने 1,400 साल पुराने फैसले के तहत मुसलमानों को ज़कात का आदेश दिया था, कि वे अपने कुल धन का ढाई प्रतिशत, नेक कामों के लिए दान करें। रविशंकर ने कहा, ''यह ज़कात दायित्व, दिल और आत्मा को शुद्ध करता है और मानव जाति के लिए सामाजिक-आर्थिक लाभ है। एक तरह से, ज़कात जो मुसलमानों के लिए कहता है, वही रोटरी फाउंडेशन, रोटेरियंस के लिए कहता है, कि सामुदायिक कल्याण परियोजनाओं के लिए अपने धन का एक छोटा प्रतिशत दान दें,उन्होंने कहा।''

रोटरी SAARC वेबिनार

रोटरी क्लब औरंगाबाद मेट्रो, रो ई मंडल 3132, द्वारा होस्ट किए गए 'बेहतर भविष्य के लिए संयुक्त दक्षिण एशिया' विषय पर आयोजित शांति-वेबिनार में, DG हरीश मोटवानी ने रोटरी नेताओं से गैर-सरकारी स्तर पर एक साथ आने के मकसद से, इस क्षेत्र के देशों के लिए, एक प्रणाली विकसित करने का आह्वान किया, 4,850 क्लबों के 1.75 लाख से अधिक रोटेरियंस और बड़े संसाधन और ज्ञान होने की वजह से, ''हम दक्षिण एशिया में, पूरे परिदृश्य को बदल सकते हैं, ऐसा उन्होंने कहा। पोलियो लगभग समाप्त हो जाने के कारण, लोगों ने रोटरी

एक तरह से, ज़कात जो मुसलमानों के लिए कहता है, वही रोटरी फाउंडेशन, रोटेरियंस के लिए कहता है, कि सामुदायिक कल्याण परियोजनाओं के लिए अपने धन का एक छोटा प्रतिशत दान दें।

में विश्वास विकसित किया है और यह SAARC शांति-सम्मेलन, रोटरी के अंतर्राष्ट्रीय सेवा के मुख्य उद्देश्यों में से एक को पूरा करता है, अर्थात, शांति-निर्माण और संघर्ष-समाधान।''

उन्होंने पारस्परिक विश्वास और सद्भावना को बढ़ावा देने के लिए, SAARC देशों के बीच RYE, 'न्यू जनरेशन सर्विस एक्सचेंज और रोटरी फ्रेंडशिप एक्सचेंज' लेने पर जोर दिया। रो ई मंडल 3271, के DG डॉ फरहान एस्सा अब्दुल्ला ने कहा, पाकिस्तान के बारे में गलत धारणाओं को दूर करने की आवश्यकता है, क्योंकि हम शांतिप्रिय लोग हैं और मैं रोटेरियनों को अपने मेहमानों के रूप में रहने, ''हमारे आतिथ्य का आनंद लेने और अपने सफ़र की अच्छी यादों को साथ ले जाने लिए आमंत्रित करता हूँ। अब्दुल्ला ने कहा कि क्षेत्रीय सहयोग, व्यापार और चिकित्सा विनिमय कार्यक्रम, दक्षिण एशियाई पड़ोसियों के बीच दोस्ती और विश्वास के पुलों का निर्माण करेंगे।''

श्रीलंका से, PDG जॉर्ज जेसुदासन, रो ई मंडल 3220, ने कहा कि दक्षिण एशिया के 1.8 बिलियन लोग, जो विश्व की जनसंख्या का 23 प्रतिशत है, के पास वैश्विक सकल घरेलू उत्पाद का केवल 4.3 प्रतिशत है। ''आज़ादी के बाद से, या तो एक-दूसरे के साथ युद्ध, नागरिक संघर्ष या धर्म, जाति और जातीयता के कारण सामुदायिक अशांति, इन मुद्दों पर सभी देश अलग-अलग तरह के संघर्षों से घिरे हैं।''

ऊपर बाएं से दक्षिणावर्त : DG तज़म अहमद, रो ई मंडल 3272, PDG मीर आरिफ अली, IPDG समीर हरियाणी, रो ई मंडल 3190 और रोटेरियन रविशंकर डाकोजु और उनकी पत्नी पाओला।

बैठक को संबोधित करते हुए, PDG तीर्थमान सकया और PDG केशव कुंवर, रो ई मंडल 3292, ने सांस्कृतिक आदान-प्रदान और आपसी सहयोग के माध्यम से वैश्विक शांति को बढ़ावा देने के, दक्षिण एशियाई लोगों की आवश्यकता पर जोर दिया। सकया ने कहा, ''हमें विशाल सामुदायिक परियोजनाओं को लागू करने के लिए एक समझ की आवश्यकता है, जो भूख, स्वास्थ्य देखभाल, शिक्षा और विकास के लक्ष्यों की बुनियादी ज़रूरतों को पूरा करेगी।'' सहयोग के क्षेत्रों को सूचीबद्ध करते हुए, बांग्लादेश से, PDG सलीम रेज़ा, रो ई मंडल 3281, ने कहा कि सांस्कृतिक प्रसार, रोटेरियंस के लिए एक SAARC खेल प्रतियोगिता, विन्स कार्यक्रम और चिकित्सा मिशन जैसी कुछ रोटरी परियोजनाएँ हैं, जो उपमहाद्वीप के लोगों को एकजुट करेंगी।

मुक्त व्यापार, कुंजी

रेज़ा के विचारों को प्रतिध्वनित करते हुए, PDG आलोक बिल्लोर, रो ई मंडल 3131, ने कहा, हम मामलों की बेहद उदासीन स्थिति में हैं, क्योंकि सुपरपावर गला-काटू प्रतियोगिता में अपने हथियार बेच रहे हैं, जिसके परिणामस्वरूप भू-राजनैतिक तनाव और प्रतिद्वंद्विता बढ़ रही है। शाँति-दलालों और सद्भावना-दूतों के रूप में रोटेरियंस संघर्षों को रोक सकते हैं। दक्षिण एशियाई मुक्त व्यापार क्षेत्र (संक्षेप में, SAFTA) एक अच्छी संकल्पना है, जो देशों के बीच व्यापार और वाणिज्य को बढ़ावा देगी। बिल्लोर ने RSAARC (R, रोटरी के लिए), के विचार पर तर्क देते हुए कहा कि, इसके माध्यम से रोटेरियनों संयुक्त परियोजनाओं पर, विचारों के आदान-प्रदान के लिए एक वार्षिक शिखर सम्मेलन कर सकते हैं। रोटेरियनों के लिए यह SAARC मंच, क्षेत्र में शाँति को बढ़ावा देने, व्यापार को प्रोत्साहित करने और सीमाओं के पार फैलोशिप, के एक मजबूत बंधन का निर्माण करने का प्रयास करेगा,'' उन्होंने कहा। भारत, पाकिस्तान, नेपाल, श्रीलंका और बांग्लादेश के लगभग 500 रोटेरियंस और रोटरेक्टर्स ने, रोटरी क्लब औरंगाबाद मेट्रो के पूर्व अध्यक्ष, चंद्रकाँत चौधरी द्वारा संचालित वेबिनार में भाग लिया। ■

Music & Melody

SPB, प्राकृतिक संगीत के जादूगर

एस आर मधु

उनकी आवाज़ कमाल की थी। यह मोहम्मद रफी की आवाज़ की तरह ऊँची, किशोर कुमार की आवाज़ की तरह नशीली, ए एम राजा की आवाज़ की तरह प्यार भरी या टी एम सौंदरराजन की तरह जोशीली हो सकती थी। ''जब भी मुझे कुछ अच्छा महसूस नहीं होता था, तब उनकी आवाज़ मुझमें नया जोश भर देती थी,'' सुहासिनी मणिरत्नम ने कहा।

पार्श्व गायक के रूप में उनका रिकार्ड चकित कर देने वाला था। उन्होंने 54 वर्षों से अधिक समय में 16 भाषाओं में 45,000 गीत गाए। इसके अलावा, उन्होंने 40 फिल्मों के लिए संगीत दिया, 45 फिल्मों में अभिनय किया, और कई शीर्ष अभिनेताओं के लिए तेलुगु में डब किया; वह विविध रूप से बेन किंग्सले (*गांधी* के तेलुगु संस्करण के लिए), अनिल कपूर, रजनीकांत और गिरीश कर्नाड की आवाज बनें। उन्होंने छह राष्ट्रीय पुरस्कार, छह फिल्मफेयर, 25 आंध्र प्रदेश नंदी, चार तमिलनाडु राज्य पुरस्कार और तीन कर्नाटक राज्य पुरस्कार जीते। उन्हें 2001 में पद्मश्री, 2011 में पद्म भूषण से सम्मानित किया गया था। उन्होंने एक कन्नड़ फिल्म के लिए एक ही दिन में 21 गाने, एक दिन

में 19 तमिल गाने और एक दिन में 16 हिंदी गाने रिकॉर्ड किए थे। उन्होंने दुनिया भर में हजारों लाइव शो किए, और हर बार भयंकर भीड़ इकट्ठा हुई - जिससे यह साबित होता है कि SPB का जादू अमेरिका या ब्रिटेन, सिंगापुर या मलेशिया में उतना ही सर चढ़ कर बोलता था, जितना भारत में। SPB राष्ट्रीय स्टारडम हासिल करने वाले दक्षिण के पहले गायक थे। वह सलमान खान की आवाज़ बने।

सफल गायक

तेलुगु फिल्म *शंकराभरणम* (1980) ने शास्त्रीय संगीत के गौरव और SPB की प्रतिभा एवं उनके जादू दोनों को प्रदर्शित किया। इस फिल्म में SPB के सभी नौ गाने (छह युगल गीत सहित) मंत्रमुग्ध कर देने वाले थे - इस फिल्म ने आम जन को शास्त्रीय संगीत से जोड़ा। दिलचस्प बात यह है कि SPB ने कभी कोई शास्त्रीय प्रशिक्षण नहीं लिया था। उन्होंने यह कमाल कैसे किया?

गीतकार वैरामुथु कहते है: ''एक शब्दकोश आपको एक अच्छा लेखक नहीं बनाता; शिक्षक और कक्षाएं आपको एक अच्छा गायक नहीं बनाते; यहाँ तक कि प्रतिभा भी अकेले कुछ नहीं कर सकती। लेकिन SPB ने प्राकृतिक संगीत प्रतिभा को अभिव्यक्ति, विस्मयकारी समझ और स्मृति के साथ मिश्रित किया।'' वैरामुत्तु ने आगे कहा कि जिस तरह शिवाजी गणेशन किसी चीज़ को बहुत तेजी से याद कर सकते थे, उसी तरह SPB उल्लेखनीय गति से धुनों को याद कर सकते थे। ''उन्होंने 15 मिनट में एक धुन को याद करके उसे 10 मिनट में गा दिया था,'' ए आर रहमान कहते है।

SPB ने रोटरी क्लब मद्रास द्वारा पिछले साल पेरम्बाक्कम में अत्याधुनिक सरकारी स्कूल स्थापित करने के लिए ₹7 करोड़ दान करने की पेशकश की थी।

''आपका गीत एक श्रोता को केवल तब ही प्रभावित कर सकता है जब आप अपने व्यक्तित्व को परिवर्तित करते है,'' वैरामुत्तु कहते है। आप एक प्रेमी, एक योद्धा, एक दार्शनिक, आसमान में उड़ने वाला एक पंछी बन सकते है। SPB ने उल्लेखनीय कुशाग्रता के साथ इस तरह के परिवर्तन को अपनाया।

रफी स्पर्श

उनका कहना है कि SPB रूमानी गीतों के राजा थे। ''इस तरह के गीतों के लिए उन्होंने अपनी नाक और गले के बीच से गाया, ताकि उनकी आवाज़ युवा लगे।'' दार्शनिक गीतों के लिए, वह अपनी आवाज़ को संशोधित करके उसमें अधिक परिपक्वता ला सकते थे। गायक सुरेंद्रन मेनन का कहना है कि SPB के गीतों की पटकथा में कभी-कभी विशेष शब्दों के ऊपर ''रफी'' शब्द लिखा होता था - ताकि उन्हें यह बात ध्यान रहें कि उन शब्दों को गीत में परिवर्तित करते समय उन्हें उनको रफी स्पर्श प्रदान करना है।

पियानोवादक अनिल श्रीनिवासन ने कहा कि SPB की आवाज़ ने भावनाओं के बहु-आयामी स्वरूप को प्रदर्शित किया। ''यहाँ तक कि खुशी भी कभी-कभी दुःख

एस जानकी और इलयराजा के साथ SPB.

सलमान खान के साथ SPB.

के साथ झलकती है – कुछ ऐसा जो उनकी आवाज़ शानदार ढंग से व्यक्त कर सकती थी।''

SPB कहते थे कि एक अच्छा गायक को एक अच्छा इंसान भी होना चाहिए। उनका खुद का दिल सोने जैसा और वाणी मीठी थी – जैसा कि मानो जैसे युवा गायक कहते है जिनके करियर को उन्होंने बढ़ावा दिया। पियानोवादक और एक रोटेरियन अनिल श्रीनिवासन कहते है कि SPB ने रोटरी क्लब मद्रास द्वारा पिछले साल पेरम्बाक्कम में अत्याधुनिक सरकारी स्कूल स्थापित करने के लिए ₹7 करोड़ दान करने की पेशकश की थी। यह 2015 की बाढ़ से प्रभावित एक समुदाय के बच्चों के लिए था। ''मैंने अमेरिका में अपने संपर्कों के माध्यम से ₹2 करोड़ जुटाने में मदद की। इस बारे में सुनकर, SPB ने मुझसे संपर्क किया और एक दान किया।''

वह कहते है कि SPB फैंस एसोसिएशन ने अच्छे कारणों के लिए खामोशी से करोड़ों रुपए दान करके कुछ शानदार सामुदायिक सेवा प्रदान की है।

शुरुआती जीवन

1946 में नेल्लोर जिले के कोनेटम्मापेटा गाँव के एक रूढ़िवादी ब्राह्मण परिवार और एक संगीतमय

SPB ने रफ़ी के गीतों को इतनी उत्कृष्टता के साथ गाया कि रफ़ी का स्वयं का परिवार चकित हो गया!

बाएं से : के वी महादेवन, पी सुशीला और SPB.

वातावरण में उनका जन्म हुआ था क्योंकि उनके पिता एक हरिकथा कलाकार थे। बचपन में वह एक इंजीनियर बनने की महत्वाकांक्षा रखते थे - "मेरे दिमाग में ₹250 प्रति माह के वेतन वाली एक राजपत्रित अधिकारी की नौकरी थी जिसे एक जीप चालक द्वारा लाया और ले जाया जाता है।" लेकिन PUC में मिली विफलता ने उनकी महत्वाकांक्षा को समाप्त कर दिया, और वह AMIE में अपनी किस्मत आजमाने के लिए मद्रास चले गए, जो एक पेशेवर प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम है।

18 साल की उम्र में, उन्होंने चेन्नई में एक शौकिया गायन प्रतियोगिता जीती। इसके चलते उन्होंने तेलुगु में अपना पहला फिल्मी गीत गाया। 1969 म|, MGR (जिनके अपने नियमित गायक टी एम सौंदरराजन के साथ कुछ मतभेद थे) SPB के एक तेलुगु गीत से बहुत प्रभावित हुए थे, जो तब एक अज्ञात युवा थे। परिणामस्वरूप: उन्हें MGR-जयललिता अभिनीत फिल्म आदिमाई पेन (1969) के लिए के वी महादेवन द्वारा रचित गीत *आईराम निलवे वा* गाने का मौका मिला। रिकॉर्डिंग से पहले SPB टाइफाइड से पीड़ित हो गए थे लेकिन एमजीआर ने उनके ठीक होने का इंतजार किया और उन्होंने वह गीत गाया।

शिवाजी गणेशन की फिल्म सुमती एन सुंदरी *के गीत की रिकॉर्डिंग के समय।*

यह सदाबहार सर्वश्रेष्ठ तमिल हिट गीतों में से एक बन गया, और एमजीआर ने SPB के प्रति प्रशंसा का भाव व्यक्त करने के लिए उन्हें सोने की अंगूठी भेंट की। इससे पहले, प्रसिद्ध संगीतकार एम एस विश्वनाथन ने उनसे फिल्म शांति निलयम के लिए जेमिनी गणेश और कंचना पर फिल्माए जाने वाला युगल गीत *इयरकई एन्नुम इलया कन्नी* गाया था। यह भी बहुत हिट हुआ था।

रिकॉर्डिंग से पहले SPB टाइफाइड से पीड़ित हो गए थे लेकिन एमजीआर ने उनके ठीक होने का इंतजार किया और उन्होंने वह गीत गाया।

ए आर रहमान के साथ।

SPB का करियर तेज़ी से ऊपर उठा। *शंकरभारणम* (1980), एक महान कर्नाटिक के जीवन पर आधारित थी जिसने भारतीय सिनेमा में इतिहास रचा। कर्नाटिक महारथी बालमुरली कृष्णा को गाने गाना था, लेकिन संगीतकार के वी महादेवन SPB से गवाना चाहते थे। यह एक बड़ी सफलता साबित हुआ। इस फिल्म को संगीतमयी और सिनेमाई विजय हासिल हुई। SPB ने *ओंकारा नादालु* जैसे उत्कृष्ट गीत की शानदार प्रस्तुति के लिए अपने अनेक राष्ट्रीय पुरस्कारों में से अपना पहला राष्ट्रीय पुरस्कार जीता। इसके अगले वर्ष, उन्होंने फिल्म एक दूजे के लिए के गीत *तेरे मेरे बीच में* के लिए अपना दूसरा राष्ट्रीय पुरस्कार जीता।

इस प्रकार, गायक, संगीतकार, पार्श्व गायक, अंतर्राष्ट्रीय स्टेज शो कलाकार, और सबसे बड़े

संगीतकार, अभिनेता, गायक और निर्देशक के रूप में उनका शानदार सफलता भरा सफर शुरू हुआ।

नियम तोड़ने वाले

अपनी व्यक्तिगत आदतों में, SPB एक नियम तोड़ने वाले थे। उन्हें आइसक्रीम, मिठाई, ठंडा पानी और ठंडे पेय, मसालेदार भोजन और दही खाना बहुत पसंद था। यह पूछे जाने पर कि क्या छाछ गले के लिए खराब होता है, उन्होंने जवाब दिया ''यदि आप छाछ नहीं पी सकते तो फिर गले का क्या उपयोग है?'' उन्होंने लगभग 30 वर्षों तक धूम्रपान किया, लेकिन अपनी बेटी पल्लवी के कहने पर इसे छोड़ दिया।

उन्होंने अपना वजन कम करने के लिए 2012 में बेरियाट्रिक सर्जरी करवाई और अपना वजन 126 किलो से घटाकर 95 किलो कर लिया।

ऊपर : रोटेरियन सुरेन्द्रन मेनन, जो खुद एक गायक हैं, SPB को सम्मानित करते हुए। यह चित्र रोटरी क्लब मद्रास साउथ द्वारा आयोजित एक फंडरेज़र कार्यक्रम में लिए गया था और चित्र में PRID P T प्रभाकर और PDG ISAK नाज़र शामिल हैं।

***नीचे** : एम एस विश्वनाथन और इलयराजा के साथ।*

कई साल पहले, उन्होंने अपने गले में से एक गांठ को हटाने के लिए एक सर्जरी करवाई जो उनके गायन पर असर डाल रही थी। लता मंगेशकर ने उन्हें सर्जरी न कराने की सलाह दी क्योंकि इसमें बहुत जोखिम था। लेकिन SPB नहीं माने क्योंकि वह दोबारा गायन शुरू करने के लिए बेताब थे। सौभाग्य से वह सर्जरी सफल रही।

संयोग से, SPB का हिंदी फिल्म कैरियर, *एक दूजे के लिए!* की एक रिकॉर्डिंग के दौरान लता की साड़ी पर चाय गिराने के साथ शुरू हुआ! वह व्यथित और परेशान थे, लेकिन लता ने उन्हें तसल्ली देते हुए कहा, ''चिंता मत करो, यह एक अच्छा शगुन है!''

SPB के कुछ पसंदीदा गाने

हालांकि SPB के गानों के इतने विशाल संग्रह में से कुछ गानों को चुनना बहुत कठिन है, फिर भी यहाँ मेरे कुछ पसंदीदा गानों की सूची है; अन्य गानों का उल्लेख इस लेख में पहले किया जा चुका है।

1. *दिल दीवाना - मैंने प्यार किया, 1989*
2. *एन्ना साथम इंदा नेरम - पुन्नागाई मन्नम, 1986*
3. *निलावे वा - मौना रागम, 1986*
4. *मन्निल इंधा कादलन्डरी - केलड़ी कनमनी, 1990*
5. *सुंदरी कंन्नाल ओरु सेदी-थलपदी, 1991*
6. *कादल रोजावे-रोजा 1992*
7. दीदी *तेरा देवर दीवाना - हम आपके है कौन, 1994*
8. *मलरे मौनमा - कर्ण, 1995*
9. *तंग तामरै मगळे - मिंसरा कनवु, 1997*

SPB पर पड़ने वाले प्रभाव

SPB मोहम्मद रफ़ी जैसे महात्माओं की पूजा करते थे। वह कहते थे, ''कोई भी उनका मेरे से बड़ा प्रशंसक नहीं हो सकता। जब मैं उनके गाने सुनता हूँ तो मुझे कुछ होता है।'' और SPB ने रफ़ी के गीतों को इतनी उत्कृष्टता के

साथ गाया कि रफ़ी का स्वयं का परिवार चकित हो गया! जब संगीतकारों ने उन्हें आज़माया, तो उन्होंने हमेशा रफ़ी के गीत गाए। उन्होंने कहा कि पर्दे पर नायिकाएं नायकों के साथ नहीं बल्कि मोहम्मद रफी, उनकी आवाज़ से प्यार करती थी। SPB की महत्वाकांक्षा रफी के साथ गाने की थी, लेकिन वह केवल एक बार रिकॉर्डिंग स्टूडियो में उनकी मूर्ति का अभिवादन करने और उसके पैर छूने में कामयाब हुए थे।

SPB कमल हसन के करीबी थे। कई वर्षों तक, इस गायक ने एक वार्षिक लाइव शो, *कमलुम नानुम* संचालित करने में उनकी मदद की। वह लगभग 110 फिल्मों के लिए कमल की तेलुगु आवाज बनें। कमल ने कहा: ''SPB मेरे जीवन, मेरे रोमांस, मेरी उदासी, मेरे पहले प्यार और शादी का हिस्सा रहे है।'' वह कमल ही थे जिन्होंने अपने दोस्त को समझाकर उन्हें एक अभिनेता बनने पर ज़ोर दिया।

संगीत जादूगर इलयराजा के साथ SPB की दोस्ती पांच दशक से अधिक पुरानी थी। उन्होंने *पायनंगल मुडिवदिल्लै, नेंजत्तै किल्लादे, राजपार्वै, वेट्री विळा, सलंगै ओली, दलपदी* जैसी फिल्मों के लिए इलियाराजा के संगीत बैनर तले कुछ 2,000 गाने गाए। तीन साल पहले इलियाराजा की रचनाओं के लिए रॉयल्टी के सवाल पर दोनों दोस्तों के मध्य तकरार हो गई। इलियाराजा ने SPB को कानूनी नोटिस तक भेज दिया। हालांकि, बाद में वे एक हो गए। उन दोनों के बेटे करीबी दोस्त है और फिल्म उद्यमों में सहयोगी है।

SPB ने जेसुदास को अपना गुरु माना। वे अक्सर भारत और विदेशों में लाइव शो में एक साथ गाते थे। ''आज वह एक साधु, एक योगी की तरह दिखते है,'' SPB ने हाल ही में कहा था। 2017 में सिनेमा में अपने 50 साल पूरे करने पर एक अंतर्राष्ट्रीय दौरे पर जाने से पहले, SPB ने जेसुदास के पैर धोए और पाद पूजा कार्यक्रम किया। जेसुदास पेरिस में एक अवसर को याद करते है जब वह और SPB देर शाम होटल लौटे थे। वह बहुत भूखे थे और खाने के लिए कुछ भी नहीं था। तभी SPB ''रूम सर्विस'' कहते हुए, चावल के एक कटोरे के साथ आए। उसे घर की बनी पूड़ी और दही के साथ खाया गया। यह बहुत सुंदर था, और मैं उस छोटे से रात्रिभोज को कभी नहीं भूलूंगा, जेसुदास ने कहा।

यहाँ तक कि खुशी भी कभी–कभी दुःख के साथ झलकती है – कुछ ऐसा जो उनकी आवाज़ शानदार ढंग से व्यक्त कर सकती थी।

पियानोवादक **अनिल श्रीनिवासन**

गीतकार वैरामुत्तु ने SPB के लिए कुछ 1,500 गीत लिखें और दोनों ने अक्सर एक दूसरे की तारीफ करने के साथ ही हल्की-फुल्की टांग भी खींची। कुछ साल पहले एक लाइव शो में, SPB ने वैरामुत्तु के एक गीत के बारे में कहा आप यह तब तक नहीं लिख सकते जब तक ''आप कम से कम एक बार प्यार में नाकाम न हुए हों।'' SPB ने गीत के आधार पर गाना गाया, और वैरामुत्तु ने टिप्पणी की आप इस तरह तब तक नहीं गा सकते जब तक कि आप कम से कम दो बार प्यार में नाकाम न हुए हों।

पाडुम निला (गायक चंद्रमा, MGR द्वारा SPB को दी गई एक उपाधि) अब शांत हो गया है, लेकिन उसकी चमक हमेशा बरकरार रहेगी।

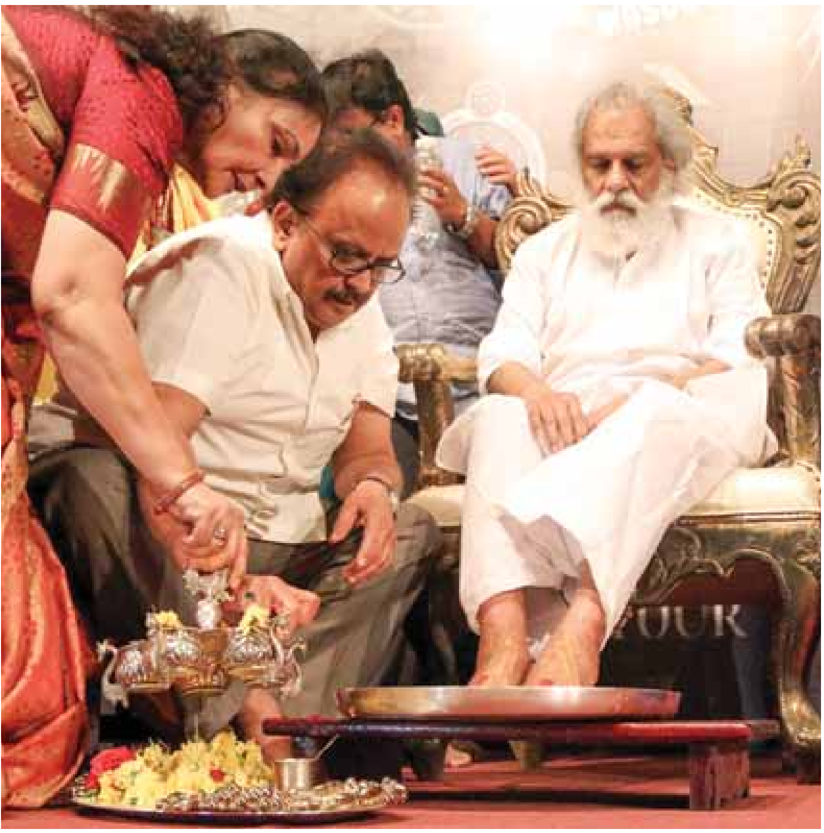

SPB और उनकी पत्नी, के जे जेसुदास की पादा पूजा करते हुए।

एस कृष्णप्रतीश द्वारा रूपरेखा

एक अमूल्य आवाज़

उषा कुमार

जब संगीत के दिग्गज एस पी बालसुब्रमण्यम का निधन हो गया, जो अपने पीछे, 42,000 गीतों की विरासत छोड़ गए है, तो विभिन्न लोगों ने इस भारी नुकसान की खबर को विभिन्न तरह से सहन किया। जहाँ कुछ लोग इस महामारी के बावजूद भी उनके घर चले गए, वहीं दूसरे लोग उनके गीत संग्रह के सुंदर गीतों को सुनने के लिए टेलीविजन से चिपके रहे। ऐसा लगा मानो ऐसा कोई भी व्यक्ति नहीं था जिसे उन्होंने छुआ न हो! उनकी महानता उनकी सादगी में निहित है। हमेशा मीठा बोलने वाले इस महान व्यक्ति ने जो कुछ भी हासिल किया उसे हासिल करने में एक साधारण व्यक्ति को कम से कम पाँच जन्म लगेंगे।

मैंने सबसे पहले श्रीपति पंडिताराध्युला बालसुब्रह्मण्यम का नाम 1960 के दशक के अंत में सुना था, तब अधिकांश दुनिया इस नाम को नहीं जानती थी। यह मद्रास केरल समाजम की एक संगीतमय शाम थी, जहाँ उस समय के महात्मा, के जे येसुदास, पी जयचंद्रन, पी सुशीला, एस जानकी और बी वसंता गा रहे थे। मुझे लगता है कि ऑर्केस्ट्रा का संचालन आर के शेखर (ए आर रहमान के पिता) ने किया था। सभी महानुभावों ने पहले गाया और अंतराल के बाद, यह घोषणा की गई कि एक नया गायक ए एम राजा के कुछ गीत पेश करेगा। उस नए गायक का परिचय एक इंजीनियरिंग के छात्र बालसुब्रमण्यम के रूप में किया गया था। उनके द्वारा एमजीआर के लिए रिकॉर्ड किए गए एक गीत का भी उल्लेख किया गया।

मुझे बाद में पता चला कि एमजीआर कितने विचारशील थे जब उन्होंने यह तय किया कि उनके लिए कौन गाएगा। उनके गीतों ने उनकी फिल्मों की सफलता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और किसी भी हालत में उनके लिए कोई ऐसा व्यक्ति नहीं गा सकता था जिसमें सामर्थ्य न हो। इस अपरिचित गायक का गान दोषरहित था और हॉल में मौजूद सभी लोगों ने कहा था कि इनका भविष्य उज्ज्वल होगा। उस लड़की के लिए जो तब केवल 12 साल की थी, यह संगीत की एक खूबसूरत शाम थी, जहाँ वो सभी गाने गाए जा रहे थे जो उसने घर पर 33 RPM पर सुने थे। लेकिन इतनी कम उम्र में ही उसके दिमाग में उस नए गायक का नाम अंकित हो गया था।

उस शाम के छह महीनों के भीतर, दो फिल्में और दो गाने जारी किए गए और एक सनसनी का जन्म हुआ। दुनिया भर के तमिल संगीत प्रेमियों ने एसपीबी को जाना। जहाँ *आईराम निलावे वा* गीत युवा एमजीआर और जिंदादिल जयललिता पर फिल्माया गया था, वहीं *इयर्कई एन्नुम इलैय कन्नी* गीत में स्टाइलिश जेमिनी गणेशन और खूबसूरत कंचना थी। 23 वर्षीय एसपीबी ने भारतीय पार्श्व गायन की दुनिया में अपनी छाप छोड़ दी थी। पहले गीत के लिए वी महादेवन ने संगीत दिया था और दूसरे गीत के लिए एम एस विश्वनाथन ने। इन दोनों महारथियों के लिए गाना गाने के बाद, इस नौजवान ने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा।

मैं संगीत की विशेषज्ञ तो नहीं हूँ, परंतु मैं यह साझा कर सकती हूं कि मेरे काम का सप्ताह उनके द्वारा असीम भक्ति भाव और समर्पण के साथ प्रस्तुत की गई *शिव स्तुति* के साथ शुरू होता है। जब वह भावम और भक्ति की शैली के गाने प्रस्तुत करते है तो उनका कोई मेल नहीं होता। कोई भी ईश्वर इससे अछूता नहीं रह सकता!

54 वर्षों में वह संगीत उद्योग में छा गए थे, दुनिया के साथ-साथ फिल्म उद्योग भी बदल गया था। लेकिन जहाँ तक एसपीबी का सवाल है,

एस पी बालसुब्रमण्यम और संगीत निर्देशक इलयराजा

जब वह भावम और भक्ति की शैली के गाने प्रस्तुत करते है तो उनका कोई मेल नहीं होता। कोई भी ईश्वर इससे अछूता नहीं रह सकता!

उनकी आवाज़ हमेशा एक जैसी ही रही। उनमें अपनी आवाज़ को उस नायक के अनुरूप बदलने की क्षमता थी जिसके लिए वह गाने गाते थे। हम टीएमएस से विस्मित थे जब वह उस युग के दो नायकों, एमजीआर और शिवाजी गणेशन के लिए अपनी आवाज बदलते थे। हालाँकि जब एसपीबी आए तो, वह केवल उस पीढ़ी तक ही सीमित नहीं रहें, उन्होंने रजनीकांत और कमल हसन और फिर विजय, अजित और बाकी लोगों के लिए अपना कौशल दिखाना जारी रखा। ये तमिल फिल्म उद्योग के कुछ नाम है और फिर अन्य सभी उद्योगों में असंख्य नायक है जिनके लिए उन्होंने गाया था। इस तरह की बहुमुखी प्रतिभा वास्तव में ईश्वर का दिया हुआ वरदान है।

एसपीबी को एक परोपकारी या दूसरों की मदद करने वाले व्यक्ति के रूप में भूल जाइए। केवल उन साधारण मनुष्यों की संख्या के बारे में सोचिए जो उनके द्वारा गाए गए खूबसूरत गीतों की बदौलत हीरो बन गए। 1980 के दशक के उत्तरार्ध और 90 के दशक की शुरुआत में एक दौर था जब गाने किसी फिल्म की सफलता में मुख्य भूमिका निभाते थे। एक वीडियो देखने के दौरान मुझे पता चला कि एसपीबी ने इलयराजा और उनके भाइयों, और भारतीराजा को इस उद्योग में पसंद किए जाने में कितनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। बेशक वे बहुत प्रतिभाशाली थे और उन सबने अपनी उत्कृष्टता साबित की। लेकिन वो पहला ब्रेक हासिल करना हमेशा से बहुत मुश्किल था। जब शतरंज के जादूगर विश्वनाथन आनंद ने अपनी चेन्नई कोल्ट्स टीम के लिए पहले प्रायोजक के रूप में एसपीबी की भूमिका को मान दिया, तो मैं चकित रह गया। वो ऐसे व्यक्ति थे जो चुपचाप उन सभी को प्रोत्साहित करते थे जिनमें उन्हें कुछ कर दिखाने और सफलता पाने की लालसा दिखाई देती थी।

हम केवल उस महान गायक को ही याद नहीं करेंगे जिन्होंने *पाडुम निला* जैसा उपनाम हासिल किया था, बल्कि उस एक अच्छे इंसान को भी याद करेंगे जो इस ग्रह पर छा गए थे। हम वास्तव में भाग्यशाली है जो हमने उनके इस समय को जिया है। वह जानते थे कि वह कितने भाग्यशाली है जब उन्होंने कहा कि, "मैं केवल सुरों को वैसे ही गाता हूं जैसे वे लिखे होते है लेकिन यह तो वह विधाता है जो मेरी आवाज़ के रूप में सामने आता है।"

जब तक इस दुनिया में संगीत रहेगा, तब तक एसपीबी की आवाज़ हमें मंत्रमुग्ध करती रहेगी।

रोटरी क्लब मद्रास मिडटउन,
रो ई मंडल 3232 की सदस्य है।

TRF की मदद से अच्छे कार्य

रोटरी ने कलियानपुरा में 'हेमोडायलिसिस' सुविधाओं का विस्तार किया

टीम रोटरी न्यूज़

PDG सदानन्द चात्रा, मशीन का उद्घाटन करते हुए। (बाएं से) AG देवदास शेट्टी, PDG अभिनन्दन शेट्टी, रोटरी क्लब कलियानपुरा के अध्यक्ष डेसमंड एम वाज़ और DG राजाराम भट।

रोटरी क्लब कलियानपुरा, रो ई मंडल 3182 ने, कर्नाटक के उडुपी से 6 किमी दूर, कलियानपुरा के गोरेटी अस्पताल में तीन 'हेमोडायलिसिस' मशीनों को सौंपा।

क्लब के अध्यक्ष डेसमंड एच वाज ने कहा कि TRF, रोटरी क्लब चेस्टर काउंटी, रो ई मंडल 7450, और रोटरी क्लब स्मिथफील्ड, रो ई मंडल 7410, यूएस ने वैश्विक अनुदान के माध्यम से ₹29 लाख (40,871 डॉलर) का सहयोग किया था। डीजी राजाराम भट ने, पीडीजी सदानंद चतरा और पीडीजी अभिनंदन शेट्टी के साथ, क्लब के सदस्यों तथा जिले के अधिकारियों की उपस्थिति में, मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ जॉयस जेम्स और नेफ्रोलॉजिस्ट डॉ राघवेंद्र नायक को मशीनें, जेनसेट, आरओ वाटर प्यूरीफायर, एयर कंडीशनर और अस्पताल की चारपाइयाँ सौंपीं। ■

सदस्यता वृद्धि, वैश्विक अनुदान परियोजनाओं के लिए बड़ा लक्ष्य

राजेश अग्रवाल

इंजीनियरिंग उपकरण, रोटरी क्लब कोटा, रो ई मंडल 3054

उन्हें सदस्यता में वृद्धि होने का भरोसा है जिससे उनके मंडल में अधिक धन जुटाने और उच्च-स्तरीय परियोजनाओं को करने में मदद मिलेगी। वर्तमान में, मंडल के 139 क्लबों में 6,389 रोटेरियन है। ''हम 32 क्लब शुरू करेंगे और महिला सदस्यता में पांच प्रतिशत की शुद्ध वृद्धि के साथ 1,500 से अधिक नए सदस्यों को शामिल करेंगे। वर्तमान में, हमारे कुल सदस्यों में से 19 प्रतिशत हिस्सा महिलाओं का है,'' राजेश अग्रवाल कहते है। उन्हें मंडल में 50 नए रोटरेक्ट क्लब, 30 से अधिक नए इंटरैक्ट क्लब और 30 नए आरसीसी शुरू करने का भरोसा है।

सभी क्लबों को एक भव्य तरीके से RYLA का संचालन करने के निर्देश दिए गए है। 100 सरकारी स्कूलों को Happy Schools बनाया जाएगा, हाथों की धुलाई के 500 स्टेशन स्थापित किए जाएंगे और उच्चतर माध्यमिक स्कूलों (कक्षा 12 तक) में ई-लर्निंग कक्षाएं स्थापित की जाएंगी। इसके अलावा, इन स्कूलों में 50 लिंग प्रथक शौचालय बनाए जाएंगे। उन्होंने जयपुर के सवाई मान सिंह अस्पताल में एक स्किन बैंक स्थापित करने के लिए एक वैश्विक अनुदान के लिए आवेदन दिया है। क्लब मासिक धर्म स्वच्छता सेमिनार और जागरूकता सत्र आयोजित करेगा और ग्राम पंचायतों एवं प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों में सैनिटरी वेंडिंग मशीन स्थापित की जाएगी,'' वे समझाते है।

दस मशीनों वाला एक डायलिसिस सेंटर न्यू मेडिकल कॉलेज अस्पताल, कोटा, में स्थापित किया जाएगा, वहीं 150,000 डॉलर की वैश्विक अनुदान परियोजनाएं अनुमोदन मिलने की प्रतीक्षा कर रही है, हम आने वाले महीनों में 500,000 डॉलर से अधिक की कीमत वाली ऐसी परियोजनाएं प्रस्तुत करेंगे जिन्हें वैश्विक अनुदान की आवश्यकता है। टीआरएफ में देने के लिए, उनका लक्ष्य 1 मिलियन डॉलर का है, जिसमें से 200,000 डॉलर वार्षिक निधि के लिए होंगे। 2000 में, वह तत्कालीन क्लब अध्यक्ष चंद्रकांत मेहता से प्रेरित होकर रोटरी क्लब कोटा में शामिल हुए, जिन्होंने रोटरी में उनके शुरुआती दिनों में उनका मार्गदर्शन किया।

आपके गवर्नरों से मिलिए

वी मुत्तुकुमारण

कोविड ने हमें रोटरी परियोजनाओं में उत्कृष्टता प्राप्त करने का एक उत्तम वर्ष दिया है

संदीप कदम

बाल चिकित्सक, रोटरी क्लब ठाणे नॉर्थ एंड, रो ई मंडल 3142

आशावाद की एक मजबूत भावना के साथ, वह मंडल गवर्नर के अपने कार्यकाल को ‘दिव्य वर्ष’ कहते है क्योंकि कोविड महामारी ने हमें सिखाया है कि कैसे प्रतिकूल परिस्थितियों में परियोजनाओं की योजना बनाकर उन्हें कार्यान्वित किया जा सकता है। चुनौतियाँ बहुत है, लेकिन हम रुकने वाले नहीं है, क्योंकि हमने हमारी सोच और सेवा के तौर-तरीकों को हमेशा के लिए बदल दिया है,'' डॉ संदीप कदम कहते है। उन्होंने अपने क्लबों और रोटेरियनों को 'जोश' - जॉय ऑफ सरविंग यूमैनिटी - नाम दिया है जिसका अर्थ है मानवता की सेवा करने की खुशी।

कदम ने वेबिनार के माध्यम से बड़े पैमाने पर मादक पदार्थों की लत को रोकने का बीड़ा उठाया है। रो ई अध्यक्ष होल्गर नेक और आरआईपीई शेखर मेहता की उपस्थिति में, *Disconnect* शीर्षक वाला एक वेबिनार आयोजित किया गया था जिसमें पूर्व क्रिकेटर कपिल देव के साथ एक सत्र शामिल था। सोशल मीडिया के माध्यम से, वेबिनार 79,000 लोगों तक पहुंचा। अगले चरण में, मंडल 16,000 स्वास्थ्य पेशेवरों तक पहुंचा। ''नशामुक्ति के लिए एक स्वयंसेवी बल स्कूल और कॉलेज के एक लाख छात्रों को शामिल करेगा। एक रोटरी हेल्पलाइन परामर्श भी प्रदान करेगी।''

गाँव गोद लेने का एक कार्यक्रम शुरूआत में 60 गाँवों को कवर करेगा। जब उन्होंने 1 जुलाई को डीजी के रूप में पदभार संभाला, तब मंडल में 3,206 सदस्यों के साथ 90 क्लब थे, और वह अपने कार्यकाल के दौरान ''एक बड़े पैमाने पर विकास'' करना चाहते है। टीआरएफ में देने को लेकर, वह पिछले वर्ष के आंकड़े को पार करने को लेकर आश्वस्त है।

वह एक मरीज, एक रोटेरियन के एक कर्मचारी का सफलतापूर्वक इलाज करने के बाद रोटरी में शामिल हो गए, जिसके दाहिने पैर का टखना टूट गया था और ''काफी खून बह जाने के कारण वह मौत की कगार पर था।'' उनकी निस्वार्थ सेवा को देखते हुए, उन्हें एक रोटेरियन बनने के लिए आमंत्रित किया गया और वह अप्रैल 1996 में रोटरी क्लब ठाणे नॉर्थ एंड के साथ जुड़े।

वह 25,000 रोटरेक्टरों को जोड़ना चाहते है

नल्ला वेंकटा हनमंत रेड्डी

व्यापार, रोटरी क्लब अरमूर, रो ई मंडल 3150

फ्रेंडशिप पेयरिंग प्रोजेक्ट पर जोर दिया जा रहा है जिसमें एक मजबूत क्लब एक कमजोर क्लब के साथ साझेदारी करता है ताकि परियोजनाओं का संयुक्त निष्पादन किया जा सकें। ''मैंने विचारों की संस्कृति के आदान-प्रदान के लिए पेयरिंग क्लबों की पहचान की है। डीजी प्रशस्ति पत्र प्राप्त करने के लिए यह परियोजना बहुत जरूरी है,'' नल्ला वेंकट रेड्डी कहते है।

रेड्डी का ड्रीम प्रोजेक्ट सार्वजनिक स्थानों पर स्तनपान कियोस्क स्थापित करना है। ''आठ कियोस्क स्थापित किए गए थे और 57 क्लबों ने सही मायनों में इस मातृत्व परियोजना को शुरू किया है।'' वह 700 नए सदस्यों को शामिल करना चाहते है ताकि वर्तमान सदस्य संख्या को 3,311 से बढ़ाकर 4,000 के पार ले जाया जा सकें। वह मौजूदा 88 क्लबों में 25 नए क्लब; मौजूदा 33 रोटरेक्ट क्लबों में 250 नए रोटरेक्ट क्लब जोड़ना चाहते है; इस प्रकार जून 2021 तक 25,000 अतिरिक्त रोटरेक्टर जोड़ना चाहते है।

पचास रोटेरियन, चल्ला रोटरी ब्लड बैंक में नवीन रूप से खोले गए कोविड प्लाज्मा बैंक का निरीक्षण करते है। रोटरी क्लब गुंटूर एक वैश्विक अनुदान के माध्यम से एक मोबाइल रोटरी ब्लड बैंक को रक्त घटकों की आपूर्ति करेगा। सिकंदराबाद के रोटरी डायलिसिस केंद्र को 1,44,000 डॉलर की वैश्विक अनुदान परियोजना के माध्यम से छह नई मशीनें मिलेंगी। रेड्डी कहते है, ''हम इस साल एक वैश्विक अनुदान के माध्यम से 26 हैप्पी स्कूल परियोजनाओं को पूरा करेंगे।'' TRF को देने हेतु, उनका लक्ष्य 1 मिलियन डॉलर का है। 2002 में, जब तत्कालीन डीजी रवि वाडलामनी रोटरी क्लब अरमूर का दौरा कर रहे थे, तो रेड्डी को रोटरी में शामिल होने के लिए गवर्नर ने ही प्रेरित किया था।

सिलीगुड़ी में प्रवासी परिवारों के लिए एक रोटरी नगर की योजना

सुभाशीष चैटर्जी

सॉफ्टवेयर डेवलपमेंट, रोटरी क्लब सिलीगुड़ी, रो ई मंडल 3240

अगर सब चीजें योजनाबद्ध तरीके से चली, तो पूर्वोत्तर से मुख्य भूमि को जोड़ने वाले एक महत्वपूर्ण जंक्शन, सिलीगुड़ी में एक रोटरी नगर स्थापित किया जाएगा, और इसमें प्रवासी परिवारों के लिए 1,000 से अधिक घर होंगे। ''हम भूमि अधिग्रहण करने के लिए पश्चिम बंगाल सरकार के साथ बातचीत कर रहे है। सुभाशीष चैटर्जी समझाते है, इसमें आवासीय स्थान, एक स्कूल, एक प्राथमिक स्वास्थ्य देखभाल केंद्र और एक कौशल विकास केंद्र होगा।''

एक मार्मिक कृत्य के रूप में, रोटेरियनों ने 1,217 शिक्षकों के घरों का दौरा करके उन्हें शिक्षा सम्मान पुरस्कार प्रदान किया, ''क्योंकि उनमें से अधिकांश वृद्ध है और महामारी के दौरान बाहर नहीं जा सकते।'' सिल्चर में एक ब्लड बैंक मिजोरम, असम की बराक घाटी और बांग्लादेश के सिलहट जिले के लोगों को लाभान्वित करेगा। एक बांग्लादेशी क्लब के साथ ''साझेदारी में 150,000 डॉलर मूल्य की इस वैश्विक अनुदान परियोजना को चार सिल्चर क्लबों द्वारा कार्यान्वित किया गया था। इस परियोजना के लिए चार सिलचर क्लबों ने 50,000 डॉलर का योगदान दिया था।'' एक वैश्विक अनुदान परियोजना के माध्यम से मंडल डिब्रूगढ़ (असम) और शिलांग में एक कोविड आईसीयू की स्थापना कर रहा है। इसके बाद, वह एक वैश्विक अनुदान के माध्यम से एक ग्रीवा टीकाकरण परियोजना करने की योजना बना रहे है। टीआरएफ में देने के लिए, उनका लक्ष्य 400,000 डॉलर का है; सदस्यता में, वह 25 प्रतिशत विकास का लक्ष्य रखते है, जिसमें महिलाओं की संख्या दोगुनी होकर 20 प्रतिशत हो जाती है। उनके कार्यकाल में मंडल में 12 नए क्लब, छह सैटेलाइट क्लब और 20 रोटरेक्ट क्लब भी होंगे। रोटरी से उनका परिचय एक पारिवारिक मित्र, एक रोटेरियन के माध्यम से हुआ था, जिन्होंने उन्हें जलपाईगुड़ी में एक डीजी कार्यक्रम हेतु आमंत्रित किया था और ''मुझे 1988 में एक रोटारेक्ट क्लब का चार्टर अध्यक्ष बनाया गया था।''

उनका ध्यान हैप्पी स्कूलों पर हैं

फकीर चरण मोहांटी

केमिकल निर्माता, रोटरी क्लब राउरकेला मिडटाउन, रो ई मंडल 3261

चुनौतियों के बावजूद, वह इस रोटरी वर्ष में सदस्यता वृद्धि पर जोर दे रहे है। 1 जुलाई को 72 क्लबों में 2,620 रोटेरियन थे पर उनका लक्ष्य इसमें वृद्धि करके इसे 3,500 रोटेरियन और 87 क्लब करने का है। पिछले वर्ष 11 क्लबों से बढ़कर, 25 रोटरेक्ट क्लबों में रोटरेक्ट की वर्तमान संख्या 250 से बढ़कर 350 से अधिक हो जाएगी। ''हमारा ध्यान अधिक युवाओं और संस्था-आधारित रोटरेक्ट क्लबों को आकर्षित करने पर होगा,'' वह कहते है।

रायपुर और जबलपुर के सरकारी अस्पतालों में कोविड उपकरण स्थापित करने के लिए 110,000 डॉलर की तीन वैश्विक अनुदान परियोजनाएँ कार्यान्वित किए जाने की राह पर है। ''हम 300,000 डॉलर के वैश्विक अनुदान के मंजूर होने का इंतजार कर रहे है और 250,000 डॉलर मूल्य के वैश्विक अनुदान के तहत कुछ और परियोजनाएं कतार में है।'' छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश और ओडिशा के कुछ हिस्सों में फैले एक बड़े आदिवासी इलाके में, मोहांटी ने क्लबों से सरकारी स्कूलों में स्वच्छता परियोजनाएं शुरू करने का अनुरोध किया है।

सबसे पहले, मंडल राउरकेला के पास एक पिछड़े इलाके में 10 सरकारी स्कूलों में थळपड कार्यक्रम आयोजित करेगा। मोहांटी कहते है, 'इसके बाद हम 100 हैप्पी स्कूल करेंगे जिसमें से 20 आदिवासी इलाकों में होंगे।'

टीआरएफ को देने में, उन्होंने 200,000 डॉलर का एक लक्ष्य रखा है, जिसमें से 100,000 डॉलर वार्षिक निधि में जाएंगे। 1992 में, एक गैर-रोटेरियन होने के नाते, वह बच्चों के अपने अस्पताल के खर्चों को पूरा करने के लिए अपने गृह क्लब रोटरी क्लब राउरकेला मिडटाउन में एक अनुदान संचय समारोह हेतु दान टिकटें बेचते थे। ''इसके सेवा आदर्श वाक्य से प्रेरित होकर, मैं रोटरी से जुड़ गया,'' वह याद करते है।

एन कृष्णमूर्ति द्वारा रूपरेखा

Rotary News Subscription Remittances

You can pay the Rotary News / Rotary Samachar subscription online

Our Bank details:

Bank	:	HDFC Bank SB Account
Branch	:	Montieth Road Egmore, Chennai
A/c Name	:	Rotary News Trust
A/c No.	:	50100213133460
IFSC Code	:	HDFC0003820

E-mail us following details:

Name of club

President/secretary's name

Amount/date of transfer/UTR number

For physical payment by cheque or cash in bank, write **Club Name only** without prefixing "Rotary Club of". Eg. Rotary Club of Delhi Central should be written: Delhi Central.

Rotary at a glance

Rotarians	:	1,194,505
Clubs	:	36,350
Districts	:	525
Rotaractors	:	208,599
Clubs	:	10,985
Interactors	:	349,761
Clubs	:	15,207
RCC	:	11,361

As on October 19, 2020

Membership Summary

As on October 1, 2020

RI District	Rotary Clubs	No of Rotarians	Women Rotarians %	Rotaract Clubs	Interact Clubs	RCC
2981	119	5,064	5.94	51	39	225
2982	72	3,155	6.56	86	96	56
3000	131	5,274	8.25	188	256	211
3011	107	4,164	25.86	59	100	35
3012	110	3,919	24.85	57	71	59
3020	73	4,495	6.45	56	155	351
3030	95	5,167	14.75	119	180	304
3040	92	2,248	11.97	43	52	147
3053	64	2,789	16.57	22	39	111
3054	138	6,371	19.67	94	144	524
3060	101	4,663	14.80	60	63	145
3070	115	3,446	17.30	48	22	59
3080	84	3,367	9.15	103	146	116
3090	80	2,297	6.01	43	9	122
3100	100	2,333	8.32	14	14	146
3110	135	3,738	8.91	29	7	105
3120	83	3,347	14.31	50	21	53
3131	138	5,285	21.40	114	192	119
3132	87	3,463	10.02	40	95	164
3141	104	5,669	24.55	130	144	94
3142	91	3,318	20.89	83	118	68
3150	88	3,475	10.65	63	122	117
3160	78	2,581	6.82	28	3	83
3170	133	5,756	13.66	84	204	169
3181	82	3,381	8.96	63	192	118
3182	83	3,192	8.18	50	103	98
3190	143	6,081	16.13	156	165	65
3201	145	5,675	8.37	109	73	52
3202	141	5,878	6.92	101	251	47
3211	144	4,676	7.14	8	24	132
3212	107	4,297	8.63	104	187	149
3231	100	4,014	12.31	53	81	419
3232	128	5,883	19.41	135	199	93
3240	92	3,201	13.56	57	393	198
3250	101	3,802	18.28	72	65	185
3261	76	2,743	16.04	20	21	43
3262	107	3,776	12.95	52	39	78
3291	159	3,830	20.97	98	88	623
India Total	**4,026**	**155,813**		**2,742**	**4,173**	**5,883**
3220	71	1,947	14.74	86	125	74
3271	114	1,804	17.85	69	19	22
3272	158	1,878	17.84	58	15	44
3281	240	7,181	17.27	248	50	200
3282	160	4,131	10.87	179	39	46
3292	136	5,312	15.68	144	120	119
S Asia Total	**4,905**	**178,066**		**3,526**	**4,541**	**6,388**

Source: RI South Asia Office

Wordsworld

A little of this, a little of that

Sandhya Rao

Truly random thoughts such as a bit of Babel, the way of words, the lilt of languages, the comfort of courier packages and so on.

I recently listened to a podcast called 'Puliyabaazi', courtesy a link forwarded by an affectionate nephew. This was an interview with Dr Abhishek Avtans, a Hindi language scholar, who teaches at Leiden University in the Netherlands. He talked about the growth and development of the Hindi language, its relationship with dialects ('boli' versus 'bhasha'), the evolution of Urdu and the somewhat controversial connection to Sanskrit that's been imposed upon it. In the course of this lively conversation with the podcast's two moderators, the professor drew listeners' attention to an important aspect of 'being Indian': multilingualism.

I was thrilled because I believe that one of the biggest strengths we have as a people is our ability, generally speaking, to negotiate 'foreign' or 'unfamiliar' languages. Is it that our tongues are different or that our left hemispheres are so designed or an environment of plurality that exists or that we are less inhibited or that we are more ready to reach out…? Whatever the reason, most Indians 'have' two languages, if not more, and are usually ready to take a shot at anything else that comes along. Shukraan. Nanri. Dhonnobad. Sabaykhor thabay. Zdrastvitye. Merci. Danke. Tesekkular. Even if an individual cannot read and write, s/he can certainly speak — or at least attempt to speak — and will sort of understand more than their own mother tongues. Some laugh at the accent or the literal translation or the syntax but they all have to admit: we own our tongues and others too.

A mythological story talks about the tower of Babel where people suddenly started speaking in multifarious languages. This confused them and prevented them from communicating with each other, leading to clashes and chaos. India's many languages and dialects, *bhashas* and *bolis*, are threads that weave a vibrant tapestry of culture, identity and harmony. The warmth and energy this generates is among the many things that animate and inspire the subcontinent. Which is why, any effort to undermine some languages in order to prop up others is an affront to our existence because every little thread counts.

A corollary to this characteristic is the widespread ability most Indians have to incorporate 'other' words and phrases into their private and professional parlance. And that's a great thing. Of course, I have shared these ideas regarding languages and language acquisition in this column before, but it bears repetition — over and over again. Acquire new tongues, but nurture what your already have. Add, don't subtract.

Interestingly, the idea of Babel exists in other cultures as well, according to my dear friend, Ms Internet and her progeny, the various Pedias. The Sumerians, the Mexicans, the American Indians — all of them apparently have mythologies that tell of people united by language building towers or testaments to either praise or appease their gods and then see those structures destroyed and find themselves speaking different languages. After this, the linguistic groups separate to seek out homes in different directions.

I like to think of the Babel idea as a proactive process. It celebrates variety: just look at the zillion kinds of noses people turn up at others! Look at the number of words. They say an

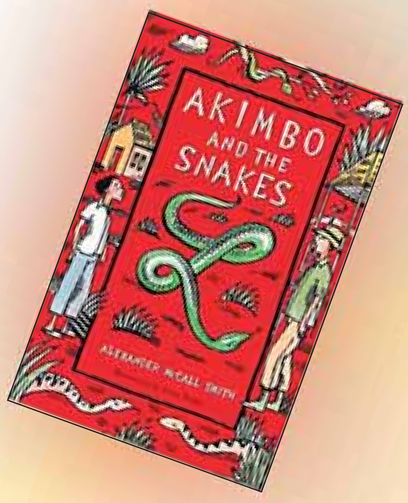

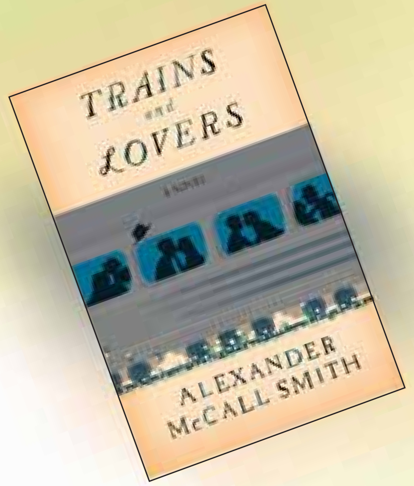

average native speaker of a language has a vocabulary of about 20,000 to 35,000 words. Listen to the cadences of voices. Colours. Trees. They say there are hundreds of kinds of eucalyptus trees. They say there are hundreds of kinds of rajma. Name anything. And not just in nature. And if we don't recognise the value of this rich and enriching tapestry called life, it will only start showing holes until only one big, all-engulfing hole remains through which all of life will tumble into nothingness.

As the long months of lockdown close in on a year, we have all experienced times of desperation that cuts through whatever privileges we enjoy. And here, we're talking about the lucky few. So, for moral support, I turned to my current writer of refuge, Alexander McCall Smith, someone who has appeared in these columns before. I ordered four books online: *My Italian Bulldozer, Trains and Lovers, The Peppermint Tea Chronicles,* and *One City*. Truly, his books are a comfort. Such a comfort, that I have — guiltily, I must admit, and brazenly, too —ordered eight — yes, eight! — more titles, this time mostly from the 'No. 1 Ladies' Detective Agency' series. One of them is a children's book called *Akimbo and the Snakes*. Three of the books in the second consignment have arrived, and I eagerly await the arrival of the next courier guy.

And there's a postscript to this: In an effort to break out of the doom-gloom clouds hanging low over my apartment, I decided to visit my cousin who lives nearby. Suitably masked, and correctly ensconced in chairs, socially accepted distance from each other in the veranda of her home, I gifted her *An Italian Bulldozer* in the hope that she would find it as entertaining as I had. She's not much of a fiction reader and this is part of an ongoing effort to convert her to the healthy habits of reading fiction. She was delighted. Of all the gifts she could hope to receive, she said, this was the best. But what do I do after I finish the book, she asked. Keep it if you like it, I responded. Return it if you don't. She is reading a couple of pages a night and, from all accounts, enjoying it.

Meanwhile, I am still reading several books at one time, including the ones mentioned in earlier columns. McCall Smith seems to have distracted me, or, should I say, extracted me from the clutches of a Los Angeles library fire, the story of the first Muslim and accounts from a Turkish prison. I admit these range from serious to grim themes and, given the prevailing

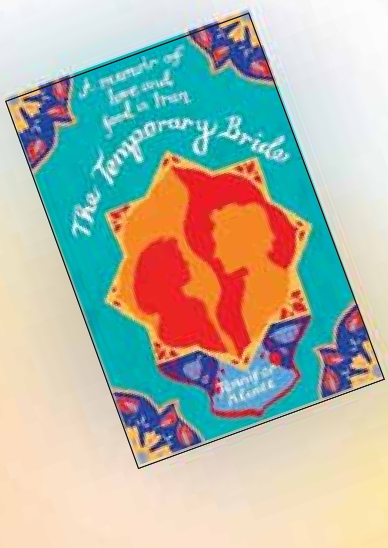

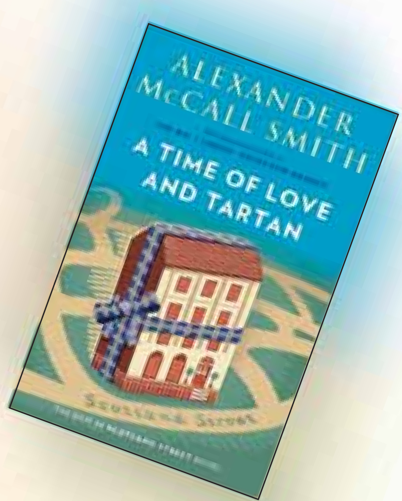

climate, possibly the reason why I have returned to ACS. Back back back in the day, comfort came from Enid Blyton, Angela Brazil, W E Johns, Edgar Wallace, Agatha Christie, P G Wodehouse, Richard Gordon, Louis L'Amour, Charles Dickens, Thomas Hardy, Lobsang Rampa, Allen Drury, Leon Uris, Chaim Potok, R K Narayan, and others. More recently, it's been Stieg Larsson, Amitav Ghosh, Pico Iyer, Anuja Chauhan, and Henning Mankell… the list goes on. Over the years they have fed my hunger for stories and exploring unknown worlds. At the moment that's exactly what *The Temporary Bride* is doing. This slim book by Jennifer Klinec is a memoir of love and food in Iran. I've got to the bit where she's just arrived in Yazd in central Iran and met up with a young, stern-looking Yazdi who, in response to her reason for visiting Iran — to learn to cook, and of course taste, Iranian dishes — simply says, 'My mother is a good cook.' Now this is where Jennifer Klinec's story really begins. Yum!

Further PS: I just received a message saying *A Time of Love and Tartan* is arriving early. That's the fourth!

The columnist is a children's writer and senior journalist.

Designed by Krishnapratheesh

कोविड के बाद, WinS स्कूलों के लिए महत्वपूर्ण कार्यक्रम : शेखर मेहता

किरण ज़ेहरा

धारवाड़ के एक सरकारी स्कूल में पेड़ लगाने का अभियान चल रहा था, जब पीडीजी गणेश भट्ट, रो ई मंडल 3170, ने संयोगवश प्रधानाचार्य से स्कूल को फिर से खोलने और उसकी तैयारी के बारे में पूछा। मैं अचंभित रह गया जब उन्होंने कहा कि,'हम तैयार नहीं है।' हमें अपने बच्चों की सुरक्षा के लिए अपने स्कूलों में स्वच्छता और सफाई के प्रयासों को और पुख्ता करना होगा। यदि हम उचित उपाय नहीं करते हैं तो वे कोरोना संक्रमण के अधिक जोखिम में होंगे। उन्होंने रोटरी क्लब धारवाड़ केंद्र, रो ई मंडल 3170 की मेजबानी में हुए मल्टी-डिस्ट्रिक्ट विनएस सेमिनार में अपनी शुरुआती टिप्पणी में कहा।

कोविड महामारी के बाद स्कूलों के प्रोजेक्ट्स में WASH अब और भी महत्वपूर्ण हो गया है। RIPE शेखर मेहता ने कहा कि स्कूलों को फिर से खोलने के बाद छात्रों के बीच व्यवहार में बदलाव लाने के लिए WinS स्वयंसेवकों को अब और भी अधिक मेहनत करनी होगी। उन्हें हाथ धोने के महत्व को छात्रों के बीच बताने की आवश्यकता पर जोर दिया और इस संबंध में उन्होंने संघों से संवादकर्ताओं को सरकारी स्कूलों में कार्यक्रमों की मदद के लिए उपलब्ध कराने का आग्रह किया।

मेहता ने रोटेरियंस को उन स्कूलों का दौरा करने के लिए कहा जहां WinS कार्यक्रमों को लागू किया जा रहा है और जाँचा जा रहा है कि शौचालय अच्छी स्थिति में हैं या नहीं; पानी की आपूर्ति लाइनें साफ और पीने के पानी की गुणवत्ता अच्छी है कि नहीं। साफ़-सफाई की सुविधा के बिना स्वच्छता की स्थिति बिगड़ सकती है स्वच्छता सुविधाओं और उनके मरम्मत कार्यों का निरीक्षण करते हुए जिनमें से कुछ महंगे हो सकते हैं, उन्होंने कहा कि यह बेहतर होगा यदि हम स्थानीय सरकारों के साथ साझेदारी करें।

भारत में WinS के नेतृत्व की सराहना करते हुए मेहता ने कहा, जब वे साक्षरता के बारे में बात करते हैं, तो वे मेरे बारे में बात करते हैं। जब वे WinS के बारे में बात करते हैं तो वे तुरंत रमेश अग्रवाल का उल्लेख करते हैं। इसी तरह से आप अपना स्थान बनाते हैं और मुझे यकीन है कि आप स्कूलों को फिर से खोलने के लिए हर संभव प्रयास करेंगे।

WinS लक्ष्य चुनौती के वैश्विक प्रमुख PRID पी टी प्रभाकर के इस प्रायोगिक कार्यक्रम को जो कि जून 2021 में कोविड के खिलाफ एक वैक्सीन के बन जाने तक एक कवच के रूप में जारी रखने की आवश्यकता पर दिए गए एक सुझाव के लिए मेहता ने कहा, आपने WinS के साथ एक अद्भुत काम किया है, लेकिन इसके कार्यान्वयन की वैश्विक सफलता दर इसके फिर से प्रसार को निर्धारित करेगी।

अपने संबोधन में प्रभाकर ने स्कूली छात्रों के बीच स्वच्छता सुनिश्चित करने के लिए विन एस कार्यक्रमों के महत्व को समझाया और बताया कि इस परियोजना को 2016 के बाद से देश भर के 40,000 सरकारी स्कूलों में लाया गया है और यह आंकड़ा 2025 तक एक लाख स्कूलों को छूने के लिए कटी-बद्ध है। उन्होंने कहा, हम सिर्फ शौचालय बनाने और हाथ साफ़ करने के स्थान उपलब्ध करा कर ही नहीं रुकते हैं, बल्कि यह भी सुनिश्चित करते है कि ये दो साल तक बने रहें।

WinS के राष्ट्रीय अध्यक्ष रमेश अग्रवाल ने कहा कि कोविड प्रकोप द्वारा उत्पन्न नई स्वच्छता चुनौतियों से निपटने के लिए उनकी टीम स्कूल के शिक्षकों और प्रबंधकों को भी नए सुरक्षा उपायों पर प्रशिक्षण दे रही है। उन्होंने कहा आइए हम अस्वस्थता और स्कूलों में शौचालय सुविधाओं की कमी के कारण स्कूल छोड़ने वालों को कम करने पर ध्यान दें

डीजी संग्राम पटेल ने आरसी धारवाड़ मध्य के प्रयासों की सराहना करते हुए कहा कि यह बहुत आवश्यक और अनिवार्य संगोष्ठी है जिसने जिले के नेताओं के अनुभवों को साझा करने और WinS की अच्छी प्रथाओं को सीखने के लिए एक मंच प्रदान किया।

पीडीजी गणेश भट ने कहा कि बच्चों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए स्कूलों में साफ़ -सफाई और स्वच्छता के प्रयासों को और मजबूत करने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा, यदि हम नियोजित उपाय नहीं करते हैं, तो बच्चे कोरोन वायरस से संक्रमित होने के अधिक जोखिम में होंगे।

RISAO से रिती भोरा ने वैश्विक अनुदान आवेदनों की समीक्षा और अनुमोदन के लिए इस कार्यक्रम के टीआरएफ़ की प्रक्रिया तथा WinS लक्ष्य चुनौती खाका प्रस्तुत किया। ■

Rotary
District 2982
People of Action

Rotary Opens Opportunities

T-E-A-C-H
&
SKILL
DEVELOPMENT

ADVT.

வாசிக்க நேசிக்க ரோட்டரி நூலகங்கள்

K S Venkatesan
Dist. Governor
RID 2982

கற்றதை பெற்றதை ஆற்றல் ஆக்கி ஒவ்வொரு குடும்பத்திலும் மகிழ்ச்சியை கூட்டுவோம். நம் இலக்கு 1000 கிராமப்புற அரசு தொடக்க பள்ளிகளை ஒருங்கிணைப்போம். நம் பகுதியில் உள்ள வருங்கால மாணவச் செல்வங்களை கற்றவர்களாக மாற்றி நம் நாட்டின் வளர்ச்சியில் பங்கு கொள்வோம்.

A Venkateswara Gupta
Dist. Literacy
Committee Chairman

Rotary Libraries

Towards a Literate India by 2025

- Our **DG K S Venkatesan** congratulates the clubs for creating 150 Happy Schools, 500 Rotary Libraries in rural government primary schools.
- Congratulations to **RC Hosur** President A G Pratheep Krisnan, Secretary R Balaji, Treasurer T Vijay, AG K Anandakumar and Project Chair R Ravi for setting up libraries in 62 government primary schools to benefit over 8,000 children.
- **DLCC A Venkateswara Gupta,** along with Happy Schools Chairman N P Ramaswamy and the literacy team, has been instrumental in setting up Rotary libraries across RI District 2982 since 2019 to inculcate reading habit in young children and enhance their knowledge in various spheres.
- Our thanks to **IPDG AKS A K Natesan** for motivating the district to create 265 libraries last year.
- Sixteen Rotarians sponsored book shelves for schools to store the books.
- The books were distributed to the school heads in the presence of the DEOs of Hosur and Denkanikota on Oct 15, coinciding with former President of India Abdul Kalam's birth anniversary.
- "Our vision: We want to see every Indian village to have a library." – DLCC A Venkateswara Gupta.

RC Chinnasalem, Krishnagiri, Hosur Midtown, Salem South, Salem North, Namakkal Poultry Town, Sankagiri, Rasipuram, Salem Young Town, Salem Elite, Idappadi, Hosur Sipcot, Attur, Villupuram, Sankarapuram, Mohanur, Omalur, Jalakandapuram, Salem Junction, Salem Rupavathy and Hosur Angels have also initiated the library creation in the district and the other Rotary clubs are planning to create more libraries in the coming months to reach the **1000**-libraries goal.

உங்களின் நூலக அன்பளிப்பு, கிராமங்களின் ஒளிவிளக்கு!

Rotary PEOPLE OF ACTION

रोटरी बाढ़ पीड़ितों तक पहुँची

जयश्री

तिरुप्पुर के रोटेरियन बाढ़ पीडितों की मदद करते हुए।

अगस्त की शुरूआत में, केरल के कुछ हिस्सों में भारी बारिश और भीषण बाढ़ आई। वायनाड और कोझिकोड और इडुक्की रेड अलर्ट पर थे और पांच अन्य जिले आरेंज स्थिति में थे।स्थिति और बदत्तर हो गई जब भारी बारिश के कारण रनवे बाढ़ से पूरित हो जाने और स्पष्ट रूप से दिखाई न देने के कारण दुबई से एयर इंडिया के एक विमान ने एक विनाशकारी लैडिंग की। इसमें 18 मौतें हुईं और कई लोग घायल हो गए। इडुक्की जिले में मुन्नार और राजमाला पहाड़ियों में भूस्खलन से 70 से अधिक लोगों की मौत हो गई और कई घायल हो गए।

रोटरी क्लब कोट्टायम की अध्यक्ष सुज़ेन कोशी बाढ़ पीडितों को आवश्यक सामग्री देती हुई।

लगभग उसी समय, तमिलनाडु की नीलगिरी पहाड़ियों पर भी भारी बारिश हुई। ओवरफ्लो हो जाने वाले बांधों ने कई गांवों को बाढ़ आपूरित कर दिया। गुडालुर और पंडालुर में बहुत ज्यादा नुकसान हुआ और सैकड़ों आदिवासी परिवारों को इस भयंकर बाढ़ के कारण अपने सामानों को गंवाना पड़ा। दमकल कर्मियों ने उन्हें सुरक्षित स्थानों पर पहुँचाया।

दोनों ही क्षेत्रों में, रोटेरियन बाढ़ पीड़ितों की मदद करने के लिए आगे आए। रोटरी क्लब तिरूप्पुर वेस्ट, रो ई मंडल 3202 के नेतृत्व में तिरूप्पुर के 47 रोटरी क्लबों ने गुडालुर वैली में 400 परिवारों को मदद प्रदान करने के लिए एकजुट हुए। असिस्टेंट गवर्नर पी एस प्रकाश ने कहा कि ''हमने कपड़े, किराने का सामान, बाथरूम में काम आने वाली जरूरी वस्तुएं जैसे साबुन, टूथपेस्ट और बेडशीट एवं तकिए, कुछ मोमबत्तियां और टॉर्च सहित 25 आइटम सेट को बॉक्स में भरकर एक वैन में लोड किया।'' लागत को कवर करने के लिए क्लबों के द्वारा कुल ₹8,00,000 जुटाए गए।

कोविड लॉकडाउन का सामना करते हुए दस रोटेरियनों ने गांव की ओर प्रस्थान किया। ''हम अनिवार्य ई-पास नहीं प्राप्त कर सके थे। आरटीओ राजस्व निरीक्षक और गुडलुर के डीएसपी जय सिंह ने बिना परेशानी के गांव तक पहुँचने में हमारी सहायता की और दो दिन वितरण में हमारी मदद की।'' पूरी

यात्रा के दौरान, उन्होंने गिरे हुए पेड़, भूस्खलन और क्षतिग्रस्त सड़कों को देखा।

प्रकाश ने बताया कि टीम ने बाद में जय सिंह के अनुरोध पर 25 चावल के बैग, 300 बैडशीट और 25 सेट गद्दे और तकियों को कुन्नूर के एक अनाथालय में भेजा। ''महामारी और लॉकडाउन की वजह से थोड़े सी वित्तीय मदद के साथ, अनाथालय बहुत बुरी दशा में था और हमें उनकी मदद करके प्रसन्नता हुई।'' कोच्चि में 400 चादरें भेजीं गईं जहां पर कि रो ई मंडल 3201 ने एक कोविड केयर सेंटर स्थापित किया हैऔर 200 मॉस्क फ्रंटलाइन स्टाफ की सुरक्षा के लिए तिरूप्पुर जनरल अस्पताल को प्रदान किए गए।

महामारी और लॉकडाउन की वजह से थोड़े सी वित्तीय मदद के साथ, अनाथालय बहुत बुरी दशा में था और हमें उनकी मदद करके प्रसन्नता हुई।

पी एस प्रकाश
सहायक गर्वनर रो ई मंडल 3202

रो ई मंडल 3211, रोटरी क्लब कोट्टायम, केरला के सदस्यों ने कोट्टायम के पास चेंगलम और वेलूरहामलेट्स में 70 बाढ़ प्रभावित परिवारों को चावल, गेहूँ का आटा, दाल, खाना पकाने का तेल, प्याज और साबुन-शैम्पू जैसे आवश्यक सामानों को वितरित किया। क्लब के सचिव श्री शरतवल्राज ने बताया कि ''कुछ क्षेत्र अभी तक बाढ़ के प्रभाव में थे और हम केवल कंट्री बोट्स से ही घरों तक पहुँच पाए।'' ■

मृतकों के मुक्तिदाता

टीम रोटरी न्यूज़

रोटरी क्लब सुरत रिवरसाईड के अध्यक्ष आनन्द आचार्य एकता ट्रस्ट के अध्यक्ष अब्दुल रहमान को वोकेशनल एक्सेलेन्स अवार्ड से सम्मानित करते हुए।

ऐसे समय में जब परिवार के सदस्य कोरोना वायरस के संपर्क में आने के डर से अपने मृतक रिश्तेदारों से खुद को दूर रखते हैं, उस परिदृश्य में सूरत के एकता ट्रस्ट ने मृतक रोगियों का अंतिम संस्कार किया है और 1,200 से अधिक मृतक रोगियों को दफनाया है जिनकी इस वर्ष मार्च से कोविड-19 से मौत हो गई थी। रोटरी क्लब रीवरसाइड, रो ई मंडल 3060 ने ''उनके अनुकरणीय मानवीय प्रयासों एवं कोरोना के इस कठिन समय के दौरान मानवता के लिए समर्पण भाव से सेवा में योगदान देने के लिए'' वोकेशनल एक्सीलेंस अवार्ड से इस संगठन को मान्यता दी है। क्लब के अध्यक्ष डॉक्टर प्रशांत कारिया ने कहा।

ट्रस्ट के अध्यक्ष अब्दुल रहमान मालबरी ने कहा कि पिछले तीन दशकों में उन्होंने और उनकी टीम ने 70,000 से अधिक लावारिस शवों को दफनाया है जो लोग दुर्घटनाओं, प्राकृतिक आपदा जैसे कच्छ के भूकंप, सूनामी और सूरत, जम्मू-कश्मीर एवं उत्तराखंड में बाढ़ में अपनी जान गंवा बैठे थे और वे उन गरीबों, साधनहीन लोगों तक भी पहुँचे जो अपने प्रियजनों को सम्मानजनक विदाई नहीं दे सकते थे।

पहली कोविड मौत का स्मरण करते हुए जो उन्होंने हैंडल की थी, उसके बारे में उन्होंने बताया कि ''मार्च में, जब मैं एक मृतक भिखारी के शरीर का अंतिम संस्कार कर रहा था तभी मुझे सूरत नगर निगम के कार्यालय से एक फोन आया। अब्दुल भाई, महावीर अस्पताल में कोविड से एक व्यक्ति की मृत्यु हो गई है'' जो उन्होंने उस व्यक्ति के विश्वास के अनुसार किया था।

टीम के एक सदस्य यूसुफ बरद ने कहा कि ''हम कोविड से नहीं डरते हैं, लेकिन शुरूआती दिनों में लोगों ने हमें जिस तरह से नापसंद किया था वह निराश करने वाला था। इतनी लाशों को हैंडल करने के बावजूद भी हमें स्वस्थ देखकर उनकी मानसिकता में परिवर्तन आया है।'' एक अन्य सदस्य, मुस्ताक ने कहा कि ''हमारा काम हमें शांति और संतुष्टि देता है। यदि जरूरत पड़ी तो हम इस अच्छे काम के लिए अपना जीवन न्योछावर कर देंगे।''

मौतों की संख्या में बढ़ोत्तरी होने के कारण, एक अन्य सदस्य हाजी चंडीवाला ने कहा कि लाशों को दफनाने के लिए गड्ढे को गहरा खोदने की आवश्यकता है। मालबरी ने कोविड रोगियों और फ्रंटलाइन कार्यकर्ताओं के साथ भेदभाव नहीं करने एवं और उन्हें अधिक प्रेम देने एवं देखभाल का आग्रह किया।

क्लब के सदस्यों के लिए पुरस्कार प्रस्तुति को ऑनलाइन प्रसारित किया गया था। क्लब के अध्यक्ष आनंद आचार्य स्वागत भाषण दिया और सचिव जुगल शिंगोट ने दर्शकों को धन्यवाद ज्ञापित किया। ■

मंडल गतिविधियाँ

रोटरी क्लब तिरुवरूर - रो ई मंडल 2981

विधवाओं और वंचित महिलाओं के लिए एक व्यावसायिक प्रशिक्षण केंद्र शुरू किया गया ताकि उन्हें सिलाई का नि:शुल्क प्रशिक्षण प्रदान किया जा सके जिससे उन्हें स्वरोजगार प्राप्त करने में मदद मिले।

रोटरी क्लब दिल्ली मंथन - रो ई मंडल 3011

एनजीओ संकल्प के साथ क्लब ने जसोला गांव में वंचित महिलाओं के लिए स्वच्छता पर जागरूकता सत्र आयोजित किया। महिलाओं को सेनेटरी पैड बांटे गए।

रोटरी क्लब सेलम यंग टाउन - रो ई मंडल 2982

निराई वाज़वु वृद्धाश्रम में बुजुर्गों के साथ अन्नपूर्णा दिवस मनाया गया। रोटेरियनों ने लगभग 100 लोगों को भोजन परोसा।

रोटरी क्लब अचलपुर - रो ई मंडल 3030

क्लब ने संतोष अग्रवाल की अध्यक्षता में रोटरी हेल्पलाइन किट परियोजना के तहत निराश्रित महिलाओं की टूटी झोपड़ियों को फिर से बनाने की पहल की।

रोटरी क्लब श्रीरंगम - रो ई मंडल 3000

मंडल की चिन्हक परियोजना सुपर 66 प्रोजेक्ट के अंतर्गत, क्लब ने पानी के संरक्षण के लिए अपने भवन के परिसर में वर्षा जल संचयन प्रणाली स्थापित की।

रोटरी क्लब इंदौर मेघदूत - रो ई मंडल 3040

मंडल के रोटेरियनों के साथ डीजी गजेंद्र नारंग ने 35,000 डॉलर की एक वैश्विक अनुदान परियोजना के माध्यम से विभिन्न अस्पतालों को कोविड रोगियों के इलाज के लिए सामग्री प्रस्तुत की।

मंडल गतिविधियाँ

रोटरी क्लब जोधपुर संस्कार - रो ई मंडल 3053

क्लब ने वात्सल्यपुरम अनाथालय को किराने का सामान दान किया। साथ ही, एमजीएच अस्पताल में 1,500 कोविड रोगियों को पीने के पानी की बोतलें दी गईं।

रोटरी क्लब नाभा ग्रेटर - रो ई मंडल 3090

क्लब ने नाभा में जरूरतमंद परिवारों को किराने का सामान वितरित किया। लाभार्थियों ने महामारी के वक्त लॉकडाउन के दौरान इस भावपूर्ण कृत्य के लिए रोटरी को धन्यवाद दिया।

रोटरी क्लब उदयपुर वसुधा - रो ई मंडल 3054

क्लब के सदस्यों ने दो जंगलों में 2,500 बीज गेंद फैलाने के लिए वन अधिकारियों और रोटरेक्टरों के साथ हाथ मिलाया। क्लब के सलाहकार मधु सरीन ने वृक्षारोपण के लिए 500 हर्बल पौधे दिए।

रोटरी क्लब मुरादाबाद अचीवर्स - रो ई मंडल 3100

डीजी मनीष शारदा ने एक जरूरतमंद महिला को सिलाई मशीन दान की। ऑटो पर कोविड जागरूकता स्टिकर चिपकाए गए और व्यस्त स्थानों पर बैनर लगाए गए।

रोटरी क्लब वाधवन सिटी - रो ई मंडल 3060

कोविड के बारे में जागरूकता पैदा करने के लिए क्लब ने ऑटोरिक्शाओं पर स्टिकर चिपकाए और व्यस्त स्थानों पर होर्डिंग लगाए।

रोटरी क्लब सोलापुर नॉर्थ - रो ई मंडल 3132

शहर को हरियाली प्रदान करने हेतु विभिन्न पौधों के साथ एक रोटरी क्लब सोलापुर नॉर्थ गार्डन की स्थापना की गई। यह उद्यान रोटरी की सार्वजनिक छवि को बढ़ाएगा।

मंडल गतिविधियाँ

रोटरी क्लब भद्राचलम - रो ई मंडल 3150

शहर के एक प्रमुख स्थान पर रोटरी संस्थापक पॉल हैरिस की एक प्रतिमा स्थापित की गई। पीडीजी टी विजेंद्र राव और जे अब्राहम ने एक सादे समारोह में प्रतिमा का उद्घाटन किया।

रोटरी क्लब मैंगलोर सेंट्रल - रो ई मंडल 3181

वनमहोत्सव को चिह्नित करने के लिए उरवा पुलिस स्टेशन के परिसर में पचास पौधे लगाए गए थे। इस अवसर पर क्लब के अध्यक्ष के प्रकाशचंद्र और पीडीजी बी देवदास राय उपस्थित थे।

रोटरी क्लब सुलूरपेट - रो ई मंडल 3160

डीजी चिन्नप्पा रेड्डी ने मृत शरीरों के अंतिम संस्कार के लिए प्रतीक्षा कक्ष, शौचालय और नई तकनीक के साथ एक पुनर्निर्मित श्मशान का उद्घाटन किया। परियोजना की लागत ₹28 लाख है।

रोटरी क्लब कोटेश्वर - रो ई मंडल 3182

सरकार के साथ एक संयुक्त कार्यक्रम में, एक गांव के 20 आदिवासी विद्यार्थियों को अध्ययन सामग्री और भोजन किटें प्रदान की गई। एक शिक्षक के लिए मासिक वेतन की व्यवस्था की गई थी।

रोटरी क्लब हुबली विद्यानगर - रो ई मंडल 3170

रोटरी लोगो और क्लब के नाम के साथ पच्चीस सीमेंट बेंचों को एक बगीचे में दान किया गया। पीडीजी महेश रायकर ने इस हस्तांतरण समारोह की अध्यक्षता की।

रोटरी क्लब कोलार - रो ई मंडल 3190

प्रायोजक जयसिम्हा की माँ की याद में, एक मल्टीपल स्क्लेरोसिस योद्धा, कविता, को एक मोटर व्हील चेयर दान की गई।

मंडल गतिविधियाँ

रोटरी क्लब पेरांबावूर सेंट्रल - रो ई मंडल 3201

क्लब ने मंडल परियोजना यस के तहत जरूरतमंद विद्यार्थियों के लिए दो साइकिलें दान की। साथ ही, ऑनलाइन कक्षाओं में भाग लेने के लिए स्कूली बच्चों को दो टीवी सेट दिए गए।

रोटरी क्लब क्योंझरगढ़, रो ई मंडल 3262

क्लब ने एक स्वाभिमान केंद्र आरम्भ किया जहाँ 20 निरक्षर वयस्कों का नामांकित किया गया। उनके लिए शाम कक्षाएं लगाई जा रही हैं।

रोटरी क्लब नीलेश्वर - रो ई मंडल 3202

क्लब के अध्यक्ष सुजीत कुमार की उपस्थिति में एक पुलिस स्टेशन अधिकारी ने जागरुकता पैदा करने वाले एक ऑडियो संदेश वाले एक चलित कोविड स्टाल को हरी झंडी दिखाई।

रोटरी क्लब चंदननगर - रो ई मंडल 3291

मोचियों को धूप और बारिश से बचाने के लिए पच्चीस छतरियाँ प्रदान की गई। कोविड के खिलाफ सुरक्षात्मक कदम के रूप में जनता को मास्क वितरित किए गए।

रोटरी क्लब बोलपुर रंगमती - रो ई मंडल 3240

स्थानीय पुलिस को समाज के प्रति उनकी निस्वार्थ सेवा और लॉकडाउन के दौरान उनके प्रति धन्यवाद व्यक्त करने के लिए कोविड योद्धा प्रशस्ति पत्र से सम्मानित किया गया।

रोटरी क्लब लेखनाथ - रो ई मंडल 3292

IPDG किरण लाल श्रेष्ठ द्वारा पोखरा के बेगनस झील, जिसको देखने सालाना 700,000 दर्शक आते है, पर एक रोटरी फोटो बूथ का उद्घाटन किया गया। क्लब कई झीलों को अलंकृत कर रहा है।

वी मुत्तुकुमारण द्वारा संकलित

रो ई दक्षिण एशिया कार्यालय से संदेश

RF(I) योगदानों के लिए पैन नंबर की आवश्यकता है

1 अप्रैल 2020 से प्रभावी रूप से, RF(I) के लिए ऑनलाइन/ऑफलाइन माध्यम से किए गए सभी योगदानों के लिए पैन नंबर प्रदान करना अनिवार्य है, फिर चाहे मूल्य या आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80ऋ के तहत कर छूट का दावा करने के लिए दानकर्ता का इरादा हो या न हो। बिना पैन विवरण के मिलने वाले योगदान रोई दक्षिण-एशिया कार्यालय द्वारा संसाधित नहीं किए जाएंगे।

व्यक्तिगत डाटा के लिए रोटरी की गोपनीयता और सुरक्षा नीति

रोटरी इंटरनेशनल और द रोटरी फ़ाउंडेशन (व्यक्तिगत और सामूहिक रूप से, रोटरी) ने गोपनीयता नीति (नीति) को अपनाया है, जो निजी डेटा के संग्रह, पहुंच और अवधारण को नियंत्रित करती है। रोटरी के लिए व्यक्तिगत डेटा की गोपनीयता और सुरक्षा बनाए रखना अत्यंत महत्वपूर्ण है।

इस नीति का उद्देश्य है:

- ➢ इस नीति के उद्देश्य की पूर्ति के लिए व्यक्तिगत डेटा के अंतर्गत आने वाली चीजों को परिभाषित करना
- ➢ डेटा की संवेदनशीलता के आधार पर उसके विभिन्न वर्गीकरणों को स्थापित करना
- ➢ व्यक्तिगत डेटा एकत्रित करने, उस तक पहुँचने, उसे साझा करने और संग्रहीत करने के लिए न्यूनतम आवश्यकताएं निर्धारित करना
- ➢ व्यक्तिगत डेटा सुरक्षा भंग की रिपोर्ट करने के लिए प्रक्रिया स्थापित करना।
- ➢ व्यक्तिगत डेटा की सुरक्षा के लिए जिम्मेदार व्यक्तियों की पहचान

यह नीति रोटरी कर्मचारियों, ठेकेदारों, विक्रेताओं, अनिश्चित श्रमिकों, स्वयंसेवकों, अधिकारियों, सलाहकारों और अन्य पार्टियों पर लागू होती है जिनके पास व्यक्तिगत डेटा तक पहुंच है या दी गई है। व्यक्तिगत डेटा की गोपनीयता, अखंडता और सुरक्षा बनाए रखने में मदद करना सभी की जिम्मेदारी है। इस डेटा तक पहुंच प्राप्त व्यक्तियों से इस नीति से परिचित होने और इसका अनुपालन करने की अपेक्षा की जाती है। रोटरी की गोपनीयता नीति के बारे में https://my.rotary.org/en/privacy-policy पर अधिक जानकारी प्राप्त की जा सकती है।

2019-20 संस्थान बैनर

2020-21 के मंडल गवर्नरों तक पात्र क्लबों को रोटरी वर्ष 2019-20 के लिए संस्थान बैनर और एंड पोलियो नाउ प्रशस्ति पत्र वितरित करने के लिए रोई विश्व मुख्यालय से अक्टूबर के अंत से लेकर नवंबर की शुरुआत तक पहुँचा दिए जाएंगे।
मंडल गवर्नरों को भेजी जाने वाली वस्तुओं में विजेता क्लबों की सूची भी शामिल की जाएगी।

रोटरी के अध्ययन केंद्र में अब नए नेतृत्व विकास पाठ्यक्रम उपलब्ध है

टोस्टमास्टर्स के साथ रोटरी इंटरनेशनल के गठबंधन के तहत, नए नेतृत्व और संचार श्रृंखला में दो पाठ्यक्रम, अब लर्निंग सेंटर (www.rotary.org/learn) में उपलब्ध है और ये सार्वजनिक वाचन के लिए आवश्यक कौशल और रणनीति पर ध्यान केंद्रित करते है। ये पाठ्यक्रम निम्न है:

- **भाषण तैयार करना** - एक ऐसे भाषण को तैयार करना सीखें जो आपके दर्शकों पर एक स्थायी छाप छोड़ता है।
- **भाषण देना** - भाषण देते समय आपकी आवाज़ और हाव-भाव से पड़ने वाले प्रभाव को जानें और उसका अभ्यास करें।

टोस्टमास्टर्स इंटरनेशनल द्वारा विकसित इन पाठ्यक्रमों में नए कौशलों का अभ्यास करने में मदद और सहयोग के माध्यम से समकक्षों का मूल्यांकन करके विकास करने के असाइनमेंट शामिल है। रोटरी सदस्यों को इन पाठ्यक्रमों को करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। इसके अलावा, रोटरी और टोस्टमास्टर्स के बीच गठबंधन के बारे में अधिक जानकारी के लिए https://my.rotary.org/en/toastmasters-alliance पर उपलब्ध वीडियो देखें।

दिखाएं कि आपका इंटरेक्ट क्लब कैसे कार्यवाही करता है

दुनियाभर में, आपके समुदाय में, और 2020 के इंटरेक्ट अवार्ड्स में स्वयं आपके इंटरेक्ट क्लब सदस्य किस तरह से कार्यवाही करते है इस बात को साझा करने का यह एक शानदार अवसर है। इंटरेक्ट क्लबों को एक वीडियो, फोटो और/या उनके क्लब की सेवा परियोजनाओं या नेतृत्व विकास गतिविधियों को प्रदर्शित करने वाला एक निबंध प्रस्तुत करने हेतु आमंत्रित किया जाता है।

1 दिसंबर 2020 तक सर्वश्रेष्ठ वीडियो, सर्वश्रेष्ठ फोटो, या सर्वश्रेष्ठ निबंध अपने नाम करने के एक अवसर के लिए अपना नामांकन जमा करें और अपने इंटरेक्ट क्लब की अगली परियोजना का समर्थन करने के लिए धन प्राप्त करें। अधिक जानकारी के लिए *https://xd.wayin.com/display/container/dc/2fa0bd36-e918-4e7f-9608-c4711043c77b/details* पर जाएं। ■

On the racks

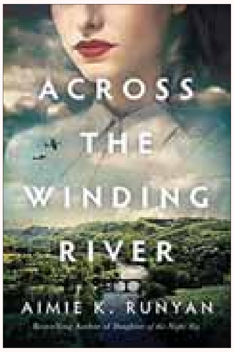

Across the Winding River

Author : **Aimie K Runyan**
Publisher : **Lake Union Publishing**
Pages : **301; ₹967**

In her father's World War-II memory box, Beth Cohen finds the picture of her father with a pretty pregnant woman. If it wasn't her mother, who was she?

What follows next is a recap of her father — Max, stationed in Germany in 1944, who meets a young married woman named Margarethe. He falls in love with her and after the war ended, he tried to find her, but could not.

Max who knows his time is running out, wants closure and asks Beth to find Margarethe and her baby. But he isn't alone in seeking closure. In a private care facility, next to him, is a dying German-born woman who meets Beth and shares a heartbreaking story. The story takes place from 1937 to 2007 and talks about war, love, loss and sacrifice.

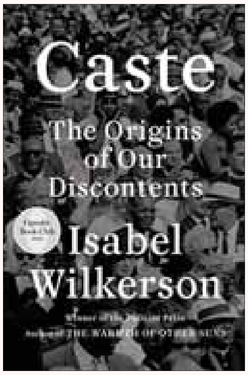

Caste: The Origins of Our Discontents

Author : **Isabel Wilkerson**
Publisher : **Random House**
Pages : **496; ₹2,350**

The author describes the social hierarchy in the US which is similar to the caste system in India and the racial divide in Nazi Germany, an idea she worked on while researching for her Pulitzer Prize-winning book *The Warmth of Other Suns*. She draws eight similarities between these three countries.

She describes the origins of the caste system in America and portrays the struggles of African Americans from the 1600s with multiple examples of cruel treatment of slaves. The book is not just about the past. It is very current and discusses the 2016 American Presidential election and some of the current administration's policies. Isabel urges readers to think of all the talent wasted, the innovation lost to humanity by pushing people behind based on skin colour or physical features.

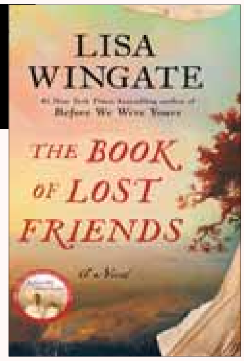

The Book of Lost Friends

Author : **Lisa Wingate**
Publisher : **Ballantine Booksaa**
Pages : **388; ₹2,003**

Louisiana 1875: Hanie Gossett stands behind a log fence where slaves are being held for auction. The young girl watches as her family is sold to different owners. She remembers the promise she made to her mother — never to forget her family and guards safely one of the 15 tiny sacks with three blue glass beads, from her grandmother's special neck chain.

The dual time frame novel cuts to 1987 where Benny Silva comes to teach in Augustine, Louisiana. She seeks to make an impact on her unruly students, get them to read, to learn. Benny asks her students to undertake a project to understand their legacy and ancestors. She shares with them *The Book of Lost Friends*, a compilation of the ads placed in the Lost Friends column in a newspaper. These ads were placed to find people who were sold in human trade.

Based on true facts and records, this story is a combination of history and humanity.

Compiled by Kiran Zehra

क्या एक लेखिका अपने खुद का लिखा पढ़ती है?

टीसीए श्रीनिवासा राघवन

कई साल पहले एक शाम, मैं अपने हाथ में एक किताब लेकर हमारी कॉलोनी के पार्क में टहलने के लिए गया था। वहाँ केवल एक 6-7 साल का छोटा बालक था और कोई भी नहीं था। हम एक दूसरे को इसलिए जानते थे क्योंकि वह मेरे घर के सामने ही रहता है। उसकी मां वहाँ पर नौकरानी का काम करती है। जब उसने मुझे बेंच पर बैठे देखा तो वह मेरे पास आया और उसने पूछा कि मेरे हाथ में क्या है। यह एक किताब है, मैंने उससे कहा। वह जानना चाहता था कि किताब क्या होती है। मैंने उसे जितना हो सके उतने अच्छे से समझाया। (मेरा सुझाव है कि आप भी किसी छह वर्षीय का साथ इसे आज़माएं)। वह एक होशियार बच्चा था और ऐसा लग रहा था कि मैं उसे जो कुछ भी समझा रहा था उसे वो समझ में आ रहा था हालांकि मुझे पहले लिखना और पढ़ना समझाना पड़ा। फिर वह ऊब गया और खेलने चला गया।

कुछ दिन पहले फिर से वही हुआ। लेकिन इस बार, सभी लेखकों की तरह आत्मकामी होने के प्रदर्शन में, मैं अपनी ही किताब ले जा रहा था। वह किताब इस साल की शुरुआत में प्रकाशित हुई थी। मुझे नहीं पता कि मैं इसे क्यों पढ़ना चाहता था। वही लड़का एक बार फिर वहाँ मिला, लेकिन अब वह बड़ा हो गया था शायद 10 वर्ष का। मुझे देखते ही वह मेरे पास आया। क्या आपने यह किताब पढ़ी है, उसने पूछा। मैंने उससे कहा मैंने ही यह किताब लिखी थी। अच्छा, उसने कहा, लेकिन क्या आपने इसे पढ़ा है? वह मजाक नहीं कर रहा था। वह वाकई गंभीर था। मैंने विषय बदलकर उससे उसके स्कूल के बारे में पूछा। यह स्पष्ट रूप से एक प्रतिबंधित विषय था और वह तुरंत ही भाग गया। उस रात मैंने अपनी पत्नी को वो सब बताया जो उस लड़के ने मुझसे पूछा था और उसने कहा कि हमारी शादी को 40 साल हो चुके है, मैंने उससे कई बार एक ही बात पूछी थी - उसके खाना पकाने के बारे में। मैंने उसे यह बताने की कोशिश की कि यह एक ही बात नहीं है। लेकिन मैं जानता था कि यह एक ही बात है। फर्क सिर्फ इतना था कि उस लड़के की मंशा मेरा अपमान करने की नहीं थी।

इसलिए पिछले कुछ दिनों से मैं सोच रहा हूं कि वास्तव में कितने लेखक अपनी किताब को उसी तरह से पढ़ते है जैसे दूसरे लोग उसे पढ़ते है। अब तक कुछ किताबें लिखने के बाद, मुझे पता है कि जब मैं उनमें से किसी एक को दोबारा पढ़ता हूँ, तो यह केवल लेखन के मेरे कौशल और मेरी गहन अंतर्दृष्टि की प्रशंसा करने के लिए होता है। हालांकि, ये दूसरों को दिखाई नहीं देती। लेकिन मैंने उन्हें कभी इस तरह से नहीं पढ़ा, जैसा कि मेरी पत्नी पढ़ती, मेरे बेटों की तो छोड़ ही दीजिए जो एक निशुल्क प्रति का इस्तेमाल टूटे हुए फर्नीचर में टेक लगाने के लिए करते है। मेरे दोस्तों के बारे में, मैं वास्तव में नहीं जानता कि वे उन्हें पढ़ते है या नहीं क्योंकि कोई भी कभी कुछ नहीं कहता। जैसा कि पिकविक पेपर का चरित्र कहता है, वे उतने ही शांत रहते है जितना कि एक छेद वाला ढोल। लेकिन मुझे शिकायत नहीं करनी चाहिए। मैं उनकी पत्नियों और उनके बच्चों द्वारा लिखी गई किताबों के साथ भी ऐसा ही करता हूँ।

सोच रहा हूं कि वास्तव में कितने लेखक अपनी किताब को उसी तरह से पढ़ते है जैसे दूसरे लोग उसे पढ़ते है। कुछ किताबें लिखने के बाद, मुझे पता है कि जब मैं उनमें से किसी एक को दोबारा पढ़ता हूँ, तो यह केवल लेखन के मेरे कौशल और मेरी गहन अंतर्दृष्टि की प्रशंसा करने के लिए होता है। हालांकि, ये दूसरों को दिखाई नहीं देती।

लेकिन इस तरह की लज्जाजनक स्वीकारोक्ति एक तरफ करते हुए, उस छोटे लड़के ने एक बहुत ही महत्वपूर्ण सवाल पूछा था: जब एक लेखक लिखता है, तो वह किसके लिए लिख रहा होता है/होती है? खुद के लिए या पाठक के लिए? मैं 40 वर्षों तक विभिन्न अखबारों और अकादमिक एवं अन्य संस्थानों में संपादक रहा। मैंने हमेशा लेखकों से उस गरीब पाठक के बारे में सोचने के लिए कहा, जो कागज या किताब या रिपोर्ट के लिए भुगतान तो करता ही है परंतु अब उसे बड़े पैमाने पर आडंबरी गद्यों का भी सामना करना पड़ता है। अफसोस की बात है, उनमें से बहुत कम लोग समझ पाए कि मैं और मेरे साथी क्या कह रहे थे। मुझे यह बताने में खुशी हो रही है कि जिन्होंने ऐसा किया उन्होंने अपने चुने हुए व्यवसायों में अच्छा प्रदर्शन किया है, शायद इसलिए क्योंकि उन्होंने केवल अपने लिए नहीं लिखा है। दरअसल, लेखन बहुत कुछ गायन या वादन या चित्रकारी की तरह होता है: सफल संगीतकार और चित्रकार हमेशा श्रोता या दर्शक को ध्यान में रखते है। यह सफलता की एकमात्र कुंजी है।

इसलिए, लड़के का जो सवाल था कि क्या मैंने अपनी खुद की किताब पढ़ी है, उसपर वापस आते है और मुझे मेरा जवाब मिल गया है। मैंने ऐसा नहीं किया। बेशक, मैंने इसे लिखा था। लेकिन इसे पढ़ना? मैंने अपना सिर शर्म से झुका लिया।■

एक पोलियो मुक्त दुनिया की ओर

"हम पोलियो को ख़तम करने के इतने करीब है" – RIPE शेखर मेहता और राशी।

बेलुर में बच्चों ने पोलियो मुक्त भारत के झंडे लेहराए। रोटरी क्लब बेलुर ने जागरूकता फैलाने के लिए यह गतिविधि चलाई। चित्र : राकेश भाटिया।

Regn. No. TN/CCN/359/2018-2020 | Total number of pages in this monthly
Licensed to post WPP No.TN/PMG(CCR)/WPP-421/2018-2020 | issue, including cover, 84. Price: ₹35
Registered with Registrar of News Papers for India TNHIN/2001/05271 Rotary Samachar Published on the first week of every month

COLOURED STEEL THAT STANDS THE TEST OF TIME.

Coils

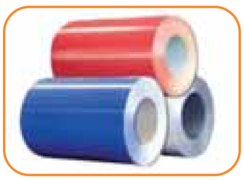

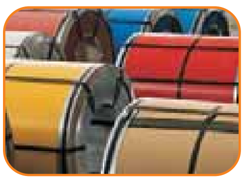

Profiles

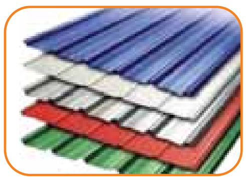

LATIM

COLOUR COATED STEEL

LATIM's high quality coloured / pre-painted galvanized / galvalume steel coils can be used for various Applications - Roofings, Claddings, Crimping, Warehouse, Cold Storage, Furnitures, False Ceilings, Shutter Doors, Vehicle Bodies, Decorative Container & Trunks, etc.

Ideal for Interior and Exterior Applications.

- Coloured / pre-painted sheet in various profiles available.
- Available in various thickness, sizes and colours.

LA TIM GROUP

Corporate Office : 401, Navkar Plaza, 4th Floor, Bajaj Road, Vile Parle (West), Mumbai - 400056.
Tel : (022) 26202299, 26203399, 26203434, 26201166
Factory : Industrial Plot No. 270, 271, GIDC, Umbergaon, Valsad. Gujarat - 396171
E-mail : sales@latimsourcing.com • Web : www.latimsteel.com